* श्रीगणेशाय नमः *

संसार के बीज कारणस्वरूप हयग्रीव भगवान् को नमस्कार करके वायुनन्दन मिश्र इस पद्धति की रचना करते हैं ॥१॥ नाना प्रकार के स्मृति-निबन्धों और बुद्धिमानोंके मत का देख

अथ प्रेतमञ्जरी प्रारभ्यते ।

नमस्कृत्य हयग्रीवं जगत्कारण-कारणम् ॥ वायुनन्दनमिश्रेण रच्यते प्रेतमञ्जरी ॥ १ ॥ नानास्मृतिनिबन्धानां मतमालोक्य धीमताम् ॥ लिख्यते बालबोधाय प्रेतमञ्जर्यनुत्तमा ॥ २ ॥ अथ प्रेताधिकारिणः कथ्यन्ते ॥ पुत्रः पौत्रः प्रपौत्रो वा भ्राता वा भ्रातृसन्ततिः ॥ सपिण्डसन्ततिर्वाऽपि क्रियार्हो

कर बालकों के बोध के लिए उत्तम प्रेतमञ्जरी लिखते हैं ॥२॥ पहिले प्रेतक्रिया के अधिकारियों को बताते हैं:—पहिला अधिकारी पुत्र है, इसके अभाव में पोता, यह भी न हो तो परपोता, यह भी न हो तो भाई या भतीजा, इनके भी न होने पर सात पीढ़ी तक की कोई सन्तान अधिकारी

होती है ॥३॥ इन सब के अभाव में चौदह पीढ़ी तक की सन्तान अधिकारी है। सपिण्डत्व ७ पीढ़ी तक लिया जाता है ॥४॥ और समानोदकभाव १४ पीढ़ी तक है। पिता का पिण्ड दान और तिलाञ्जलि पुत्र करे ॥५॥ पुत्र के अभावमें स्त्री करे। वह भी न हो तो सगा भाई करे।

नृप जायते ॥ ३ ॥ तेषामभावे सर्वेषां समानोदकसन्ततिः। सपिण्डत्वं तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्त्तते ॥४॥ समानोदकभावस्तु निवर्त्तेताचतुर्दशात्। पितुः पुत्रेण कर्तव्या पिण्डदानोदकक्रिया ॥ ५ ॥ पुत्राभावे तु पत्नी स्यात्पत्न्यभावे सहोदरः ॥ उच्छिन्नत्यक्तबन्धूनां कारयेदवनीपतिः ॥ ६ ॥ (तथा मनुः) पित्रोर्मरणकाले तु न चेत्स्यात्सन्निधौ सुतः। अन्यः कुर्याद्दशाहं च न च सर्वं कदाचन ॥७॥ ततो मृतस्य त्रिविधा क्रिया भवति। प्रथममध्यमोत्तमाः

नष्ट कुलवालों और परित्यक्त बन्धुओं का राजा करावे ॥६॥ मनु भगवान् कहते हैं कि पिता के मरणकालके समय यदि पुत्र समीप न हो तो दूसरा कोई दस दिनकी क्रिया कर दे, लेकिन सब क्रिया कभी न करे ॥ ७ ॥ मृतककी क्रिया तीन प्रकार की होती है—[१] प्रथम [२]

मध्यम और [३] उत्तम। इसमें छः पिण्ड घरसे लेकर श्मशान तक दश पिण्ड दशवां तक मलिन षोडशी नामवाली प्रथम क्रिया होती है ॥ विष्णवादि से विष्णुपर्यन्त ग्यारह ११ पिण्ड ब्रह्मादि प्रेतान्त पाँच पिण्ड तक मध्य षोडशी नामवाली मध्यम क्रिया होती है और एकादश से लेकर

ततः षट्पिण्डादारभ्य दशाहान्तं मलिनषोडशी ॥ इति प्रथमा क्रिया। विष्णवादिप्रेतान्तमध्यषोडशी इति मध्यमा क्रिया ॥ आद्यश्राद्धादारभ्य सपिण्डनान्ता उत्तमा क्रिया ॥ (केचित्तु दाहादारभ्याऽशौचान्तदिनपर्यन्ता पूर्वा क्रिया। एकादशाहादारभ्य सपिण्डनान्ता मध्यमा क्रिया। सपिण्डनानन्तरं सांवत्सरिकपार्वणाभ्युदयिकनित्यश्राद्धादिरूपोत्तरा क्रिया) तत्र औरसादि

सपिण्डनान्त तक उत्तम षोडशी नामवाली उत्तम क्रिया होती है ॥ कोई२आचार्य दाहकर्म से लेकर अशौचान्त दिन (दशवां) तक पूर्व क्रिया, एकादशाहसे लेकर सपिण्डनान्त तक मध्यम क्रिया और सपिण्डनके बाद सांवत्सरिक [साल भरका पिण्ड] पार्वण, आभ्युदयिक [नान्दीश्राद्ध]

नित्य श्राद्ध आदि को उत्तर क्रिया बतलाते हैं ॥ इस में औरस आदि तेरह प्रकार के पुत्रों का अधिकार है। उन तेरह प्रकार के पुत्रों के नाम ये हैं—[१] औरस, [२] पुत्रिकापुत्र [नाती], [३] क्षेत्रज, [देवरादिसे उत्पन्न पुत्र], [४] कानीन, [अविवाहित कन्याके पितृगृह में उत्पन्न पुत्र], [५] सहोढज [गर्भवती कन्या के विवाह होने पर उत्पन्न पुत्र], [६] गूढोत्पन्न

त्रयोदशपुत्राणामधिकारः। ते च त्रयोदश पुत्राः। औरसः १ पुत्रिक पुत्रः २ क्षेत्रजः ३ कानीनः ४ सहोढजः ५ गूढोत्पन्नः ६ पौनर्भवः ७ अपविद्धः ८ दत्तकः ९ क्रीतः १० कृत्रिमः ११ स्वयमुपगतः १२ पारासवः १३ तेषु मुख्यः औरसः। तदभावे पुत्रिकापुत्रः। ततः पूर्वपूर्वाभावे उत्तरोत्तराधिकारी ॥

[गुप्त रीतिसे उत्पन्न पुत्र], [७] पुनर्भू पुत्र [विधवा होने पर अन्यसे उत्पन्न पुत्र], [८] अपविद्ध [नाल सहित प्राप्त पुत्र] [९] दत्तक [गोद लिया हुआ पुत्र] [१] क्रीत [खरीदा हुआ पुत्र], [११] कृत्रिम [पुत्र के गुणों से युक्त मान लिया गया पुत्र], [१२] स्वयं उपगत [खुद अपने यहाँ आकर रहने वाला पुत्र] [१३] पराशव [शूद्र स्त्री से उत्पन्न पुत्र]। इन

तेरह प्रकार के पुत्रों में मुख्य औरस पुत्र है, उसके अभाव में नाती, उसके अभाव में क्रमशः बाद वाले अधिकारी होते हैं। इन तेरह प्रकार के पुत्रों का लक्षण समाप्त! मरनेके समय वैतरणी नदी पार होनेके निमित्त बछड़े सहित काली गौका दान करे। [उसकी विधि बतलाते हैं]

एषां त्रयोदशपुत्राणां लक्षणम्। ततः प्राण-प्रयाणसमये वैतरणीनदीतरण-कामः सवत्सगोदानं कुर्यात्। तस्य विधिः। तत्र सन्निकृष्टमरणं ज्ञात्वा॥ गोमयोपलिप्तायां भूमौ कुशैराच्छादितायां तदुपरि उत्तरशिरस्कां निदध्यात्॥ दक्षिण-हस्तेन कुशं नीत्वा वैतरणीतरणाय गां दद्यात्॥ तत्र प्राङ्मुखः कृताचमनः देवब्राह्मणान्सम्पूज्य कुशत्रयमादाय॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्र अमुकशर्माऽहं अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः वैतरणीनदीतरणकामः इमां कृष्णां गां

मृत्यु को नजदीक जानकर गोबर से लिपी हुई और कुश बिछाई हुई जमीन पर उत्तरको ओर शिर कर दहिने हाथ में कुश लेकर वैतरणी पार होने के लिए गौदान करे। तब पूर्व मुख आचमन करके देवता और ब्राह्मणोंकी पूजा कर, तीन कुशों को लेकर 'अद्य० अमुक गोत्रः०'

इत्यादि वाक्योंको पढ़े । [दक्षिणादान] 'कृतस्य०' यह वाक्य पढ़कर दक्षिणा दे । ब्राह्मण दोनों स्थानों पर 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कहे । [प्रार्थना] तब 'उष्णे वर्षति०' इन श्लोकों को पढ़े । तब पुत्र

सवत्सां रुद्रदैवतां यथाऽलङ्कारसहितां अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ दक्षिणादानम् ॥ कृतस्य कृष्णागोदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ उभयस्थाने ॐ स्वस्तीति पठेत् ॥ प्रार्थना ॥ उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वर्षति ॥ दुर्गं तारयते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता ॥ यमद्वारे पथे घोरे घोरां वैतरणीं नदीम् ॥ तर्तुकामः प्रयच्छामि कृष्णां वैतरणीं च गाम् ततो पुत्राद्यधिकारी गतप्राणं शवं ज्ञात्वा दहेत् ॥ तत्र दाहप्रक्रिया ॥ ततो गतप्राणस्य

आदि अधिकारी मुर्दे को प्राण रहित जान कर जलावै । [अब दाहक्रिया बतलाते हैं]-मुर्दे के शरीर को मिट्टी और जलसे धोकर उस नहाए हुए शव के अङ्गों में सात सोनेके टुकड़े रक्खे ।

उसका क्रम बतलाते हैं। १ मुंह में, २ कान में, २ नेत्र में, २ नाक में इस प्रकार सातों छेदों में सोनेके टुकड़ोंको रख कर, अथवा केवल मुखमें रक्खे। नाखून, बाल और दाढ़ी-मूछ बनवादे, कपड़ा पहिनावे, जनेव बदले, माला-चन्दन आदिसे विभूषित शरीरको घीसे स्नान करावे,

मृत्तिका-तोयाभ्यां देहं प्रक्षाल्य स्नापितस्य सप्तकनकखण्डानि विन्यसेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ एकं मुखे कर्णद्वये नेत्रद्वये नासापुटद्वये च सप्तसु छिद्रेषु प्रक्षिप्य, सुवर्णखण्डं केवलं मुखे क्षिपेदिति वा ॥ नखकेशश्मश्रुवपनं वस्त्रं परिधत्ते ब्राह्मणस्य सोपवीतम्॥स्रक्चन्दनादिभिर्विभूषितम्॥ तच्छरीरमाज्येनाऽभ्युक्षयेति कात्यायनः ॥ तत्र पुत्रादिभिः वपनं स्नानं वस्त्रं परिधार्य पवित्रधारणम् ॥ ततो मृतकस्थानादारभ्य अस्थिसञ्चयनान्तं षट् पिण्डान् दद्यात्। स्थाने द्वारे

ब्राह्मणके लिये ऐसा कात्यायनका वचन है। तब पुत्रादि बाल बनवावें, नहायँ, कपड़ा पहन कर पवित्र धारण करें। तब दाहकर्तामृतकस्थानसे लेकर अस्थिचयन तक६पिण्डदे। १पिण्डस्थान पर, १

द्वार पर, १ चौराहे पर, १ विश्राम स्थान पर, १ शवके हाथमें, १ चिता भूमि पर दे। यह मलिन नामवाला६ पिण्ड पहला षोडशमें कहा जाता है। 'अद्य०' आदि पढ़कर मृतकस्थानपर॥१॥ 'अद्य०'

चतुष्पथे चितायां शवहस्तके॥ अस्थिसञ्चयने षष्ठो दश पिण्डा दशाह्निकाः ॥१॥ मलिनं षोडशं चैतत् प्रथमं परिकीर्तितम् ॥ तत्र क्रमः। (स्थाने)—अद्या-मुकगोत्रपितरमुकप्रेतभूमितुष्ट्यर्थं मृतकस्थाने शवो नाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥१॥ (ततो द्वारदेशे)—अद्यामुकगोत्रपितरमुक-प्रेत दूततुष्ट्यर्थं गृहवास्त्वधिदेवतातुष्ट्यर्थं च द्वारदेशे पान्थनाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ २ ॥ (चतुष्पथे)—अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेत भूतकोटिपलायनकामः चत्वरे खेचरनाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपति-ष्ठताम् ॥ ३ ॥ (विश्रामस्थाने)—अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत विश्रामकाले ॥ ४ ॥

आदि पढ़ कर द्वार पर ॥२॥ 'अद्य०' आदि पढ़ कर चौराहे पर ॥३॥ 'अद्य०' आदि पढ़ कर

विश्राम स्थान पर ॥४॥ 'अद्य०' आदि पढ़कर चितापर ॥५॥ 'अद्य०' आदि वाक्यसे अस्थिसञ्चयन स्थानपर ॥६॥ तब नारायणका नाम लेकर मुर्देको उठाकर गङ्गा आदि अथवा पवित्र पृथिवी भाग

पिशाचादि-अविघ्नार्थकामः विश्रामे भूतनाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥४॥ (चितायाम्) अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतमोक्षकामः चितायां दाहसाधनं नाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ५ ॥ (अस्थिसञ्चयनस्थाने) अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेतमोक्षकामः अस्थिसञ्चयननिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ६ ॥ ततो नारायणनामस्मरणपूर्वकं शवमुत्थाय गङ्गादिनदीषु पवित्रभूभागे वा गत्वा चन्दनोत्तमादियज्ञीयकाष्ठैश्चितां रचयित्वा तस्योपरि पुरुषमधोमुखं उदक्शिरसं च निधाय ॥ नारीं

पर ले जाकर चन्दन आदि उत्तम यज्ञीय काष्ठोंसे चिता रच कर उसके ऊपर पुरुषका नीचेको मुँह, उत्तरकी ओर शिर रक्खे और स्त्री का उतान देह और उत्तरकी ओर शिर रक्खे। इसके बाद

गया आदि तीर्थोंका मानसिक ध्यान करे। यदि पञ्चकमें मृत्यु हुई हो तो पञ्चक विधि करे। 'अद्य०'आदि पढ़कर सङ्कल्प करे। दर्भमय पाँच पुतला बनाकर, जौके आटे में अनुलेपन कर,

तूत्तानदेहामुत्तरशिरस्कां च स्थापयेत् ॥ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः॥ कुरुक्षेत्रं च गङ्गां च यमुनां च सरिद्वराम् ॥ कौशिकीं चन्द्रभागां च सर्वपापप्रणाशिनीम् ॥ भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा ॥ वैष्णवं च वराहं च तीर्थं पिण्डारकं तथा ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुरः सागरांस्तथा ॥ एतानि तीर्थानि मनसा ध्यात्वा ॥ पञ्चके मृतश्चेत् पञ्चकविधानम् ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य धनिष्ठादिपञ्चकमरणसूचितवंशारिष्टविनाशार्थं पञ्चकमरणविधिं करिष्ये॥ दर्भमयान् पञ्च पुत्तलान्कृत्वा यवपिष्टैरनुलिप्य ऊर्णासूत्रेण वेष्टयित्वा प्रेतोपरि न्यसेत् ॥ प्रथमं शिरसि ॥ द्वितीयं दक्षिणकुक्षौ

ऊनके सूतमें लपेट कर, मृतक पर रक्खे। एक पुतला शिर पर, दूसरा दहिनी कोख पर, तीसरा

बाँई कोख पर, चौथा नाभि पर, पाँचवां पैरों के बीच में रक्खे। इसके बाद नाममन्त्रों—प्रेतवाहाय० ॥ १ ॥ प्रेतसखाय०, ॥ २ ॥ प्रेतपाय०, ॥ ३ ॥ प्रेतभूमिपाय०, ॥ ४ ॥ प्रेतहर्त्रे०

॥ तृतीयं वामकुक्षौ ॥ चतुर्थं नाभौ ॥ पञ्चमं पादयोर्मध्ये न्यसेत् ॥ तदुपरि नाममन्त्रैर्घृताहुतीर्दद्यात् ॥ प्रेतवाहाय स्वाहा ॥१॥ प्रेतसखाय स्वाहा ॥२॥ प्रेतपाय स्वाहा ॥ ३ ॥ प्रेतभूमिपाय स्वाहा ॥ ४ ॥ प्रेतहर्त्रे स्वाहा ॥ ५ ॥ ततः दक्षिणाभिमुखो हुताशनं गृहीत्वा ॥ कृत्वा तु दुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता ॥ मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम् ॥ धर्माऽधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम् ॥ दहेयं सर्वगात्राणि दिव्याँल्लोकान्स गच्छतु॥ इति मन्त्रमुदीर्य प्रदक्षिणं विधाय प्रज्वलदुल्मुकस्य शिरोदेशे दानम् ॥ ततस्तृणकाष्ठादिषु घृतं

॥ ५ ॥ से घृत की आहुति दे । तब दक्षिण मुंह होकर अग्नि लेकर 'कृत्वा तु' इन मन्त्रों को पढ़कर, प्रदक्षिणा कर जलती आगको शिरके स्थानमें लगावे। तब तृण काष्ठ आदि पर घी देकर

जलावे। जब कुछ शेष बच जाय तो दस अंगुलकी सात लकड़ीलेकर, सात प्रदाक्षणाकर, कुठारसे जलती लकड़ी पर सात वार प्रहार कर, 'क्रव्याद०' मन्त्र पढ़कर या चुपचाप) एक एक लकड़ी

परिक्षिप्य दग्ध्वा किञ्चिच्छेषयेत् ॥ ततः प्रादेशमात्रं सप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणासप्तकं विधाय ॥ कुठारेणोल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं कृत्वा ॥ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं स गच्छत्विति प्रवाहः॥इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं च ददतु प्रजानयत्स्वाहा (तूष्णीं वा) एकैकां काष्ठिकामग्नौ क्षिपेत् ॥ अनतीतद्विवर्षप्रेतं गन्धमाल्यादिभिरलंकृत्य ॥ अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशून् ॥ वैवस्वतो न तृप्यति सुराप इव दुर्मतिः ॥ इति यमगाथां गायन्तो बान्धवा ग्रामाद्बहिः शुचिदेशे निखनेयुः॥तत्र नोदकदानादि ॥

को अग्निमें छोड़े। दो वर्षके भीतर मरे हुएको गन्धमाला आदिसे अलंकृत कर 'अहरहः' इस यमगाथाको गाते हुए बान्धव लोग गाँवसे बाहर पवित्र भूमि में खन कर गाड़ दें। उसका उदक-

दान न करें । प्रेत के दाह के बाद सब मुर्दे को छूनेवाले और मुर्दके सङ्ग जानेवाले चिता के वाम पार्श्वसे घूमकर जलाशयमें जाँय । एक गोता लगावें । अङ्ग न मलें । तब दो कपड़ों के सहित आचमनकर जलमें, या पत्थर पर, या पवित्र तीर पर दक्षिणाग्र कुश त्रय के ऊपर बाँया

तत्र प्रेतदाहाऽनन्तरं सर्वे शवस्पृशः शवानुगमनकर्तारश्च चितावामावर्तेन परावृत्य व्यावर्त्त्य जलाशये सर्वे गच्छेयुः ॥ सकृन्निमज्जेयुः ॥ अङ्गं च न विघर्षेयुः ॥ ततो द्विवासस आचम्य जले वा पाषाणपृष्ठे वा शुचितीरदेशे वा दक्षिणाग्रकुशत्रयोपरि वामहस्तान्वारब्धदक्षिणहस्ताङ्गुष्ठतर्जनीमध्यमात्मक पितृतीर्थेन द्विगुणभुग्नकुशत्रयेण प्रेतगोत्रनामनी उच्चार्य मृतं मनसा ध्यायन्तः प्रेताय सतिलजलाञ्जलिं दद्युः ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत एष तिलतोया-

हाथ लगा हुआ दहिने हाथकी अंगूठा-तर्जनी-मध्यमा अंगुलीके साथ पितृतीर्थसे तीन कुशा दोहरा लेकर, प्रेतका गोत्र नाम 'ॐ अद्यामुक०' उच्चारणकर, मृत व्यक्तिका मानसिक ध्यानकरते हुए

प्रेतके लिए तिल सहित जलाञ्जली देवें। यह जलदानक्रिया दशपुरुष पर्यन्त करना चाहिए। दूसरे दिनसे लेकर दश दिन पर्यन्त प्रातः जलदान करना और सायंकालको पीपरसे नजदीक 'सर्व-

ञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ इयं च जलदानक्रिया दशपुरुषपर्यन्तं कर्तव्या ॥ द्वितीयदिनमारभ्य दशरात्रावच्छिन्न-प्रातःसायङ्काले पिप्पलसमीपे जलदीपदानम्। (तद्यथा)-सर्वतापोपशमनमध्व-श्रमविनाशनम् ॥ प्रेततृप्तिकरं वारि पिब प्रेत! सुखी भव॥अद्याऽमुकगोत्राऽमुकप्रेत एष तद्गताध्वतापश्रमनिव-र्तकाऽशौचान्तर्गतप्रथमदिनमश्वत्थशाखावलम्बितजलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति जलदानम् ॥ अथ सायङ्काले दीपदानम् ॥ अ-न्धकारं महाघोरं रविर्यत्र न दृश्यते ॥ तस्योपकरणार्थाय दीपोऽयं दीयते मया॥

तापो०' पढ़कर जलदेना और 'अन्धकारं महाघोरं' पढ़कर दीपक बालना। और बान्धवोंके साथ

बावली, नदी आदिमें जाकर दशरात्र आत्मशुद्धिके निमित्त प्रतिदिन स्नानकरे। इस प्रकार प्रति दिन बिनानागा दोनों समयकरे। जो क्रियाकरे बिना नमक, एक बार स्वयं भोजन बनाकर खावे।

ॐ अद्याऽशौचान्तर्गतप्रथमदिन-अमुकगोत्राऽमुकप्रेतयममार्गानुसन्तरणघोरमिश्रान्धतमःसन्तरणकामः पिप्पलसमीपे एष दीपो मद्दत्तस्तवोपतिष्ठताम् ॥ अथ बान्धवैः सह तडागे गत्वा नद्यादौ वा गत्वा दशरात्रमात्मशुद्धयर्थं प्रत्यहं स्नानं कुर्यात् ॥ एवं प्रत्यहं दशरात्रावच्छिन्नं सायंप्रातः कुर्यात् ॥ क्रियामुपविशेत् ॥ अलवणमेकवारमेकभुक्तं स्वयं पाकं कुर्यात् ॥

अथ पिण्डदानक्रिया।

अन्यगोत्रः सगोत्रो वा नारी वा यदि वा पुमान् ॥ प्रथमेऽहनि यो दद्यात् स

अब पिण्डदानक्रिया कहते हैं। अन्य गोत्र हो, या सगोत्र हो, स्त्री हो या पुरुष पहले दिन

जिस चीज़ का पिंड दान करे उसी वस्तु का बराबर दश दिन तक करना। चाहे वह शालि [जड़हन का चावल] हो, या सत्तू हो, या साग हो,। षोडश श्राद्ध करना पुत्रका कर्तव्य है। रोज बराबर न कर सके तो १ ले, ३ रे, ५ वें, ७ वें, ९ वें, १० वें दिन पिंडदान करे।

दशाहं समापयेत्॥ शालिना सक्तुभिर्वाऽपि शाकैर्वाऽपि च निर्वपेत् ॥ प्रथमेऽहनि यद्द्रव्यं तदेव स्याद्दशाह्निकम् ॥ षोडश–श्राद्धानि तु पुत्रेणैव कर्त्तव्यानि, इति सिद्धम् ॥ प्रथमे च तृतीये वा पञ्चमे सप्तमे तथा ॥ नवमे दशमे चैव पिण्ड-दानं प्रकीर्तितम् ॥ वृद्धगार्ग्यः ॥ पतिः पत्नीसमायुक्तो दहत्येकहुताशने ॥ पाकमेकं प्रकुर्वीत पिण्डं दद्यात् पृथक् पृथक् ॥ यदि पुत्राद्यधिकारिणि विदेश-स्थेऽन्येन दाहकर्त्रा पिण्डदाने कृतेऽपि पुत्रादिरपि पिण्डं दद्यात्॥(अथाऽस्थि-

वृद्ध गार्ग्य का वचन है कि–पति और पत्नी एक चिता पर दग्ध किये गये हों तो पाक एक बनाना और पिण्ड अलग अलग देना। यदि पुत्र आदि अधिकारी परदेश में हों और दूसरा दाहकर्ता हो तो पिण्डदान करने पर भी पुत्र आदि पिण्डदान करे।

अथ अस्थिसञ्चयनम् । चौथे दिन ब्राह्मण, पाँचवें दिन क्षत्रिय, नवें दिन वैश्य, दशवें दिन शूद्र देश-कालके अनुसार श्राद्ध करे । यहाँ श्राद्धसे अस्थिसञ्चय और एकोद्दिष्ट विधान ग्रहण करना । इस प्रकार अशौचके अङ्गस्पर्शके सम्बन्ध में भी ४ थे दिन ब्राह्मण का, ६ ठे

सञ्चयनम् ।) चतुर्थे ब्राह्मणानां तु पञ्चमेऽहनि भूभुजाम् ॥ नवमे वैश्यजातीनां शूद्राणां दशमात्परे ॥ कर्तव्यं तु नरैः श्राद्धं देशकालाविरोधतः ॥ श्राद्धमत्रा-स्थिसञ्चयं एकोद्दिष्टविधानकम् ॥ एतच्च सम्पूर्णाऽशौचेषु दिनकथनम् ॥ एवमा-शौचिनामङ्गस्पर्शेऽपि ॥ चतुर्थेऽहनि विप्रस्य षष्ठे वै क्षत्रियस्य तु ॥ अष्टमे दशमे चैव स्पर्शः स्याद्वैश्य-शूद्रयोः ॥ यत्तु-प्रथमेऽह्नि तृतीये वा सप्तमे नवमेऽपि वा ॥ अस्थिसञ्चयनं कार्य्यं निजैस्तद्गोत्रजैः सह ॥ इति स्मृतिवाक्यम् ॥ तद्ब्राह्मणा-

दिन क्षत्रिय का, ८ वें दिन वैश्य का, १० वें दिन शूद्र का स्पर्श है । पहले दिन, तीसरे दिन, सातवें दिन, नवें दिन भी निज गोत्रज के साथ अस्थिसञ्चय करना, ऐसा स्मृति का वचन है ।

ब्राह्मण आदिको चौथे दिन अस्थिश्चयका सम्भावना हो तो प्रथम दिन करै, तीन दिन के अशौच में दूसरे दिन, एक रोजके अशौच में उसी रोज अस्थिसंचय करै। असम्पूर्ण अशौच के तीसरे भाग में अस्थिसंचय अंगस्पर्श करना।

दीनां चतुर्थादिदिनेष्वस्थिसञ्चयासम्भावनायां प्रथमादिदिवसेष्वस्थिसञ्चयनविधायकम् ॥ त्र्यहाशौचे तु–द्वितीयेऽह्नि ॥ सद्यःशौचे तद्दिन एवाऽस्थिसञ्चयः कर्तव्यः। असम्पूर्णाशौचान्तरेषु तृतीयभागोत्तरमस्थिसञ्चयोऽङ्गस्पर्शश्च कर्तव्य इति।

अथास्थिसञ्चयनप्रयोगः।

चतुर्थदिने स्नात्वा चतुर्थपिण्डं दत्वा श्राद्धदेशस्य गोमयोपलेपनं पञ्चगव्योपलेपनं च ज्वलदङ्गारभ्रमणं गौरमृत्तिकाऽऽच्छादनानि कारयित्वा ॥ गौरसर्षपैस्तिलैश्च विकरणम् ॥ स्वयं पाकमारभेत् ॥ ततः सिद्धान्ने

अथ अस्थिसञ्चयनप्रयोगः। चौथे दिन स्नान कर ४ पिंड देकर श्राद्धस्थान को गोवरसे या पंचगव्यसे लिपवा कर, जलते अंगारेको घुमावै और गौरमृत्तिकासे आच्छादनकर, सफेद सरसों और तिल बिखेरना। स्वयं पाक करे। तब सिद्धान्न होने पर रत्नादीप रख कर 'नमो नमस्ते०'

आदि मन्त्र पढ़कर दिशाओंकी रक्षा करे। श्राद्धमें देने योग्य वस्तुके पास जाकर, पूर्वमुख बैठ कर, आचमन कर, अपने ऊपर और श्राद्धसामग्री पर जल छिड़क कर तीन कुशा, तिल और जल लेकर

रक्षादीपं निधाय ॥ नमो नमस्ते गोविन्द ! पुराणपुरुषोत्तम ! ॥ इदं श्राद्धं हृषीकेश ! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ ॐ प्राच्यै नमः ॥ ॐ अवाच्यै नमः ॥ ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः ॥ ॐअन्तरिक्षाय नमः ॥ ॐभूम्यै नमः ॥ इति दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ श्राद्धदेयानि वस्तून्यासाद्य ॥ पूर्वाभिमुख उपविश्याचम्य ॥ 'अपवित्रः पवित्रो वे'ति आत्मानं श्राद्धसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य ॥ ततः त्रिकुशतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुप्रेतस्याऽस्थिसञ्चयनिमित्तकमेकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये ॥ ततस्त्रिर्गायत्रीं जपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो

'अद्य०' पढ़े। तब तीन बार गायत्री जप कर 'ॐ देवताभ्यः' तीन बार पढ़े। तब अपसव्य हो।

मोटक तिल जल लेकर दक्षिण की ओर मुँह कर सव्य जानु से 'अद्याऽमुक०' पढ़कर आसन पर तिल बिखेर कर 'ॐ आयन्तु०' ऐसा मन्त्र पढ़े। तब पुटक में दो कुशपत्र प्रादेशमात्र धरकर

नमः ॥ इति त्रिःपठेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय दक्षिणाभिमुखः सव्यं जान्वाच्य ॥ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः, इति श्राद्धदेशे तिलान्विकीर्य ॥ ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ इति मन्त्रं पठेत् ॥ ततः पुटके कुशपत्रद्वयं प्रादेशमात्रं दक्षिणाग्रं धृत्वा ॥ ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तुपीतये ॥ शंय्यो रभिस्रवन्तु नः ॥ इति पुटके जलं क्षिपेत् ॥ ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवोदेवनिर्मितः॥

'ॐ शन्नो०' ऐसा कह कर पुटक में जल छोड़े। 'ॐ तिलोऽसि०' पढ़कर तिलों को छोड़े।

गन्ध और पुष्पको चुपचाप छोड़े। तब अर्घपात्र बाएँ हाथमें लेकर पवित्र भोजनपात्रपर उत्तराग्र धरकर उसके ऊपर कुछ जल देकर 'ॐ या दिव्या .' यह मन्त्र पढ़कर मोटक आदि लेकर

प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा॥इति तिलान्क्षिपेत् ॥ गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ तदर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा ॥ तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा संबभूवुर्याऽअन्तरिक्षाऽउत्पार्थिवीर्याः॥हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः शꣳ स्योना सुहवा भवन्तु॥इति पठित्वा मोटकादीन्यादाय॥ॐअद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पवित्रोपरि जलमुत्सृजेत् ॥ ततः पवित्रादिसहितमर्घपात्रमासनवामपार्श्वे प्रेतस्थानमसि, इत्यधोमुखं स्थापयेत् ॥ ततः चटोपरि गन्धादि

'अद्य०' यह संकल्प पढ़कर पवित्रपर कुछ जल गिरावे। तब पवित्र आदिके सहित अर्घपात्रको अधोमुख करके 'प्रेतस्थानमसि' ऐसा कहकर आसनके बायें बगल रख दे। तदनन्तर चटके ऊपर

चन्दन, पुष्प, धूप आदि चढ़ाकर हाथमें तिल जल आदि लेकर 'अद्याऽमुकगोत्र' यह सङ्कल्पवाक्य पढ़े। तब 'यथा चक्रायुधो' आदि मन्त्र पढ़ता हुआ जलसे भोजनपात्र और आसनके सहित चारों ओर मण्डल करे। फिर घृत, तिल और जल युक्त अन्न लेकर 'ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामि' इस मन्त्रसे

दत्वा मोटकतिलजलान्यादाय॥ अद्य ऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ततो जलेन भोजनपात्रासनयोश्चतुर्दिशं मण्डलं कृत्वा ॥
यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति॥ एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥
ततो घृततिलजलयुतमन्नमादाय॥ ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्योनमः॥ इतिकुशोपरि दक्षिणत उत्सृजेत्॥ ततो हस्ताभ्यां ताम्रपात्रमन्नपूर्णमादाय मनाक्स्थित्वा

दक्षिणकी ओर कुशापर रखदे। इसके बाद अन्नसे भरा हुआ ताम्रपात्र दोनों हाथोंसे उठावे और क्षणभर रुककर पितरोंका ध्यान करता हुआ एक मनुष्यके खाने भर अन्न भोजनपात्रमें

परोसे। फिर दो दोना में घृत तथा जल लेकर रखे, दोनों हाथों से अन्न पर मधु डाले। साथ साथ 'मधुव्वाता' आदि मन्त्र पढ़ता रहे। मन्त्रपाठ के अनन्तर तीन बार 'मधु मधु-मधु' का जप करे।

पितरं ध्यायन्पुरुषतृप्तिस्त्वममन्नं परिविष्यात्॥ पुटकद्वये घृत जलं चोपनीय अन्नोपरि हस्तद्वयेन मधु दत्वा॥ ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मध्विति च जपेत्॥ ततो ऽधस्ताभ्यां हस्ताभ्यां पात्रमालभ्य॥ ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि स्वाहा॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्॥ इति पठित्वा॥ ॐ इदमन्नम्॥ ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्॥

तब उलटे हाथोंसे भोजनपात्रका स्पर्श करता हुआ 'ॐ पृथिवी ते पात्रं' आदि मन्त्र पढ़े। तब 'इदमन्नं' कह कर अन्नमें 'इमा आपः' जल की तरफ 'इदमाज्यं' घी की तरफ 'ॐ इदं कविः' कह कर फिर अन्न

कीओरदहिनेअंगूठासेसंकेतकरे।'ॐअपहताऽअसुरा'यह मंत्रपढ़े। तिलभोजनपात्रपरछिड़के बायेंहाथ से भोजनपात्र का स्पर्श किये ही हुए दहिने हाथ में मोटक, तिल, जल आदि लेकर 'ॐअद्यामुक-

ॐ इदं कविरिति पुनरन्ने॥इति दक्षिणाङ्गुष्ठं निवेश्य॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षा ꣳसि वेदिषदः॥ इत्यन्नोपरि तिलान्विकीर्य॥ वामहस्तेन पात्रमत्यजन्दक्षिण-हस्तेन मोटकादीन्यादाय॥ अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयनिमित्तकै-कोद्दिष्टश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ इत्युत्सृजेत्॥ ततो गायत्रीं त्रिर्जपेत्॥ ॐ मधुव्वातेति तृचं मधु-मधु-मध्विति च जपेत्॥ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु॥ इति च

गोत्र' यह सङ्कल्प वाक्य पढ़कर मोटक आदि पृथ्वी पर रख दे। सव्य हो तीन बार गायत्रीमन्त्र 'ॐमधुव्वाता'इस ऋचाको पढ़े, और'मधु मधु मधु'का भी जप करे। साथहो'अन्नहीनंक्रियाहीनं'इस

मन्त्रको भी जपे। तदनन्तर कुशाओंपर बैठकर फिर तीनबार गायत्रीका जप करे। 'मधुव्वाता' यह ऋचा और 'मधु मधु मधु' इसको भी जपे। तब 'ॐकृणुष्व पाजः' आदि पाँच रक्षोघ्नीसूक्तों

जपेत् ॥ ततः कुशेषूपविश्य गायत्रीं त्रिर्जपेत् ॥ मधुव्वातेति त्र्यृचं मधु मधु
मध्विति च जपेत् ॥ ततो रक्षोघ्नोसूक्तं जपेत् ॥ ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न
पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ ऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्रसितिन्द्रूणानो स्तासि ऽविद्धय
रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥ तव कामास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः॥
तपूᳪ ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो व्विसृज विष्वगुल्काः ॥२॥ प्रति
स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः॥ यो नोदूरेऽअघशᳪ
सो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥३॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व
३ न्न्यमित्राँ२ ॥ ऽओषतात्तिग्महेते ॥ यो नो ऽअरातिᳪ समिधान चक्रे नीचा

का पाठ करे। तब 'उदीरितामवर' इस मन्त्र को, 'सहस्रशीर्षा' आदि पुरुषसूक्त के १६ मन्त्र 'आशुः शिशान' आदि १२ मन्त्र, इनके अतिरिक्त और भी बहुतसे पवित्र मंत्रोंका अपनी शक्ति

अनुसार पाठ करे। इसी क्रम से 'नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष !" इस श्लोकका भी पाठ करे। तदनन्तर

तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम्॥४॥ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्धयास्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्न्यग्ने अव स्थिरा तनुहि यातु जूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ इति रक्षोघ्नी-सूक्तम् ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्नमध्यमाः पितरः सोम्यासः असुँ ऽ य-ईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरो हवेषु ॥ इति पितृमन्त्रम् ॥ पुरुषसूक्तम् सहस्रशीर्षा १६ मन्त्राः ॥ अप्रतिरथम् ॥ आशुः शिशान१२मन्त्रान् ॥ अन्यानि पवित्राणि यथाशक्ति च जपेत् ॥ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष! नमस्तेऽनेकचक्षुषे ! ॥ नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति श्लोकं च पठेत्॥ तत उच्छिष्टस-न्निधावास्तृतकुशत्रयीं भूमिं जलेन प्रोक्ष्य, तिलघृतसहितमन्नं जलेनाऽऽप्लाव्य ॥ ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता

भोजनपात्रके पासकी कुशाओंसे ढंकी भूमिको जल से सींचे और तिल घृतयुक्त अन्नको जलसे गीला करके 'ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा' यह मन्त्रपढ़ता हुआ कुशापर अन्न रखे। अपसव्य हो।

जाय। आचमन, प्राणायामकरके भगवान्‌का स्मरणकरे। यह करके फिर अपसव्य हो जाय। तब भोजनपात्रके समीप पिण्डदानके निमित्त मिट्टीके वेदीके मध्यमें एक बालिश्त नापकर बायेंहाथ से सटे हुए दहिने हाथ से 'ॐ अपहता ऽअसुरा' यह मन्त्र पढ़ता हुआ कुश के मूलभाग से

यान्तु पराङ्गतिम् ॥ इति कुशोपरि अन्नं विकिरेत् ॥ ततः सव्यम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यम् ॥ भोजनपात्रसमीपे पिण्डदानार्थं मृद्वेदिकाया मध्ये प्रादेशमात्रं परिमाय वामान्वारब्धदक्षिणहस्तेन ॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः ॥ इति कुशमूलेन रेखाकरणम् ॥ दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत् ॥ रेखोपरि अङ्गारं भ्रामयित्वा ॥ ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ॥ परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ इत्यङ्गारं दक्षिणतस्त्यजेत् ॥ ततो रेखोपरि

एक रेखा खींचे। उस कुश की पिंजुली को उत्तर दिशामें फेंक दे। तब 'ये रूपाणि प्रतिमुञ्च' इस मन्त्रको पढ़ता हुआ उन रेखाओं पर आग का अङ्गारा घुमाकर दक्षिण ओर रख दे। तब

जिनकी जड़ काट डाली गयी है, ऐसी कुशाओं को रेखा के ऊपर बिछा कर सव्य हो जाय 'देवताभ्यः पितृभ्यश्च' इस मन्त्रको तीनबार जपे। फिर अपसव्य हो जाय। एक दोनेमें तिल, जल, चन्दन तथा पुष्प डालकर उसे बायें हाथमें रखे और दहिने हाथमें मोटक आदि लेकर 'ॐ

छिन्नमूलान्कुशानास्तीर्य सव्यम् ॥ 'ॐ देवताभ्यः' इति त्रिर्जपेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ पुटके तिलजलगन्धपुष्पाणि क्षिप्त्वा पुटकं वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति कुशोपरि अवनेजनजलं किञ्चिद् दद्यात् ॥ किञ्चिदग्रे धारयेत् ॥ ततो घृत-मधु-तिलयुक्तेनाऽन्नेन पिण्डं निर्माय मधुघृताभ्याममभिघार्य मोटकादीन्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष

अद्यामुक गोत्र' आदि पढ़ता हुआ कुशापर थोड़ा सा अवनेजन जल डाले और थोड़ा जल आगे रख दे। तब घृत, मधु, तिल युक्त अन्न से पिण्ड बनावे। उसमें मधु और घृत लगाकर

मोटक आदि लेकर 'अद्यामुक गोत्र' आदि सङ्कल्पवाक्य पढ़कर बायें हाथसे छुये हुये दहिने हाथ से पिण्ड दे। तब वेदी पर बिछे कुशोंमें हाथ पोंछ कर सव्य हो जाय। आचमन करके फिर अप-

पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति कुशोपरि वामान्वारब्ध-दक्षिणहस्तेन पिण्डं दद्यात् ॥ तत आस्तृतदर्भमूले करं प्रोञ्छ्य ॥ सव्यं कृत्वा आचम्य ॥ अपसव्यम् ॥ ॐ अत्र पितरो मादयस्व यथाभागमावृषायस्व ॥ उत्तराभिमुखीभूय श्वासं नियम्य पितरं भास्वरमूर्तिं ध्यायन् ॥ अमी मदन्त पिता यथाभागमावृषायिषत् ॥ ततः पूर्वदत्तावशिष्टाऽवनेजनपात्रमादाय मोटकादीनि चादाय ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ततो नीवीं विस्रंस्य ॥

सव्य हो जाय। 'ॐ अत्र पितरो मादयस्व' यह मंत्र पढ़ता हुआ उत्तर दिशामें मुख करके और श्वास रोक कर देदीप्यमान मूर्तिधारी पितरका ध्यान करता हुआ 'अमी मदन्त पिता' यह मंत्र पढ़े। तब पूर्व में बचे अवनेजन पात्र तथा मोटक आदि को लेकर 'ॐ अद्यामुक गोत्र' आदि

वाक्य कहे । इसके बाद नीवी ढीली करके सव्य हो आचमन तथा हरिस्मरण करे । फिर अप-सव्य हो कर बायें हाथ से सूत्र उठाकर दहिने हाथ में ले और 'एतत्ते पितर' यह मन्त्र पढ़कर

ततः सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यं कृत्वा ॥ वामहस्तेन सूत्रमादाय दक्षिणहस्ते धृत्वा उभाभ्यां हस्ताभ्यां'ॐएतत्तो पितर्वासः' इति पिण्डोपरि सूत्रं दद्यात् ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयन-निमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ततः पिण्डे गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूलानि दत्वा, पिण्डशेषाऽन्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु । ॐ सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतं चारिष्टमस्तु ॥

दोनों हाथोंसे पिण्डके ऊपर सूत्र चढ़ावे । तब मोटक आदि हाथ में लेकर 'अद्यामुक गोत्र' यह सङ्कल्प वाक्य पढ़े । इसके अनन्तर पिण्ड पर गन्ध, पुष्प, धूप, दोप और ताम्बूल आदि चढ़ाकर बाकी बचे अन्न को पिण्ड के समीप में रक्खे । 'ॐ शिवा आपः सन्तु' 'ॐ सौमनस्यमस्तु' ॐ 'अक्षतं चारिष्टमस्तु' इन मन्त्रों का उच्चारण करके भोजनपात्र पर दे, मोटक आदि लेकर

'अद्यामुक' यह वाक्य पढ़कर मोटक आदि जमीन पर रख दे। तब सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखता हुआ 'ॐ अघोरः पिताऽस्तु' कह कर पिण्ड पर ऐसी जलधारा दे कि जिसका अग्रभाग पूर्व की तरफ रहे। तदनन्तर पूर्वाभिमुख हो हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हुआ 'गोत्रन्नो

इत्यन्न पात्रे दत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम्। इत्युत्सृजेत् ॥ सव्यं कृत्वा दक्षिणो दिशं पश्यन् ॥ ॐ अघोरः पिताऽस्तु ॥ इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्॥ ततः पूर्वाभिमुखः, ॐगोत्रन्नो वर्द्धतां दातारी नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च॥ श्रद्धा च नो माव्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म

वर्द्धतां-सन्तु०' यह वाक्य कहे। तब पवित्री समेत कुशाओं को दक्षिणाग्र करके पिण्ड पर रख कर 'ऊर्जं' वहन्ती यह मन्त्र पढ़ता हुआ दक्षिण को अग्रभाग करके जलधारा दे। तब पिण्ड को सूंघकर उठावे। उन कुशाओं को जिन पर पिण्ड रखा था और अङ्गारा

जो कि रेखा पर घुमाकर दक्षिण में रक्खा है दोनों को अग्नि में डाल दे। उलट कर रखे हुए अर्घपात्र को सीधा कर दे और मोटक, तिल, जल आदि लेकर 'अद्यामुकगोत्रस्य'

कश्चन ॥ एताः सत्याः आशिषः सन्तु ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ पिण्डोपरि सपवित्र-कुशान्दक्षिणाग्रमास्तीर्य्य ॥ ॐऊर्ज्जम्वहन्तोरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम् ॥ स्वधास्थ तर्प्पयत मे पितरम् ॥ इति कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ तत पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकञ्च वह्नौ क्षिपेत् ॥ अर्घपात्र-मुत्तानीकृत्य मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैत-दस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ इति दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा ॥ 'ॐदेवताभ्यः—' इति त्रिर्जपेत् ॥ अपसव्यम् ॥ रक्षादीपं निर्वाप्य, हस्तौ ॥ १६ ॥

आदि सङ्कल्पवाक्य पढ़कर ब्राह्मणको दक्षिणा दे। फिर सव्य हो जाय और 'ॐ देवताभ्यः' इस मन्त्रको तीन बार पढ़े। फिर अपसव्य हो रक्षादीप को बुझाकर हाथ पाँव धो डाले। फिर

सव्य होकर आचमन करे। और 'प्रमादात् कुर्वतां' यह वाक्य पढ़ता हुआ श्राद्ध की सभी वस्तुएँ ब्राह्मण को दे दे या जल में फेंक दे। तदनन्तर पुत्र आदि भाई बन्धुओं के साथ स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहने। तब अपनी जाति के अनुसार विविध प्रकार फल-मूल आदि

पादौ प्रक्षाल्य ॥ सव्यमाचम्य ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् ॥ अम्भसि वा क्षिपेत् ॥ ततः पुत्रादि ज्ञातिबन्धुमिलितस्नातः सुधौतवाससी परिधाय ॥ ततो नानाविधफलमूलादिभिः स्वजात्यनुरूपैरष्टौ पात्राणि पूरयित्वा ॥ गन्धपुष्पधूपदीपादिकं गृहीत्वा श्मशानसमीपमागत्य कैश्चित्पुष्पैः कैश्चिद्भोजनैः कैश्चिद्धूपैः कैश्चिद्दीपैः कैश्चित्पानीयैः कैश्चिदक्षतैः सर्वाणि निवे-

से आठ पात्रों को भर कर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि सामग्री लेकर श्मशानभूमि पर जाय। वहाँ कुछ लोग पुष्प, कुछ भोजन, कुछ धूप, कुछ दीप, कुछ माल्य, कुछ पानी और कुछ अक्षत, यह सब उस भूमि को निवेदन करे। इसके बाद कुछ लोग निरहंकार भाव से चारों दिशाओं

में चौतरफा जल आदि के चार पात्र निवेदन करें और प्रथम चिता के उत्तर द्वार के समीप

दयेत् ॥ कैश्चिन्निरहङ्कारयुक्तैः समन्ततश्चतुर्दिक्षु चतुर्षु अन्नादिपात्रेषु निवेदितेषु ॥ प्रथमं चितायां उत्तरद्वारसमीपे उपविश्य ॐ नमः क्रव्यादमुख्येभ्यो देवेभ्य इति सर्वदा ॥ येऽस्मिन् स्मशाने देवाः स्युर्भगवन्तः सनातनाः ॥ तेऽस्मत्सकाशाद्गृह्णन्तु बलिमष्टाङ्गमक्षयम् ॥ प्रेतस्याऽस्य शुभाँल्लोकान्प्रयच्छन्तु च शाश्वतान् ॥ अस्माकमायुरारोग्यं सुखं च ददतां वरम् ॥ इति पठित्वा ॥ ॐ एषोऽष्टाङ्गबलिः शङ्करादिदेवताभ्यो नमः, इत्येकं बलिं दत्वा ॥ एवं अपरद्वारेषु बलिं दद्यात् ॥ तान् वलीन्क्षीरेणाऽभ्युक्ष्य शङ्करादि-देवताः स्वीय-

बैठकर 'ॐ नमः क्रव्यादमुख्येभ्यो' आदि वाक्य पढ़े । तब 'ॐ एषोऽष्टाङ्गबलिः' यह मंत्र पढ़कर एक बलि दे । इसी तरह और द्वारों पर भी बलि देनी चाहिए । तदनन्तर उन बलियों को दूध से स्नान कराकर 'शङ्करादि देवताः' यह वाक्य कह कर देवताओं का विसर्जन करे । बलि

स्नान कराने पर भी जो दूध बचा हो उसे चिता की हड्डियों पर डाल दे। फिर शमी और पलाश की दो लकड़ियों से पहले मस्तक की हड्डी निकाले उसे घी से तर करके सुगन्धित जल से सींचे। फिर अपसव्य होकर दहिने हाथ के अँगूठे तथा कनिष्ठिका उँगली से उठावे तब

स्वीयस्थानं गच्छन्तु, इति देवताः विसृज्य ॥ अवशिष्टक्षीरेण वाग्यतः चितास्थान्यस्थीनि अभ्युक्ष्य प्रथमं शिरोऽस्थीनि शमीपलाशशाखाभ्यामुद्धृत्याऽऽज्येनाऽभ्युक्ष्य गन्धवारिणा च सिक्त्वा कृताऽपसव्यो दक्षिणाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां गृहीत्वा ततोऽन्यानि अस्थीनि गृहीत्वा पञ्चगव्येन सुगन्धवारिणा च सिक्त्वा ॥ पलाशपुटके निक्षिप्य क्षौमवस्त्रेण संवेष्ट्य मृण्मये नूतनभाण्डे साच्छादने निदध्यात् ॥ तद्भाण्डमरण्ये वृक्षमूले वा पङ्क-शैवालयुतगर्ते वा निभृतं निर्वासयेत् ॥ चिता-

औरो और अंगों की हड्डिये बटोर कर उन्हें पञ्चगव्य तथा सुगन्धित जल से सींचे, तब उन हड्डियों को पलाश के दोने में रखे और रेशमी कपड़े से लपेट कर मिट्टी के नये बर्तन में रखकर बर्तन को ढाँक देवे। फिर उस बर्तन को जंगल में किसी वृक्ष की जड़ में अथवा कीचड़ और सेवार

से युक्त किसी गड्ढे में चुपचाप रख दे। चिता की राखी आदि जल में फेंक दे। तब गोबर से उस जमीन को लिपवा कर चिता की भूमि शुद्ध करके और पहले की तरह चारों दिशाओं में शंकर आदि देवताओं को बलि दे। तब उन देवताओं का विसर्जन करे और बलि का अन्न जल

भस्मादितोये विनिःक्षिपेत् ॥ गोमयाऽम्बुभिश्चिताभूमिशुद्धिं विधाय पूर्ववच्चतुर्दिक्षु शङ्करादिदेवताभ्यो बलिं दद्यात् ॥ तान्विसृज्य बल्यन्नमम्भसि क्षिपेत् ॥ ततश्चिताभूमेराच्छादनार्थं वृक्षः पुष्करकः पट्टको वा कारयितव्यः ॥ (पुष्करकः=इष्टकानिर्मितं देवकुटकाकारं गृहम्) ततः सचैलो बन्धुभिः सह स्नायात् ॥ अथ कैश्चित्पुत्रपौत्रसहोदरादिभिर्गङ्गातीरमस्थीनि नीत्वा स्नात्वा तान्यस्थीनि पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य हिरण्य-मध्वाज्यतिलैः संयोज्य मृत्पिण्डपुटे

में फेंक दे। तदनन्तर चिता की भूमि को ढाँकने के लिए उस स्थान पर वृक्ष लगा दें, देवालय के समान कोई घर बना दे या चबूतरा ही बनाकर छोड़ दे। तब अपने बान्धवों के साथ कपड़ों सहित स्नान करे। कुछ लोगों का यह मत है कि पुत्र, पौत्र तथा भाई आदि के साथ उन

हड्डियोंको गङ्गाके तीर लेता जाय। वहाँ स्नान करे। फिर हड्डियों पर पञ्चगव्य डाले। तब सुवर्ण मधु, घृत तथा तिल रख कर उन्हें मिट्टी के नाँद में डालकर दक्षिण ओर निहारता और ॐ 'नमोऽस्तु धर्माय' यह वाक्य कहता हुआ जलमें जाय और मृत व्यक्ति का ख्याल किये हुए उसकी स्वर्गकामना करता हुआ 'स मे प्रीतः' कहकर गङ्गाजीमें डाल दे। तब स्नान करे और खड़ा होकर

निधाय दक्षिणां दिशं पश्यन् ॥ 'ॐ नमोऽस्तु धर्माये'ति वदन् जलं प्रविश्य प्रेतो गतः स्वर्गकामो दक्षिणाभिमुखः 'स मे प्रीतः' इत्युक्त्वा गङ्गाम्भसि क्षिपेत्॥ ततः स्नात्वा उत्थाय सूर्यं पश्येत् ॥ तत आचम्य॥ अद्य कृतैतदस्थिप्रक्षेपप्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ इति दक्षिणां दद्यात् ॥ एवं कृते प्रेतपुरःस्थितस्य, स्वर्गे गतिः स्यात्तु महेन्द्रतुल्या ॥ यावदस्थि मनुष्यस्य गङ्गातोयेषु मज्जति ॥ तावद्वर्षस-

सूर्य की ओर देखे। फिर आचमन करे और 'अद्य कृतैतदस्थि' यह संकल्पवाक्य पढ़कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे। प्रेत का उत्तराधिकारी यदि प्रेत की हड्डियें गंगाजी में डालता है तो प्रेत स्वर्ग

गामी होकर इन्द्र के समान हो जाता है। जितने वर्षों तक जिस मृत मनुष्य की हड्डी गंगाजी में डूबी रहती है, वह मनुष्य उतने ही हजार वर्षों तक स्वर्गलोक में पूजा जाता है। जिस धर्मात्मा की हड्डियें गंगाजी में पड़ जाती हैं, वह कभी भी ब्रह्मलोक से नहीं लौटता, सदा वहीं रहता है। गौडपादाचार्य कहते हैं कि–दस दिनके भीतर ही जिसकी हड्डियें गंगाजीमें पहुँच जाती हैं तो जो

हस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ गङ्गातोये तु यस्याऽस्थि प्लवते शुभकर्मणः ॥ न तस्य पुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कथञ्चन ॥ गौडाः ॥ दशाह्वाभ्यन्तरे यस्य गङ्गा-तोयेऽस्थि मज्जति ॥ गङ्गायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात् ॥ ब्रह्मपु-राणे ॥ मातुः कुलं पितृकुलं वर्ज्जयित्वा नराधमः ॥ अस्थीन्यन्यकुलोत्थानि नीत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ अथ पर्णशरदाहः ॥ अथाऽऽचारान्निरग्नेरप्यस्थि-

फल गंगाजीमें मरनेका होता है वही फल गंगामें हड्डी फेकनेमें भी होता है। ब्रह्मपुराण कहता है कि–कोई मनुष्य यदि मातृकुल तथा पितृकुलके अतिरिक्त और किसी कुलकी हड्डियें उठाता है तो वह चा-न्द्रायण व्रत करने पर शुद्ध होता है। अब पर्णशरदाह का विधान बताते हैं। आचारानुसार निरग्निक याने जो अग्निहोत्री नहीं उनका भी पर्णशरदाह किया जा सकता है। यदि दहन करने योग्य शरीर

न प्राप्त हो सके, याने परदेशमें कोई का मृत्यु हो और पुत्र आदि का शरीर न मिले, कोई फूँक दिये हो अथवा चेचक आदि से मृत्यु भयी हो तो गाड़ दिया जाय तो बाद में उसकी हड्डियों को निकाल कर घीसे तर कराके और वस्त्रसे लपेटकर पूर्वोक्त विधिसे जलावे। यदि हड्डियें भी न मिल सकें तो तीन सौ साठ (३६०) पलाशपत्र से पुरुष बनाकर 'असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा'

पर्णशरदाहः॥ दाह्यशरीरालाभे तदस्थि घृतेनाभ्यज्य वस्त्रेणाच्छाद्य दहेत्पूर्ववत्॥ अस्थ्यलाभे षष्ठ्यधिकपलाशपत्रशतत्रयेण[३६०] पुरुषाकृतिं विन्यस्य। ॐ असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा॥ इति दहेत्॥ प्रथमतः शिरो निवेश्य शरखण्डद्वयेन जङ्घाद्वयं कृष्णसारचर्मोपरि ऊर्णासूत्रैर्ग्रथितैः पलाशपत्रैर्वृतैर्वाऽऽवेष्ट्य शिरः यवचूर्णेन विलिप्य कृष्णसारचर्मणाऽऽच्छाद्य पूर्ववद्दहेत् (तद्विन्यासप्रकारः) शिरस्यशीत्यर्द्धं[४०] देयाद् ग्रीवायां च दशैव[१०] तु॥ बाह्वोश्चैव

कहकर जला दे। पुरुष निर्माण करते समय पहले नारियलसे सिर बनाकर दो सरपत से दोनों जंघायें बनावें। यह पुरुष मृगचर्मपर बनाकर ऊनके सूत्र या पलाशके पत्तोंसे लपेटकर उस पुरुष का माथा जौ के पिसान से लपेटे और ऊपर से भी मृगचर्म ओढ़ाकर पूर्वोक्त विधि से जलावे।

पुरुष के बनाने की विधि यह है कि—मस्तक में चालीस पत्र, गले में दस पत्ते, दोनों बाहुओं में सौ पत्र, उँगलियों में दस पत्र, छाती में तीस पत्र, पेट में बीस पत्र, लिङ्ग में चार पत्र, तीन-तीन दोनों अण्डकोशों में, दोनों घुटनों में सौ पत्र, जानु तथा जंघा में तीस पत्र और पैर की उँगलियों में दस पत्र देना चाहिए। इस तरह पर्णनिर्मित मनुष्य का दाह करने पर केवल

शतं[१०] दद्यादङ्गुलीषु तथा दश[१०] ॥ उरसि[३०] त्रिंशतं दद्याद्विंशतिं[२०] जठरे तथा ॥ अष्टार्द्धं[४] शिश्नके दद्याद्द्वादशार्द्धं[६] मुष्कयोस्तथा ॥ ऊर्वोश्चैव शतं[१००] दद्यात् त्रिंशत[३०] जानुजङ्घयोः॥ पादाङ्गुलीषु दश[१०] वै एतत्पत्रविकल्पनम्॥ एवं पर्णनरं दग्ध्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ तत्राऽशौचान्तपूर्वदिने सर्वेषां रजकद्वारा वस्त्र-शुद्धिं कारयित्वा ॥ अशौचान्तदिवसे गृहशुद्धिं कृत्वा मृण्मयभाण्डानि

तीन दिन का अशौच रहता है। जिस दिन अशौच समाप्त होनेवाला हो उसके एक दिन पहले सभी बान्धव धोबी से अपने अपने कपड़े धुला लें। फिर अशौच समाप्त होनेवाले दिन सब घर लीप पोतकर साफ करे। घर में जितने मिट्टी के बर्तन हों, उन्हें निकाल डाले। फिर सभी बान्धवों

के साथ नदी तथा जलाशय पर जाकर स्नान करे। उसी रोज दसवाँ पिण्डदान करे। फिर जलाशयके तट पर केश, लोम और नखोंको कटवाकर तिलका तेल लगावे और सफेद सरसों के उबटन से माथा मलकर स्नान करे। प्रेत से स्पर्श किया हुआ कपड़ा नाई को दे दे। तब आचमन करके एक जोड़ा कपड़ा जो कि फटा न हो अर्थात् नया हो और नया न हो तो भी

त्यक्त्वा स्नात्वा दशमं पिण्डं दत्त्वा बहिरुदकान्ते केशलोमनखान्यथायोग्यं वापयित्वा तिलतैलेनाङ्क्त्वा गौरसर्षपकल्केन शिरश्चोन्मृज्य स्नात्वा प्रेतस्पृष्टवासांसि नापिताय दद्यात् ॥ अथाऽऽचम्य वाग्यतो वासो युग्महतं नवं शुद्धं पुरातनं वा युक्तमव्रणं परिधाय ॥ अश्मा विष्टो गां सुवर्णं गोरोचनं दधि-दूर्वा-सितसर्षपान् ब्राह्मणोऽग्निं क्षत्रियो वाहनायुधौ वैश्यः प्रतोद-प्रग्रहौ शूद्रो यष्टिं संस्पृश्य मङ्गलानि सङ्कीर्तयन् ब्राह्मणान् स्वस्ति वाचयित्वा गृहं

शुद्ध, जोड़ से रहित और छेदा न हो तो पुराना ही वस्त्र लेकर पहने। फिर श्राद्ध कर्ता तथा उसके साथी क्षण भर पत्थर पर बैठें और गौ, सुवर्ण, गोरोचन, दही, दूब, सफेद सरसों छुवें।

इनके अतिरिक्त ब्राह्मण अग्नि, क्षत्रिय वाहन तथा शस्त्र, वैश्य चाबुक और पगहा तथा शूद्र छड़ी का स्पर्श कर मंगलवाक्यों का उच्चारण करता हुआ अथवा ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन कराके घरके भीतर जाय। इस दिन ब्राह्मण पंचगव्यपान करते हैं यह रीति है। पराशर का मत

प्रविशेत्। अत्र दिने ब्राह्मणाः पञ्चगव्यपानं कुर्वन्तीति समाचारः॥ दशमेऽहनि सम्प्राप्ते स्नानं कुर्याद्बहिर्जले॥ तत्र त्याज्यानि वासांसि केशश्मश्रुनखानि च, इति पराशरः। तत्र सामुद्रसैन्धवलवणानि यवमुद्गकल्माषगोक्षीरदधिघृतखण्डान्यश्नीयात्। मधुमांसस्त्रीवर्जिता भवेयुः। सपिण्डा एकवारं भुञ्जीयुः॥ इति नियमाः॥ अथ दशगात्रश्राद्धारम्भः॥ तत्रादौ पुत्राद्यधि-

है कि दसवें दिन गाँवसे बाहर जलमें स्नान करे। वहीं पर अपना कपड़ा त्याग दे और केश, दाढ़ी, मोछ, और नाखून वहीं कटवा डाले। उस दिन सामुद्र लवण या सेंधा लवण, यव, मूँग, उरदी, गौका दूध, दही, घी, खांड़ इत्यादि भोजन करे और मधु, मांस,तथा स्त्रीसे पृथक् रहें। सपिंडके लोग एकबार भोजन करें। यहनियम कहा गया। अब दशगात्रकी विधि बताते हैं। उसमें सर्वप्रथम

कर्तव्य यह है कि प्रेतके पुत्र आदि अधिकारी हाथ में दंड लिये मिट्टी के बर्तन में जल लेकर गाँव से बाहर किसी देवस्थान पर, घर के दरवाज़े पर या किसी नदी के तट पर पिण्ड दान देने का निश्चय करें। निश्चित स्थान की ईशान दिशा में आग जलावे। फिर दो पसर चावल धोकर अपने हाथसे खीर पकावे। फिर ऐसी जगह कि जहाँ की जमीन दक्षिणकी ओर ढालू हो

कारिणो लगुडमादाय मृण्मये नूतनभाण्डेन जलमानीय ग्रामाद्बहिर्देवतायतने गृहद्वारि शुचितीरे वा पिण्डदानादैशान्यां दिशि अग्निं प्रज्वाल्य तण्डुलप्रसृतिद्वयं प्रक्षाल्य सुश्रृतं स्वयं पचेत्। ततो दक्षिणप्रवणे भूभागे गोमयोपलिप्ते गौरमृत्तिकया पिण्डार्थं दक्षिणप्रवणं स्थानं निर्माय, आचान्तः कृताऽपसव्यो दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः पिण्डस्थानोपरि दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य पुटकादौ तिल-जल-गन्ध-पुष्पाणि प्रक्षिप्य तत्पात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकतिल-

उसे गोबरसे लिपवाकर सफेद मिट्टीसे दक्षिणको ढालू बेदी बनावे। तब आचमनकर अपसव्य हो दहिना घुटना मोड़कर दक्षिणकी ओर मुख करके बैठे। बेदी पर दक्षिण को अग्रभाग कर

के तीन कुश बिछावे। दोने या कसोरेमें तिल, जल, गन्ध, पुष्प डालकर बायें हाथमें वह पात्र तथा मोटक, तिल और जल लेकर 'अद्यामुक गोत्र' यह वाक्य पढ़कर वेदीपर बिछीहुई कुशाओं पर अवनेजन जल डाले। इसके बाद तिल, घृत और मधुसे युक्त और दुग्धसे सिक्त गरमपिण्ड

जलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्थानेऽत्रा-वने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ ततस्तिल-घृत-मधुयुक्तं दुग्धसिक्तं तप्तमेव पिण्डमादाय मोटक–तिल–जलानि चादाय, ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत एष शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति कुशोपरि अवनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात् ॥ ततः प्रत्यवनेजनम्। पूर्वदत्ताऽवशिष्टाऽवनेजनपात्रमादाय मोटकतिलजलानि

तथा मोटक, तिल और जलको हाथ में लेकर 'अद्यामुकगोत्र' यह वाक्य पढ़कर वेदी पर उस जगह रखे जहाँ कि पहले अवनेजन जल डाला था। तब पूर्व में अवनेजन देने से कुछ अवशिष्ट जलयुक्त पात्र तथा मोटक तिल जल लेकर 'अद्यामुक गोत्र' यह वाक्य पढ़कर पिण्डपर जलडाल

दे। तत्पश्चात् प्रेत के निमित्त चुपचाप पिण्ड के ऊपर खस, चंदन, भृङ्गराजपत्र, पुष्प, धूप, दीप, पान, सोपाड़ी और ऊन का सूत चढ़ाकर मोटक, तिल, जल हाथ में लेकर 'अद्यामुक गोत्र' आदि वाक्य पढ़े।

चादाय। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति पिण्डोपरि दद्यात्॥ ततः प्रेतमुद्दिश्य तूष्णीं एव गन्धपुष्पखशभृङ्गराजपत्रराल धूपदीपताम्बूलपूगीफलऊर्णातन्तुमयबहुवस्त्राणि पिण्डे दद्यात्॥ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डे एतानि ऊर्णासूत्रोशीरचन्दनभृङ्गराजपत्रराल धूपदीपादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्। ततो यावद्बाष्पं निःसरति तावत्पिण्डाभिमुखस्तिष्ठेत्॥ ततोऽपसव्यादिनैव। अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डे एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इत्येकं तिलतोयाञ्जलिं

वाक्य पढ़े। और जबतक पिण्डमें से भाफ निकलता रहै तब तक पिण्डके सामने बैठारहे। तदनन्तर अपसव्य ही से मोटकादि लेकर 'अद्यामुक गोत्र' आदि वाक्य पढ़े और प्रथम शिरःपूरक पिण्डके

ऊपर एक तिलतोयांजलि देवै। इसी प्रकार 'अद्यामुकगोत्र' आदि पढ़कर तिल जलसे भरा एक पूर्ण पात्र पिंडके समीप रखै। इसके बाद पिण्डके दोनों तरफ समीप में त्रिकाष्ठिका रखै और उस पर जल तथा दूध से भरा हुआ पात्र (दोनिया) रखै और 'श्मशानाऽनलदग्धोऽसि' इस मन्त्रको

पिण्डोपरि दद्यात् ॥ एवं पिण्डसमीपे एकं तिलतोयपूर्णपात्रं दद्यात्॥ अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेत पिण्डसमीपे एतत्तिलतोयपूर्णपात्रं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ततः पिण्डपार्श्वयोस्त्रिकाष्ठिकारोपणम् ॥ तस्या उपरि जल-दुग्धपात्रं च निदध्यात् ॥ श्मशानानलदग्धोऽसि परित्यक्तोऽसि बान्धवैः। इदं नीरं इदं क्षीरमत्र स्नाहि इदं पिब ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ इति पिण्डोपरि दद्यात, पश्चाज्जले सर्वं क्षिपेत्। तत उपलिप्तायां भूमौ माल्यं पानीयं दीपं च निधाय। अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेत इदं माल्यं परिधेहि ते मया दीयते तवोप-

पढ़कर पिण्डपर देवे। सब करनेके बाद सभी चीजें जलमें डाल दे। फिर उस जमीनको गोबरसे लीपकर वहाँ पर माला जल और दिया जला कर रखै। मोटक तिल जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' यह

वाक्य पढ़ कर जल छोड़े । अथवा घरकी दुआरी पर ही प्रेत के उद्देश्य से त्रिकाष्ठिका रख कर

तिष्ठताम् । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत इदं पानीयं पिब ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत इमं दीपं पश्य ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति दद्यात् ॥ अथवा सायङ्काले गृहद्वारि प्रेतमुद्दिश्य दशरात्रं त्रिरात्रं वा दद्यात् ॥ तत्र क्रमः । रात्रौ गोमयोपलिप्तायां भूमौ त्रिकाष्ठिकासमारोपितमृण्मयपात्रद्वये जलं क्षीरं च निधाय तत्समीपे माल्यं दीपं च निधाय। अद्याऽस्यां रात्रौ अमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽत्र स्नाहि इदं पिब इदं परिधेहि अनेन पश्य, इति निवेदयेत् ॥ अनेनैव क्रमेण प्रथमपिण्डवद् द्वितीयादिदिवसेषु द्वितीयादिपिण्डं दद्यात् ॥ तत्र विशेषः । द्वितीयदिने पिण्डदानवाक्ये कर्णाऽक्षिनासिकापूरको द्वितीयः पिण्डः, द्वौ तिलतोयाञ्जली, द्वे तिलतोयपूर्णपात्रे

पहिले की तरह संकल्प करै और कहै कि–'इदं स्नाहि इदं पिब इदं परिधेहि अनेन पश्य।' इसी प्रकार पूर्ववत् दूसरे दिनसे लेकर दस दिन तक पिंड देवै। दूसरे दिन पिंड देनेके समय जो वाक्य

कहै तो 'कर्णाक्षिनासिकापूरको द्वितीयः पिण्डः, द्वौ तिलतोयाञ्जली, द्वे तिलतोयपात्रे।' इस वाक्य को जोड़ लेवै। तृतीय दिन 'गलांशभुजवक्षःपूरकः तृतीयः पिण्डः, त्रयस्तिलतोयाञ्जलयः, त्रीणि तिलतोयपूर्णपात्राणि।' चतुर्थ दिन 'नाभिलिङ्गगुह्यपूरकः चतुर्थः पिण्डः, चत्वारस्तिलतोयाञ्जलयः

तृतीयदिने गलांसभुजवक्षःपूरकः तृतीयः पिण्डस्त्रयस्तिलतोयाञ्जलयः, त्रीणि तिलतोयपूर्णपात्राणि। चतुर्थदिने नाभिलिङ्गगुदपूरकः चतुर्थः पिण्डश्चत्वारः तिलतोयाञ्जलयश्चत्वारि तिलतोयपूर्णपात्राणि। पञ्चमदिने जानुजङ्घापादपूरकः पञ्चमः पिण्डः,पञ्च तिलतोयाञ्जलयः, पञ्च तिलतोयपूर्णपात्राणि। षष्ठदिने सर्वमर्मपूरकःषष्ठःपिण्डः,षट् तिलतोयाञ्जलयः,षट् तिलतोयपूर्णपात्राणि। सप्तमदिने सर्वनाडीपूरकःसप्तमःपिण्डः,सप्ततिलतोयाञ्जलयः,सप्ततिलतोयपूर्णपात्राणि। अष्ट-

चत्वारि तिलतोयपूर्णपात्राणि।' पाँचवें दिन 'जानुजङ्घापादपूरकः पञ्चमः पिंडः, पञ्चतिलतोयाञ्जलयः पञ्च तिलतोयपूर्णपात्राणि'। छठें दिन 'सर्वमर्मपूरकःषष्ठःपिण्डः,षट् तिलतोयाञ्जलयः षट् तिलतोयपूर्णपात्राणि।' सातवें दिन 'सर्वनाडीपूरकः सप्तमःपिण्डः सप्त तिलतोयाञ्जलयःसप्त तिलतोयपूर्णपात्राणि।'

आठवें दिन–'दन्तलोमादिपूरकः अष्टमः पिण्डः अष्टतिलतोयाञ्जलयः, अष्टतिलतोयपूर्णपात्राणि नवें दिन–'वीर्यपूरको नवमः पिण्डः, नव तिलतोयाञ्जलयः, नव तिलतोयपूर्णपात्राणि'। दशवें दिन पूर्णत्वतृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरकोदशमःपिण्डः,दशतिलतोयाञ्जलयः,दशतिलतोयपूर्णपात्राणि'-इसवाक्य

मदिने दन्तलोमादिपूरकोऽष्टमः पिण्डः, अष्टौ तिलतोयाञ्जलयः,अष्टौ तिलतोयपूर्णपात्राणि । नवमदिने वीर्यपूरको नवमः पिण्डः, नव तिलतोयाञ्जलयः, नव तिलतोयपूर्णपात्राणि । दशमदिने पूर्णत्वतृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरको दशमः पिण्डो देयः, दश तिलतोयाञ्जलयः, दश तिलतोयपूर्णपात्राणि, अन्यत्सर्वं समानम् ॥ अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः ॥ अक्षयः पुण्डरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्रदो भव॥ इति स्मृत्वा॥कुलधर्मं समाचरेत् ॥ कृतैतद्दशगात्रपिण्डकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं

की योजना कर लेवै, इसके अतिरिक्त और सभी कार्य प्रथम पिण्डमें बताये क्रमके अनुसार हा होंगे। इसके बाद 'अनादिनिधनो देवः' इस श्लोक को कह कर भगवान् का स्मरण करे । और अपने कुल के अनुसार व्यवहार करै ॥ 'अद्यामुक' इत्यादि कह कर ब्राह्मणको दस पल लोहका

दाम दक्षिणा में दे। इस प्रकार दशगात्र की विधि समाप्त हुई। अब एकादशाहके रोज प्रथम मध्य-
दशपललोहनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ताम्रं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे
इति दशगात्रप्रयोगः समाप्तः ॥ अथैकादशाहे मध्यषोडशीप्रारम्भः।

तत्र प्रमाणं गरुड़पुराणे द्वादशाऽध्याये ॥ प्रथमं विष्णवे दद्याद् द्वितीयं
श्रीशिवाय च ॥ याम्याय परिवाराय तृतीयं पिण्डमुत्सृजेत् ॥ १ ॥ चतुर्थं
सोमराजाय हव्यवाहाय पञ्चमम् ॥ कव्यवाहाय षष्ठं च दद्यात्कालाय सप्त-
मम् ॥ २ ॥ रुद्राय चाऽष्टमं दद्यान्नवमं पुरुषाय च ॥ प्रेताय दशमं चैवैकादशं
विष्णवे नमः ॥ ३ ॥ द्वादशं ब्रह्मणे दद्याद्विष्णवे च त्रयोदशम् ॥ चतुर्दशं
शिवायैव यमाय दशपञ्चकम् ॥४॥ दद्यात्तत्पुरुषायैव पिण्डं षोडशकं खग !॥
मध्यं षोडशकं प्राहुरेतत्तत्त्वविदो जनाः ॥ ५ ॥ द्वादश प्रतिमासेषु पाक्षिकं च
त्रिपाक्षिकम् ॥ न्यूनषाण्मासिकं पिण्डं दद्यान्न्यूनाब्दिकं तथा ॥ ६ ॥
षोडशीको कहते हैं। इसका प्रमाण गरुड़पुराणके बारहवें अध्यायमें है, सो मूल में १० श्लोक

पहिले लिखकर तब प्रयोग आरम्भ किया है। प्रयोग का क्रम यह है कि–स्नान करके शुद्ध और नयी सफेद धोती अँगोछा धारण कर अथवा धोबीके यहाँ धोया वस्त्र फटा सीया भया न हो। ऐसा

उत्तमं षोडशं चैतन्मया ते परिकीर्तितम् ॥ अपयित्वा चरुं तार्क्ष्य ! कुर्यादेकादशेऽहनि ॥ ७ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाऽष्टौ श्राद्धं प्रेतत्वनाशनम् ॥ यस्य जातं विधानेन स भवेत्पितृपङ्क्तिभाक् ॥८॥ पितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं कारयेत् षोडशत्रयम् ॥ एतच्छ्राद्धविहीनश्चेत्प्रेतो भवति सुस्थिरम् ॥ ९ ॥ यावन्न दीयते श्राद्धं षोडशत्रयसंज्ञकम् ॥ स्वदत्तं परदत्तं च तावन्नैवोपतिष्ठति ॥ १० ॥

अथ प्रयोगः ॥ आचम्य प्राणानायम्य । ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इत्यात्मानं

धारण कर गोबर से लिपे हुये श्राद्ध भूमिमें आवै, पूर्व मुँह हो अपने आसन पर बैठकर पवित्री पहिने, आचमन और प्राणायाम करै 'अपवित्रः पवित्रो वा' इसको पढ़ कर श्राद्धकी सामग्री पर और अपने ऊपर जल छिड़कै, और तिल्लीके तेलका दीया जलाकर दक्षिण तरफ रखै, बायें हाथमें

पीली या सफेद सरसों लेकर दहिने हाथसे ढाँककर 'ॐ नमो नमस्ते' इस श्लोकको पढ़कर दहिने हाथ से पूरब, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर चारों दिशामें फेकनेके बाद नीवी बांधै, यव फूल लेकर तीन दफै भूमिपर

श्राद्धसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य ॥ रक्षादीपं निधाय ॥ ततो वामहस्ते गौरसर्षपान्गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य ॥ ॐ नमो नमस्ते गोविन्द ! पुराणपुरुषोत्तम ! ॥ इदं श्राद्धं हृषीकेश ! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ ॐ प्राच्यै नमः । ॐ अवाच्यै नमः ॥ ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः ॥ ॐ अन्तरिक्षाय नमः ॥ ॐ भूम्यै नमः ॥ इति पूर्वादिदिक्षु विकिरेत्, नीवीं बद्ध्वा ॥ यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः, इति त्रिःसम्पूज्य ॥ सङ्कल्पः ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि प्रेतत्वविमुक्तहेतुकमध्यषोडश्यां विष्णवादितत्पुरुषपर्यन्तान् षोडशश्राद्धानि एकतन्त्रेणाऽहं करिष्ये ॥ त्रिर्गायत्री जपित्वा ॥

'श्राद्धभूम्यै नमः' कह कर छोड़े । त्रिकुश यव जल लेकर सङ्कल्प करै । तीन बार गायत्री मंत्र को जपै और 'देवताभ्यः' इस मंत्र को भी तीन बार पढ़ै । दक्षिण मुख होकर सव्य हो से पश्चिम से

पूरब तक सोलह आसन बिछावे और उस पर क्रम से तीन तीन कुशा रखै ॥ त्रिकुश यव जल लेकर
ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्य-मेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् ॥ दक्षिणाभिमुखः सव्येनैव पश्चिमत आरभ्य पूर्वान्ताः षोडशासनानि दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय, अद्या-मुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णोरिदमासनं ते नमः ॥१॥ 'ॐ यवोऽसी'ति यवान् । अपसव्येन 'ॐ अपहते'ति तिलान् श्राद्धदेशे विकिरेत् ॥ एवं शिवमिदमासनं ते नमः ॥२॥ याम्य सपरिवारमिदमासनं ते नमः ॥३॥ सोमराज इदमासनं ते नमः ॥४॥ हव्यवाह इदमासनं ते नमः ॥५॥ कव्यवाह इदमासनं ते नमः ॥ ६ ॥ काल इदमासनं ते नमः ॥ ७ ॥ रुद्र इदमासनं ते नमः ॥ ८ ॥ पुरुष इदमासनं ते नमः ॥ ९ ॥ अपसव्यम् ॥

'अद्यामुक गोत्र' कह के विष्णु को आसन देवै । इसी प्रकार मूल में लिखे हुए नामों से नव आसन देवे, सव्य होकर दसवां, अपसव्यसे ग्यारहवेंसे पन्द्रहतक सव्यसे तथा सोलहवाँ अपसव्यसे देवे । इसके

सव्य अपसव्य क्रमसे बाद १६ दोनियाँ १६ हों भोजनपात्रके समीपमें रखै, पूर्ववत् १६ दोनियों

मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेत इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यम् ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णोरिदमासनं ते नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्मन्निदमासनं ते नमः ॥ १२ ॥ विष्णोरिदमासनं ते नमः ॥१३ शिव इदमासनं ते नमः ॥१४॥ यम इदमासनं ते नमः ॥१५॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ तत्पुरुष इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥१६॥ सव्यम् ॥ ततो भोजनपात्रस्याऽग्रे षोडश पुटकानि धृत्वा नवसु पुटकेषु दक्षिणाग्रपवित्राणि धृत्वा, दशमपुटके अपसव्येन पवित्रं धृत्वा पुनः सव्येन पञ्चसु पुटकेषु अपसव्येन षोडशके पुटके पवित्रं धृत्वा ॥ सव्येन नवसु पुटकेषु 'ॐ शन्नो देवीरि'ति जलं क्षिपेत् ॥ अपसव्येन दशमपुटके ।

में दक्षिण को अग्र करके पवित्री रखै ' शन्नो देवी' इस मन्त्र को पढ़कर १६ हों पुटक में जल

छोड़कर 'ॐ यवोसि' इस मंत्रसे सव्यसे नवें में यव, अपसव्यसे दशवें में तिल, सव्य से ग्यारहवेंसे पन्द्रहवें तक पुटकमें यव, सोलहवेंमें अपसव्यसे तिल इसी तरह सोलहों पुटकमें सव्य अपसव्यसे

सव्येन पञ्चसु पुटकेषु ॥ अपसव्येन षोडशके पुटके ॐ शन्नोदेवीरिति जलं क्षिपेत् सव्येन नवसु पुटकेषु 'ॐ यवोऽसि यवया स्मद्द्वेषो यवयारातीरि'ति यवान् । अपसव्येन दशमपुटके 'ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा ॥ इति तिलान्क्षिपेत् ॥ पुनः सव्येन पञ्चसु पुटकेषु 'ॐ यवोऽसी'ति यवान् । अपसव्येन षोडशके पुटके 'ॐ तिलोऽसी'ति तिलान्क्षिपेत् ॥ सव्याऽपसव्येन यथाक्रमेण गन्धपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ प्रथमार्घपात्रं गृहीत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ दक्षिणहस्तेनाऽर्घपात्रमाच्छाद्य ॐ या दिव्या

चुपचाप चन्दन फूल छोड़ै। सव्य होकर प्रथम अर्घपात्र बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथसे पवित्री भोजनपात्र पर उत्तर को अग्र करके रखै। उस पवित्रीपर अर्घपात्र के अतिरिक्त किंचित् जल देय,

तब दाहिने हाथसे अर्घपात्रको ढककर 'या दिव्या' इस मंत्रको पढ़ै । तीनकुशा यव जल लेकर 'अद्यामुक गोत्र' इत्यादि वाक्यसे अर्घका जल पवित्रीपर छोड़े वह पवित्री उठाकर अर्घके सहित आसनके दहिने

ऽआपः पयसा संबभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः सश्ंस्योना सुहवा भवन्तु ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथमविष्णोरेष हस्तार्घस्ते नमः ॥ इत्यर्घपात्रं सपवित्रकं दक्षिणपार्श्वे उत्तानमेव धारयेत् ॥ एवं शिवाय २ याम्याय सपरिवाराय ३ सोमराजाय ४ हव्यवाहाय ५ कव्यवाहाय ६ कालाय ७ रुद्राय ८ पुरुषाय ९ दद्यात् । अपसव्यं मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-

तरफ 'विष्णोः स्थानमसि' कहकर उत्तान रख देवे (कुछलोग न्युब्ज यानी अधोमुख रखते हैं, अधोमुख जहाँ कहा है तहाँपर बायेंतरफ रखना वास्तवमें देवताका दाहिने पितृका बायें रखे) इसीप्रकार सव्य अपसव्यसे मूलमें लिखेहुए नामोंसे १५ हों स्थानोंमें देवे फिर हाथमें जललेकर सव्यसे आरम्भ करके

अपसव्यसे १६ हों आसन और भोजनपात्रके चारों तरफ जल घुमावे। 'यथा चक्रायुधो' इस श्लोक से श्राद्ध के वास्ते जो अन्न पकाया है उस अन्न के ऊपर का भाग निकाल कर उसमें घी तिल

प्रेत एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ एवं त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ विष्णोः ११ ब्रह्म १२ विष्णु १३ शिव १४ यम १५ अपसव्येन मोटकादीन्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य मध्य० प्रेत एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥१६॥ सव्याऽपसव्येन सर्वेषु भोजनपात्रसहितासनेषु चतुष्कोणं मण्डलं 'यथा चक्रायुधेति' कुर्यात् ॥ ततः श्राद्धीयान्नाऽग्रभागं घृतव्यञ्जनतिलयुतं पुटकादौ कृत्वा ॥ ॐ इदमन्नं एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः इति कुशोपरि दक्षिणतः उत्सृजेत् ॥ ताम्रपात्रादिस्थितमन्नं हस्ताभ्यामादाय सव्याऽपसव्याभ्यां षोडशभोजनपात्रेषु परिवेषयेत् । तत्र पुटकयोः घृतं जलं

मधु मिलाकर दोनियाँ में रखे। 'ॐ इदमन्नं' कहकर कुशके ऊपर दक्षिण के तरफ रखै। बाद तामे के बरतन में अन्न लेकर दोनों हाथसे सव्य अपसव्यसे सोलहों जगह परोसे, व अन्न पर

दोनों हाथसे 'मधुव्वाता' इस मन्त्रको कहते हुये मधु देवै और 'मधु मधु' ऐसा कहै। आगे सव्य अप-
षोडशस्थानेषूपनीय। हस्तद्वयेन सव्याऽपसव्याभ्यामन्नोपरि मधु दत्वा ॥ ॐ
मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥
ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ॥ मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ २ ॥
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥३॥
मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ ततः सव्याऽपसव्याभ्यां उत्तानव्यस्तहस्ताभ्यां
च अन्नपात्रमालभ्य। ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते
ऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढ-
मस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्णहव्य (कव्य) मिदं रक्ष मदीयम् ॥ इति
पठित्वा ॥ वामेन पाणिना पात्रमत्यजन्दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठेन इदमन्नं इमा

सव्यसे दोनों हाथसे भोजनपात्रको स्पर्श करके 'पृथिवी ते पात्रं-इदं विष्णु०' इत्यादि पढ़े। बायां
हाथ भोजनपात्रमें लगाये हुये दाहिने हाथके अँगूठेसे अन्न जल घी फिर अन्न को छूवै। सव्य

अपसव्य से अन्नपात्रोंपर 'ॐ यवोऽसि' इस मन्त्रसे यव, 'अपहता' इस मन्त्रसे तिल छोड़ै, सव्य

आपः इदमाज्यं इदं हव्यं (इदं कव्यं) पुनरन्ने ॥ सव्याऽपसव्याभ्यां अन्नपात्रेषु ॐयवोऽसीति यवान्, ॐअपहते'ति तिलान्विकिरेत्॥सव्यम्॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय, अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णोरिदमन्नं सोपकरणं ते नमः ॥ एवं श्रीशिव २ यम सपरिवार ३ सोमराज ४ हव्यवाह ५ कव्यवाह ६ काल ७ रुद्र ८ पुरुष ९ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेत इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यं त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णोः इदमन्नं सोपकरणं ते नमः ॥११॥ एवं ब्रह्मणे १२ विष्णवे १३ शिवाय १४ यमाय १५ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्या-

होकर तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' कह कर अन्नका त्याग करै। इसी प्रकार से

पन्द्रहों जगह सव्य अपसव्यसे करै, सव्य होकर तीन दफै गायत्री पढ़ै 'मधुव्वाता' इस मन्त्र को ३ दफे पढ़ै 'मधु मधु मधु' ऐसा कहै 'अन्नहीनं' इस श्लोकको पढ़ै।। तिसके बाद कुशा पर बैठ कर

मुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गततत्पुरुष इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ सव्यम् ॥ ततो गायत्रीं त्रिर्जपित्वा ॥ ॐ मधुव्वाता० ३ ॥ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु ॥ ततः कुशेषूपविश्य ॥ पुनर्गायत्रीं ३ मधुव्वाता० ३ ॥ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ ॐ कृणुष्व पाजः प्प्रसितिन्न पृथ्वीं ग्याहि राजेवामवाँ २॥ ऽइभेन ॥ तृष्वीमनुप्प्रसितिन्न्द्रूणा नोस्तासि व्विद्ध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव भ्भ्रमास ऽआशु या पतन्त्यमुस्पृशधृषता शोशुचानः ॥ तपूᳬंष्यग्ने जुह्वापतङ्गा न सन्दितो

फिर पहिले की तरह गायत्री तथा 'मधुव्वाता' तीन दफे पढ़ै, 'मधु मधु मधु' ऐसा कहै 'कृणुष्व पाजः' यह पाँच मंत्र तथा रक्षोघ्नीसूक्त को पढ़े, अपसव्यसे 'उदीरता' इस मंत्रसे जमीन पर तिलों

छिड़के । सव्य होके 'सहस्रशीर्षा' यह १६ मंत्र पुरुष सूक्त पढ़े, और 'आशुः शिशानः' यह
विसृज ठिंवष्ष्वगुल्काः ॥२॥ प्प्रति स्प्पशो ठिंवसृज तूर्णितमो भवा पायुर्ठिंवशो
ऽअस्या ऽअदब्धः । यो नो दूरे ऽअघशꣳ सो यो ऽअन्त्यग्ग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्
॥ ३ ॥ उदग्ने ष्ठिठ् प्प्रत्या तनुष्ष्व न्न्यमित्राँ २॥ ऽओषतात्तिग्ग्महेते ॥
यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो
भव प्प्रतिविद्ध्याद्ध्यस्म्मदा ठिंवष्कृणुष्ष्व दैव्यान्न्यग्ग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि
यातु जूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥५॥ इति रक्षोघ्नमन्त्रान् जपेत् ॥
अपसव्यम्, भूमौ तिलान्विकीर्य ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः
पितरः सोम्यासः ॥ असुँय ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु॥१॥
सव्यम् ॥ 'ॐ सहस्रशीर्षे'ति पुरुषसूक्तस्य १६ मन्त्रान् ॥ ॐ आशुः शिशान०
१२ मन्त्रान्नप्रतिरथम् ॥ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे ! ॥ नमः पिना-
१२ मन्त्र अप्रतिरथ सूक्त पढ़े, 'नमस्तुभ्यं' इस श्लोक को पढ़ै, अपसव्य होके भोजनपात्र के समीप

में तीन कुशासे जल छिड़ककर कुशा रखै, एक दोनियाँ में अन्न घी सहित तिल जल मिलाकर लेप 'अनग्निदग्धाः' इस मन्त्रसे उस कुशे पर अन्न रख देवै, सव्य होकर आचमन करै, भगवानका ध्यान

कहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः। इति पठेत् ॥ अपसव्यम् ॥ उच्छिष्टसन्निधावा-स्तृतकुशत्रयीं भूमिं प्रोक्ष्य, पुटके घृतमधुतिलयुतमन्नं कृत्वा वारिणाऽप्लाव्य ॥ ॐ अनग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ तदन्नं कुशोपरि विकिरेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा आचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ ततः सव्याऽपसव्येन षोडशवेदिकां निर्माय ॥ तन्मध्ये दर्भपिञ्जुलया प्रादेशमात्रां रेखां षोडशस्थानेषु सव्याऽपसव्येन 'अपहते'ति कुर्यात् ॥ ॐ अपहता ऽसुरा रक्षांꣳसि वेदिषदः ॥ दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत् ॥ ततः षोडशरेखोपरि सव्याऽपसव्येन अङ्गारं 'ये रूपाणी'ति आम-

करै तिसके बाद सव्य अपसव्यसे सोलह वेदी बनावै, उन सोलहों वेदियों पर कुशा लेकर दोनों हाथ ॥३१॥
से दश अंगुल की रेखा 'अपहता' इस मन्त्रसे दक्षिणाग्र करै, कुशा उत्तर की तरफ फेंकै सोलह

वेदियों पर 'ये रूपाणि' इस मन्त्रसे आग घुमा कर दक्षिण की तरफ रखै, सव्य अपसव्य से रेखाओं पर मूल के सहित किञ्चित् जड़ कटा हुआ तीन तीन कुशा बिछावे, सव्य होकर 'देवताभ्यः' इस मन्त्र

येत् । ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्च माना ऽसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ॥ परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान्प्रणुदात्यस्मात् ॥ अङ्गारं दक्षिणतः त्यजेत् ॥ ततः सव्याऽपसव्येन रेखोपरि उपमूलसकृल्लूनकुशत्रयं षोडशवेदिकायामास्तृणुयात् ॥ सव्यम् ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः, इति त्रिर्जपेत् ॥ ततः सव्याऽपसव्येन षोडशपुटकेषु नवसु यवजल, दशसु तिलजलगन्धपुष्पाणि एकादशादारभ्य पञ्चदशान्तं यवजलगन्धपुष्पाणि, षोडशसु तिलजलगन्धपुष्पाणि कृत्वा ॥ सव्यम् । त्रिकुशयवजलान्यादाय । अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य

को तीन दफे पढ़ै, सव्य अपसव्यसे सोलहो दोनियोंमें क्रमसे नवें में यव जल चन्दन फूल, दशवें में तिल जल चन्दन फूल, ग्यारहवेंसे पन्द्रहवें तक यव जल चन्दन फूल, सोलहवें में अपसव्य से तिल

जल फूल छोड़ै, सव्य होकर तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्याऽमुकगोत्र' इस वाक्यसे वेदीकी कुशापर

मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते नमः । एवं शिव २ याम्य सपरिवार ३ सोमराज ४ हव्यवाह ५ कव्यवाह ६ काल ७ रुद्र ८ तुरुष ९ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेतपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥१०॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते नमः ॥११॥ एवं ब्रह्मं० १२ विष्णुं० १३ शिवं० १४ यमं० १५॥ अपसव्यं, मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुषपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥१६॥ ततश्चतुर्दशपिण्डान् यवघृतमधुयुतानन्नेन, द्वे तिलघृतमधु-

दोनियाका आधा जल गिरावै आधा बचाकर वेदीके समीपमें रखै, इसी तरहसे सव्य अपसव्यसे

पन्द्रहों स्थानमें देय तिसके बाद सव्य अपसव्य से १४ पिंडा यव घृत मधुके सहित अन्नका बनावै और दो पिंडा तिल घृत मधुके सहित अन्नका बनावै, शहद घी पिंडके ऊपर लगावै, सव्य होकर

युतानन्नेन निर्माय, मधुघृताभ्यामभिघार्य ॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णोरेष पिण्डस्ते नमः ॥ एवं श्रीशिव० २ याम्य सपरिवार० ३ सोमराज० ४ हव्यवाह० ५ कव्यवाह० ६ काल ७ रुद्र० ८ पुरुष० ९ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेत एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यं त्रिकुशयवजलान्यादाय॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णोरेष पिण्डस्ते नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्माणं १२ विष्णुं० १३ शिवं० १४ यमं० १५ ॥ अपसव्यम् मोटकतिलजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य

त्रिकुश यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' इत्यादि कहकर विष्णु पिण्ड देय। इसीतरह से शिव आदि

को सव्य अपसव्यसे देय, तिसके बाद सव्य अपसव्यसे पिण्ड के नीचे के कुशाके जड़में हाथ पोंछै सव्य होकर आचमन करै, भगवान का ध्यान करै, तिसके बाद सव्य अपसव्यसे उत्तर की तरफ

मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गततत्पुरुष एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ ततः सव्याऽपसव्येन कुशमूले करं प्रोञ्छ्य ॥ सव्यम् ॥ आचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ ततः सव्याऽपसव्येन उत्तराभिमुखो भूत्वा श्वासं नियम्य, दक्षिणतस्त्यजेत् ॥ ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वम् ॥ अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ इति पठेत् ॥ ततः सव्यं त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते नमः ॥ १ ॥ एवं श्रीशिवपिण्डे० २ याम्य सपरि-

बाँये से श्वाँस खींचकर दक्षिणके तरफ छोड़ै, 'अत्र पितर' इस मन्त्र से, तिसके बाद सव्य होकर तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' इस वाक्यको कहकर विष्णुपिण्ड पर प्रत्यवनेजन जल जो कि अवनेजन का आधा बचा हुआ है सो देना, इसीप्रकार से सव्य अपसव्यसे पन्द्रहों पिण्ड

पर देना, सव्य होकर आचमन करै और सव्यसे दोनों हाथमें सूत्र लेकर 'एतद्वो वासः' इस मन्त्र से

वारपिण्डे० ३ सोमराजपिण्डे० ४ हव्यवाहपिण्डे० ५ कव्यवाहपिण्डे० ६ कालपिण्डे० ७ रुद्रपिण्डे० ८ पुरुषपिण्डे० ९ । अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेतपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते नमः ॥११॥ एवं ब्रह्मपिण्डे० १२ विष्णुपिण्डे० १३ शिवपिण्डे० १४ यमपिण्डे० १५ ॥ अपसव्यम् । मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गततत्पुरुषपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥१६॥ सव्यम् ॥ आचम्य ॥ ततः सव्याऽपसव्येन उभाभ्यां पिण्डोपरि 'एतद्वो वासः' इति सूत्राणि दद्यात् ॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुर-

इसीप्रकारसे सव्य अपसव्यसे पन्द्रहों पिण्डपर वस्त्रका संकल्प करै, तिसकेबाद सव्यअपसव्य सोलहोंसे

मुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डे एतद्वासस्ते नमः ॥ १ ॥ एवं श्रीशिवपिण्डे० २ याम्यसपरिवारपिण्डे० ३ सोमराजपिण्डे० ४ हव्यवाहपिण्डे० ५ कव्यवाहपिण्डे० ६ कालपिण्डे० ७ रुद्रपिण्डे० ८ पुरुषपिण्डे० ९ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेतपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डे एतद्वासस्ते नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्मपिण्डे० १२ विष्णुपिण्डे० १३ शिवपिण्डे० १४ यमपिण्डे० १५ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गततत्पुरुषपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् १६

पिंडपर चढ़ावै, सव्यहोकर तीनकुशा यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' इत्यादि वाक्य कहकर संकल्प करै

बाद चुपचाप सोलहों पिण्ड पर चन्दन, फूल, धूप, दीप, पान, सोपाड़ी चढ़ावै और पिण्ड से बचा हुआ अन्न

ततः सव्याऽपसव्येन पिण्डेषु तूष्णीं गन्धपुष्पादिकं दद्यात् ॥ ततः सव्याऽपसव्येन पिण्डशेषाऽन्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् ॥ ततः सव्याऽपसव्येन भोजनपात्रेषु शिवा आपः सन्तु, इति जलम् । सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम् । अक्षतं चारिष्टं चास्तु, इति तन्दुलान् क्षिपेत् ॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ते नमः ॥ १ ॥ एवं श्रीशिवश्राद्धे दत्तै० २ याम्यसपरिवारश्राद्धे दत्तै० ३ सोमराजश्राद्धे दत्तै० ४ हव्यवाहश्राद्धे दत्तै० ५ कव्यवाहश्राद्धे दत्तै० ६ कालश्राद्धे दत्तै० ७ रुद्रश्राद्धे दत्तै० ८ पुरुषश्राद्धे दत्तै० ९ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेतश्राद्धे दत्तै तदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्

पिण्डके समीपमें रखै, सव्य अपसव्यसे सोलहो भोजनपात्रपर क्रमसे जल फूल अच्छत डालै, सव्य होकर

तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' कह कर जल छोड़े, इसी प्रकार से पन्द्रहों भोजन पात्र पर देना, सव्य होकर 'अघोराः' इस वाक्य को कहकर पिण्डों पर पूर्वाग्र जलधारा देय बाद 'गोत्रन्नो'

॥ १० ॥ सव्यम् ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ते नमः॥ ११ ॥ एवं ब्रह्मश्राद्धे दत्तै० १२ विष्णुश्राद्धे दत्तै० १३ शिवश्राद्धे दत्तै० १४ यमश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादि० १५ ॥ अपसव्यम् ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गततत्पुरुषश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥१६॥ सव्यम् ॥ अघोराः पितरः सन्तु,इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ प्रार्थना ॥ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो माव्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु ॥ मा च याचिष्म कञ्चन ॥

इस मन्त्र से प्रार्थना करै, तिसके बाद सव्य अपसव्य से पिण्डों पर पवित्री के सहित तीन तीन

कुशा दक्षिणाग्र रखै, दोनियामें जल या दूध लेकर पिण्ड पर जो कुशा रखा है उस पर दक्षिणाग्र देय, सव्य अपसव्य से पिण्ड सूँघ कर उठावै, पिण्ड के नीचे का कुशा और जो कि वेदी पर

एताः सत्याः आशिषः सन्तु ॥ सन्त्वेताः सत्याः आशिषः ॥ ततः सव्याऽपसव्येन पिण्डोपरि सपवित्रान्कुशानास्तीर्य ॥ पुटकादिस्थितजलेन (पयेन वा) कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां (पयधारां वा) दद्यात् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ॥ स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ ततः सव्याऽपसव्येन अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य ॥ दक्षिणासङ्कल्पः ॥ त्रिकुशयवजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धप्रतिष्ठासिध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ एवं श्रीशिव द० २ याम्यसपरिवार द० ३ सोमराज द० ४ हव्यवाह

अंगार घुमा कर दक्षिण में रखा है सो दोनों दूसरे अग्नि में डालै, सव्य अपसव्य से अर्घपात्र जो

सीधा है उसको ‍िहला दे जो उलटा है सो सीधा कर दे और सव्य अपसव्य से सोलहो पिण्ड की
द० ५ कव्यवाहदक्षिणां० ६ काल द० ७ रुद्र द० ८ पुरुष द० ९ ॥
अपसव्यम् ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य
मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रेतश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्राय अमुक-
शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे १० ॥ सव्यं त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥
अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य षोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धप्रतिष्ठार्थं
दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमत्सृजे ॥ ११ एवं ब्रह्मद०
१२ विष्णु० द० १३ शिवद० १४ यमद० १५ ॥ अपसव्यम् ॥ मोटक-
तिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्रा-
द्धान्तर्गततत्पुरुषश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय
दातुमहमुत्सृजे ॥ सव्यं आचम्य ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव
दक्षिणा देय, सव्य होकर आचमन करै 'देवताभ्यः' इस मंत्र को तीन दफे पढ़ै, अपसव्य होकर दोनों

हाथ से रत्नादीप को बुझा देवै, हाथ पैर धोकर सव्य होके आचमन करै। 'प्रमादात्' इसको पढ़कर विष्णु का स्मरण करै।

च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ उभाभ्यां हस्ताभ्यां रत्नादीपं निर्वाप्य ॥ हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य ॥ सव्यम्, आचम्य । ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवे नमः, इति त्रिर्जपेत् ॥ इति मध्यषोडशीप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ वृषोत्सर्गप्रारम्भः ॥ अथ वृषोत्सर्गादिकारिका ॥ अशौचान्त-
७ द्वितीयेऽह्नि शय्यां दद्यात् विचक्षणः ॥ नानावर्णैर्वितानैश्च हेमपट्टि-

अब वृषोत्सर्ग इत्यादि की कारिका (याने अनुक्रम) कहते हैं—दसवाँके दूसरे रोज शय्यादान करै वह कैसी शय्या हो कि अनेक वर्णों के वस्त्र और सोने की पट्टी से अलंकृत हो फल गहना ऐना

फल इत्यादि के सहित हो और उसी प्रकारसे फल वस्त्रके सहित सोनेके पुरुष (विष्णु) का दान करै और द्विज (ब्राह्मण) दम्पति (अर्थात् ब्राह्मण और उसकी स्त्री) का पूजन अनेक प्रकार का कपड़ा वो गहना देकर करै। बाद वृषोत्सर्ग करै। कपिला गौका दान करै। इसके बाद एकोद्दिष्ट

रलङ्कृतैः ॥ पुष्पाद्यैर्भूषणैराढ्यां दर्पणादिसमन्विताम् ॥ काञ्चनं पुरुषं तद्व-त्फलवस्त्रसमन्वितम् ॥ पूजयेद् द्विजदाम्पत्यं नानाभरणभूषणैः ॥ वृषोत्सर्गं प्रकुर्वीत देया च कपिला शुभा ॥ एकोद्दिष्टं ततः श्राद्धं ततः सान्नोदकं तथा ॥ मासिकं च ततः श्राद्धं सपिण्डनमतः परम् ॥ वृषोत्सर्गे मण्डपवेदीप्रमाणं कुण्डसिद्धौ ॥ दशहत अथवा १२ हस्त चतुष्कोण अधम, द्वादश चतुर्दश हस्त मध्यम, षोडश अष्टादश हस्त उत्तम ॥ तत्र षोडशहस्तायाम-

(एकादशाह) श्राद्ध करै और सीधा जल भरा घड़ा देय। तब मासिक श्राद्ध (याने षोडशी) करै। इसके बाद सपिण्डन श्राद्ध करै। अब कुण्डसिद्धि के अनुसार मंडप वेदी इत्यादि का प्रमाण कहते हैं- दस हाथ और १२ हाथका चौकोर मंडप अधम होता है और १२ हाथ १४ हाथका चौकोर मंडप

मध्यम और १६ हाथ १८ हाथका चौकोर मंडप उत्तम होता है। यहाँ पर उत्तम मंडप १६ हाथ का ग्रहण करे, १ हाथ ऊँचा अथवा आधा हाथ ऊँचा बनवावे, तिसमें १६ खंभा लगावे ४ खंभा ८ हाथका बीचमें १२ खंभा बाहर ५ हाथका लगावे। और चारों दिशा में एक एक द्वार २

विस्तीर्णां चतुरस्रां हस्तोच्छ्रितामर्धहस्तोच्छ्रितां वा कुर्यात् ॥ तत्र द्वादशस्तम्भान्पञ्चहस्तान् चतुरः स्तम्भानष्टहस्तान् दीर्घान्कृत्वा चतुर्द्वारं तु वस्वङ्गुलोत्तरहस्तद्वयं विस्तीर्णं कुर्यात्। तत्र भूमिं उदग्दक्षिणं पूर्वापरं च त्रिभागं कृत्वा मध्ये हस्तोच्छ्रितां विष्णुवेदिं प्रकल्प्य ॥ ईशान्यां रुद्रवेदीं निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये प्रेतमातृवेदिं हस्तपरिमितां चतुरस्रां हस्तोच्छ्रितां च कुर्यात् ॥

हाथ ८ अंगुल का चौड़ा लगाना। आगे मंडपको सूत से नापकर दक्षिण उत्तर पूरब पश्चिम से तीन तीन हिस्सा करना। सब नव कोठा भया मध्य के कोठामें विष्णुवेदी १ हाथ अथवा आधा हाथ ऊँची बनाना। ईशानके कोठामें १ रुद्रवेदी बनाना १ हाथ चौड़ी १ हाथ लम्बी १ हाथ ऊँची, इसी प्रकारसे नैर्ऋत्य कोण और पश्चिमके बीचमें प्रेतमातृ की वेदी बनावै। विष्णु वेदी के

उत्तर तरफके कोठामें होम की वेदी १ हाथ लम्बी चौड़ो ४ अंगुलकी ऊँची मंडपके अग्नि कोणसे लेकर नैऋत्य कोण तक १४ वेदी एक बित्ताको चौदह यमके वास्ते बनावे। तिसके बाद मंडपके चारों द्वार पर दो दो कलशके वास्ते एक एक हाथ की ८ वेदी और मंडप के बाहर दशदिक्पाल के

विष्णुवेद्युत्तरतः हवनवेदिं हस्तायामविस्तारौ चतुरङ्गुलोच्चां कुर्यात् ॥ मण्डपे अग्निकोणादारभ्य नैऋत्यान्तं चतुर्दशवेदीर्वितस्तिमात्रं चतुर्दशयमार्थंकुर्यात्॥ ततो द्वारपालकलशार्थं प्रतिद्वारे द्वे द्वे वेद्यौ कुर्यात् । ततो मण्डपाद्बहिः दश-दिक्पालार्थं दिशां प्रतिदिशां हस्तपरिमितां दिग्वेदीं कृत्वा शरकण्डैः कटैर्वा आच्छादयेत् ॥ मण्डपस्य दक्षिणे वैतरण्यर्थं खातं चतुर्हस्तदीर्घं द्विहस्त-विस्तृतं एकहस्तमितं खातं च कुर्यात् ॥ वैतरणीसमीपे इक्षुदण्डमयनौकां

वास्ते १० वेदी एक एक हाथकी ४ अंगुल ऊँची बनावै। चटाई वो सरपत से छावै। मण्डपके दक्षिण तरफ वैतरणीके वास्ते ४ हाथ लम्बा २ हाथ चौड़ा १ हाथ गहरा गड़हा खने। वैतरणी के समीप में ऊँखकी नाव बनाकर रखै। विष्णु वेदी पर शय्या रखै। मय सामानके ध्वजा पताकाको कहते

हैं। २ हाथ चौड़ा ५ हाथ लंबा ध्वजा और १ हाथ चौड़ा ७ हाथ लंबा पताका। इसका रंग पूव दिशाके क्रमसे कहते हैं। पीला लाल काला पीला सफेद धूवां का रंग सफेद सफेद लाल मेघवर्ण

स्थापयेत् ॥ विष्णुवेद्युपरि सोपस्करां शय्यां निधाय ॥ ध्वजपताका-प्रमाणम् ॥ हस्तद्वयायती पञ्चहस्तदीर्घा ध्वजा एकहस्तायती सप्तहस्ता दीर्घा पताका ॥ पीताऽरुण-कृष्ण-नील-श्वेत-धूम्र-श्वेत-श्वेत-रक्त-मेघवर्ण-अथवा वितस्त्यायती हस्तदीर्घा दशहस्त-दण्डेषु दद्यात् ॥ ग्रन्थविस्तरभयान्नाऽत्र लिख्यते ॥ श्राद्धसङ्ग्रहे द्रष्टव्यः ॥

(अथ प्रयोगः) सव्यम्, आचम्य ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इत्यात्मानं

(काला)। अथवा किसी आचार्यका मत है कि-१ हाथ लम्बा १ बित्ता चौड़ा उसी रंगका १० हाथके बाँस पर लगावे। यहाँ पर ग्रन्थविस्तारके भयसे थोड़े में लिखा। विशेष श्राद्ध संग्रह में लिखा है। अब प्रयोग कहते हैं-सव्य होकर आचमन करै। 'अपवित्रः' इस मंत्रसे अपने ऊपर और

पूजनसामग्री पर कुशा से जल छिड़कै। हाथ में तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि' वाक्य कहकर प्रतिज्ञा संकल्प करै। इसके बाद द्वारपालपूजनका संकल्प करै। बाद पंचगव्य से

पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य ॥ हस्ते त्रिकुशयवजलान्यादाय ॥ अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य वृषोत्सर्गकर्माऽहं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन यथालब्धोपचारैः अष्टौ द्वारपालानां पूजनमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य प्रथमतः पञ्चगव्येन 'आपो हि ष्ठेति' मण्डपवेदीप्रोक्षणम् ॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ॥ उशतीरिव मातरः ॥ ॐ तस्मा ऽअरङ्ग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथा च नः ॥ ततो गन्धाऽक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा ॐ मण्डपाऽधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ (अथ द्वारपालपूजनम्) कलशौ द्वौ प्रतिष्ठाप्य तस्यो-

'आपो हि ष्ठा' मंत्रको कहकर मंडप वेदी पर छिड़कै। चन्दन अक्षत फूल हाथमें लेकर मंडपके अधि-

ष्ठातृ देवताके निमित्त भूमि पर छोड़ै। अब ८ द्वारपालकलश का पूजन कहते हैं। पहिले पूर्व के

परि पूर्वद्वारपालाभ्यां नमः, इति नाममन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ एवं दक्षिणपश्चिमोत्तरद्वारान् यथालब्धोपचारैः क्रमेण सम्पूज्य ॥ (अथ दशदिक्पालपूजनम्) देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य वृषोत्सर्गकर्मणि इन्द्रादि-दशदिक्पालानां पूजनमहं करिष्ये॥ ततः कलशस्थापनविधिना कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि इन्द्रं पूजयेत् ॥ एह्येहि सर्वाऽमरसिद्धसङ्घैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ! ॥ संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन्नमस्ते, इति ध्यात्वा ॥ गजस्कन्धसमारूढं वज्रहस्तं पुरन्दरम् ॥ आवाहयामि तमहं सुरराजं शचीपतिम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ स योषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ॥ जहि शत्रूँ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ ॐ इन्द्राय नमः, इति पाद्यादिभिः

द्वार पर कलश स्थापन करके कलश के ऊपर 'पूर्वद्वारपालाभ्यां नमः' इस मन्त्र से पूजन करै

इसी तरह से दक्षिण पश्चिम उत्तर के द्वारों पर भी नाम मन्त्र से पूजन करै। आगे दशदिक्पाल

पूजयेत् ॥ इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः ॥ शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै तित्यं नमो नमः, इति प्रार्थना ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इति मन्त्रेण पीतपताकां दद्यात् । तत्र कुमुदात्ताय नमः, इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं तेनमः ॥ बलिं भक्त क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु॥१॥ ततोऽग्नये गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि अग्निं पूजयेत् ॥ एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवीरैरभितोभिजुष्ट ॥ संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यात्वा ॥ शक्तिहस्तं ज्वलद्रूपं छागारूढं सुरोत्तमम् ॥ आवाहयामि ज्वलनं पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥इत्यावाहनम् ॥ ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव

का पूजन संकल्पपूर्वक मूल में लिखे हुए मन्त्रों से करे।

देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव॰ व्रते ॥ ॐ अग्नये नमः ॥ इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ सर्वतेजोमयश्चैव रक्तवर्णो महाबलः ॥ शक्तिहस्तो महावीर्यो वैश्वानर ! नमोऽस्तु ते ॥ इति प्रार्थना ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ॥ अपाꣳ रेताꣳसि जिन्न्वति ॥ इति मन्त्रेण रक्तपताकां दद्यात्, तत्र कुमुदाक्षं पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः। बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥२॥ दक्षिणे गत्वा ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि यमं पूजयेत् ॥ एह्येहि वैवस्वत धर्मराज ! सर्वाऽमरैरर्चितधर्ममूर्ते ! । सुराऽसुराणामधिपप्रजेश ! शिवाय तुभ्यं सततं नमो नमः ॥ इति ध्यात्वा ॥ महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ दण्डहस्तः कृष्णवर्णो धर्माध्यक्षो महाबलः ॥ प्रेताधिपतये नित्यं यज्ञराजाय ते नमः, इति प्रार्थना ॥ ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सᳬ स्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ इति मन्त्रेण कृष्णपताकां दद्यात् ॥ तत्र पुण्डरीकाक्षाय नमः, इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ यमाय साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः। बलिं भक्ष कतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥३॥ नैर्ऋत्ये गत्वा। कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि निर्ऋतिं पूजयेत् ॥ एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशाल-वेतालपिशाचसङ्घैः ॥ ममाऽध्वरं रक्ष शुभाधिनाथ! लोकेश्वर! त्वं भगवन्नमस्ते। इति ध्यानम् ॥ यो वै यक्षाधिपो देवो नैर्ऋतो नीलविग्रहः ॥ महाखड्गधरो

नित्यं तस्मै निर्ऋतये नमः ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ असुन्न्वन्तमयजमान-
मिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्न्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो
देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ निर्ऋतये नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥
प्रार्थना ॥ निर्ऋतिस्तु पुमान्कृष्णः सर्वरक्षोऽधिपो महान् ॥ खड्गहस्तो महा-
सत्वस्तस्मै निर्ऋतये नमः ॥ ॐ एष ते निर्ऋते भागस्तञ्जुषस्व स्वाहा ऽग्नि-
नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः
स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा
मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य ऽउत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य ऽउपरि
सद्भ्यो वस्वद्भ्यः स्वाहा ॥ इति नीलपताकां दद्यात् ॥ तत्र वामनाय नमः
इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सश-
क्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य

कुशलं कुरु ॥४॥ ततः पश्चिमे गत्वा ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि वरुणं पूजयेत् ॥ एह्येहि पापोगणनायकस्त्वं गणेशपर्जन्यसहाऽप्सरोभिः ॥ विद्याधरेन्द्रोरगगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानमावाहनं च ॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्न्यसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ वरुणः सोऽचलो विष्णुः पुरुषो निम्नगाधिपः ॥ पाशहस्तो महातेजास्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ इति श्वेतपताकां दद्यात् । तत्र शङ्कुकर्णाय नमः, इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ५ ॥ ततो वायवे गत्वा कलशं

प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि वायुं पूजयेत् ॥ एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः ॥ प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानम् ॥ सर्वप्राणाधिपो नित्यं सर्वजन्तुव्यवस्थितः ॥ ध्वजहस्तो मेघवर्ण-स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभि-रध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ व्वायो ऽस्मिन्त्सवने मादयस्व यूय-म्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ वायवे नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ वातस्तु सर्ववर्णो यः सर्वगन्धवहः शुचिः ॥ पुरुषो ध्वजहस्तश्च तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वा न्त्सोमपीतये ॥ इति धूम्रपताकां दद्यात् ॥ तत्र सर्वनेत्राय नमः, इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु

॥६॥ उत्तरे गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि सोमं पूजयेत् ॥ एह्येहि यज्ञेश्वर ! यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम् ॥ सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ इति ध्यानम् ॥ यक्षस्कन्धसमारूढं गदाहस्तं महाबलम् ॥ आवाहयामि धनदं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ व्वयꣳ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु विब्भ्रतः ॥ प्प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ सोमाय नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ गौरस्त्वं च युगे जातः सर्वौषधिसमन्वितः ॥ नक्षत्राधिपतिः सौम्यस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा॥ इति श्वेतां पताकां दद्यात् ॥ तत्र सुमुखाय नमः ॥ इति पूजयेत ॥ ततो बलिदानम् ॥ कुबेराय वा सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय

सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः ॥ बलिं भक्तं कृतु रक्ष यज-
मानस्य कुशलं कुरु । ७ ॥ ततो ईशाने गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य ॥ तस्योपरि
शिवं पूजयेत् । एह्येहि सर्वेश्वर ! सिद्धसङ्घैस्त्रिशूलखट्वाङ्गधरेण सार्द्धम् ॥
यज्ञेज्य यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानम् ॥ वृष-
स्कन्धसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् आवाहयामि चेशानं पूजेयं प्रतिगृ-
ह्यताम् ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥
पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ ईशानाय
नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ ईशानः पुरुषः शुक्लः सर्वदे-
वाधिपो महान् ॥ शूलहस्तो विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ईशा वास्य-
मिदꣳ सर्व्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत् ॥ तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य-
स्विद्धनम् ॥ इति श्वेतपताकां दद्यात् ॥ तत्र ईशानाय नमः, इति पूजयेत् ॥

ततो बलिदानम् ॥ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः ॥ बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥८॥ नैर्ऋत्यवरुणयोर्मध्ये गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि अनन्तं पूजयेत् ॥ एह्येहि पातालधरामरेन्द्र! नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान! ॥ यक्षोरगेन्द्राप्सरलोकसङ्घैरनन्त-रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ इति ध्यानम् ॥ निःशेषजगदाधारमशेषसुरपूजितम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ इदं योऽनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम् ॥ पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि ॥ यच्छानः शर्म्म सप्रथाः, इति मेघवर्णां पताकां दद्यात् ॥ तत्र धात्रे नमः, इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाष-
भक्तबलिं ते नमः ॥ बलिं भक्ष कतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥८॥ ईशाने-
न्द्रयोर्मध्ये कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि ब्रह्माणं पूजयेत् ॥ एह्येहि विश्वाधिपते
सुरेश लोकेश ! सार्द्धं पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्य धातस्त्वमितप्रभावो विश्वाधरं
नः सततं शिवाय ॥ इति ध्यानम् ॥ श्वेतहंससमारूढं पद्मयोनिं जगद्गुरुम् ॥
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं
प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः
शतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ॐ ब्रह्मणे नम इति पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥
प्रार्थना ॥ पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदाधारः पितामहः ॥ यज्ञाध्यक्षश्च सततं तस्मै
नित्यं नमो नमः ॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥
यः शंसते स्तुवते धायिपज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्माँ२ ऽअवन्तु देवाः ॥ इति पञ्च-

रङ्गं श्वेतं रक्तं वा पताकां दद्यात् ॥ तत्र विधात्रे नम इति पूजयेत् ॥ ततो बलिदानम् ॥ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः ॥ बलिं भक्ष कतु रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥१०॥ इति दिक्पालपूजनम् ॥ अथ चतुर्दशयमपूजनम् ॥ आग्नेयनैर्ऋत्यान्तं पङ्क्तिरूपेण चतुर्दश कलशोपरि तान्संस्थाप्य पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ यमाय नमः यमं० ॥१॥ ॐ धर्मराजाय० धर्मराजं० ॥२॥ ॐ मृत्यवे० ॐ मृत्युमा० ॥ ३ ॥ ॐ अन्तकाय० अन्तकमा० ॥ ४ ॥ ॐ वैवस्वताय० वैवस्वतमा० ॥५॥ ॐ कालाय० कालं० ॥६॥ ॐ सर्वभूतक्षयाय० सर्वभूतक्षयमा० ॥७॥ ॐ औदुम्बराय० औदुम्बरमा० ॥ ८ ॥ ॐ दध्नाय० दध्नमा० ॥ ९ ॥ ॐ नीलाय० नीलं० ॥ १० ॥ ॐ परमेष्ठिने० परमेष्ठिनं० ॥११॥ ॐ वृकोदराय० वृकोदरं० ॥ १२ ॥ ॐ चित्राय नमः चित्रं० ॥ १३ ॥ ॐ चित्रगु-

अग्निकोणसे नैर्ऋत्यकोण तक १४ कलशोंके ऊपर क्रमशः १४ यमका नाम मंत्रसे पूजन करै।

'त्रैलोक्ये यानि भूतानि' इससे प्रार्थना करै। तिसके बाद मंडपके भीतर पूर्व मुँह खड़ा होकर यजमान हाथसे फूल लेके 'देव दानव' इस मंत्रसे सबको पुष्पांजलि देवे। अब एकादशाहके वास्ते ब्राह्मणको

सुप्रा० चित्रगुप्तं ॥ १४ ॥ इति नाममन्त्रैरावाह्य पूजयेत् ॥ प्रार्थना ॥ त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावरजङ्गमानि च। ब्रह्म-विष्णु-शिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि वै ॥ ततो मण्डपाभ्यन्तरे यजमानः गृहीतपुष्पाञ्जलिः पूर्वाभिमुखं तिष्ठेत् ॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च॥ सर्वे ममाऽध्वरे रक्षां कुर्वन्त्वेते मुदान्विताः ॥ इति सर्वेभ्यः पुष्पाञ्जलिं त्यजेत्॥अथैकादशाहश्राद्धार्थं निमन्त्रणादि ॥ तत्राशौचान्तदिने निरामिषो भूत्वा एकवारं भुक्त्वा रात्रौ सर्वजनगृहे विप्रनिवेशनम् । गोमयोपलिप्तदक्षिणप्रवणभूमौ ब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवेश्य कृतापसव्यो दक्षिणाभिमुखः

निमंत्रण करै। तिसका क्रम यह है कि–दसवाँके रोज यजमान केवल एकबार भोजन करै। रात्रिमें सब लोगोंके संग ब्राह्मण के घर जाय, दक्षिण को ढालू रहै ऐसी जमीन पर ब्राह्मण को उत्तर मुँह

बैठाकर अपसव्य तथा दक्षिण मुँह होकर बायां पैर मोड़कर 'गतोऽसि' को पढ़ै। फूल चन्दन पान

पातितवामजानुः। गतोऽसि दिव्यलोके त्वं कृतान्तविहितात्पथः। मनसा वायुभूतेन विप्रे त्वाहं नियोजये ॥ पूजयिष्यामि भोगेन, इति प्रेतोद्देशेन पठित्वा पुष्पचन्दनताम्बूलानि ब्राह्मणाय दत्वा ब्राह्मणदक्षिणजानुं स्पृष्ट्वा। अस्यां रात्रौ अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धकरणाय भवन्तं ब्राह्मणमहमामन्त्रये, इति यजमानः ॐ आमन्त्रितोऽस्मि, इति ब्राह्मणेनोक्ते। ततो यजमानः पठेत्। अक्रोधनेन शौचेन सततं ब्रह्मवादिना। भवितव्यं तु भवता मया च श्राद्धकारिणा ॥ सर्वायासविनिर्मुक्तेन कामक्रोधविवर्जितेन च भवता स्वस्तिमता भवितव्यं श्राद्धकर्मणि, इति ब्राह्मणमुद्दिश्य पठेत् ॥ यद्यविघ्नेन रजनी यास्यति तदा सर्वमेतत्करिष्यामि, इति यजमानेनोक्ते ॥ इति ब्राह्मणं

ब्राह्मणको देकर ब्राह्मणका घुटना छूकर 'अस्यां रात्रौ' इसको पढ़ै। 'आमन्त्रितोऽस्मि' यह ब्राह्मण कहै, यजमान 'अक्रोधनेन' इसको पढ़ै, पहिले दिन निमंत्रण करै अथवा उसी रोज निमंत्रण करै।

अब एकादशाहकर्मको कहते हैं। स्नान करके नित्य क्रिया कर, नदीके तीर पर अथवा घरके दर-
वाजे पर, श्राद्धकी भूमि की कल्पना कर के पञ्चगव्यसे लीपकर, जलती हुई अंगार को घुमाकर,

निमन्त्र्य पर्वदिने तदह्नि वा ॥ अथैकादशाहकृत्यम् ॥ स्नात्वा कृतनित्य-
क्रियो नदीतीरे गृहे वा श्राद्धभूमिं परिकल्प्य पञ्चगव्येनोपलिप्य ज्वलदङ्गारैः
संशोध्य गौरमृत्तिकया आच्छाद्य तिलैः सर्षपैश्च विकिरेत् ॥ परितः छागान्ब-
न्धयित्वा ॥ नूतनमृण्मयभाण्डे स्वयं पाकमारभेत् ॥ तत्राचान्तः पूर्वाभिमु-
खोदङ्मुखो वा शय्यां दद्यात् ॥ अथ ब्राह्मणवरणम् ॥ अद्याऽशौचान्तद्विती-
येऽह्नि कर्तव्यशय्यादानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकशर्माणं ब्राह्मणं शय्याप्रति-
गृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ ततः सोपकरणशय्यायै
नमः ॥ ब्राह्मणाय नमः ॥ इति पुष्पाक्षतैः त्रिः सम्पूज्य ॥ इमां सोपकरणां

सफेद मिट्टी बिछाकर, तिल सरसों फेंकै, बकरा बांधै, नयी मिट्टीके बरतनमें पाक बनावै। आचमन
कर पूरब मुँह या उत्तर मुँह बैठाकर शय्या देय पहिले ब्राह्मणको सङ्कल्प करके वरण देवे।'वृतोऽस्मि'

ब्राह्मण कहैं। 'सोपकरणशय्यायै नमः ब्राह्मणाय नमः' ऐसा कहकर फूल अक्षतसे तीन दफे पूजनकरे 'इमां सोपकरणां शय्यां ददानि' कहकर ब्राह्मण के हाथमें जलदेवे। 'ददस्व' ब्राह्मण कहै तिसके बाद शय्या पर जल छिड़के। तीन कुशा तिल जल लेकर 'अद्याशौचान्त' वाक्य को कहकर शय्या का

शय्यां ददानि, इति द्विजकरे जलदानम् ॥ ददस्वेति प्रतिवचनम् ॥ ततो वारिणा शय्याभिषेचनं कुर्यात् । कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गे अक्षय्यसुखफलप्राप्तिकामः इमां सोपकरणां शय्यां विष्णुदैवत्यां अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ इति विप्रकरे दद्यात् ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो दक्षिणाद्रव्यमादाय ॥ अद्य कृतैतत्सोपकरणशय्यादानप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वति० ॥ सोपकरणां शय्यां स्पृशेत् ॥ तत आचम्य ॐ फलवस्त्रसमन्वित-काञ्चनपुरुषाय नमः ॥

दान करके ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहैं बाद तीन कुशा तिल जल दक्षिणा द्रव्य लेकर 'अद्य कृतैतत्' इस वाक्यसे दक्षिणा ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'स्वस्ति' कहैं ब्राह्मण शय्या को छुवै

तिसके बाद आचमन करै कांचन पुरुष वो ब्राह्मण को चन्दन फूल इत्यादि से ३ दफे पूजन करै 'इदं फलवस्त्रसमन्वितं काञ्चनपुरुषं ददानि' कहकर ब्राह्मण के हाथ में जल दे ब्राह्मण कहै 'ददस्व'

ॐ ब्राह्मणाय नमः ॥ इति पुष्पाक्षतैः त्रिःसम्पूज्य ॥ इमं फलवस्त्रसमन्वितं काञ्चनपुरुषं ददानि, इति द्विजकरे जलदानम् ॥ ददस्वेति प्रतिवचनम् ॥ ततो वारिणा देयद्रव्यसेचनम् ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गप्राप्तिकाम इदं फलवस्त्रसमन्वितं काञ्चन-पुरुषं विष्णुदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इति द्विजकरे दद्यात् ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ अद्य कृतैतत्फलवस्त्रसमन्वितकाञ्चनपुरुषदानप्रतिष्ठार्थ-मिदं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

बाद कांचन पुरुष पर जल छिड़कै। तीन कुशा तिल जल लेकर 'अद्याऽशौचान्त' इत्यादि पढ़कर कांचन पुरुषको दानकर ब्राह्मणको दान देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। फिर तीन कुशा तिल जल

दक्षिणा द्रव्य लेकर 'कृतैतत्' इस वाक्य को पढ़कर ब्राह्मण को दक्षिणा देय ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै वो कांचनपुरुष को छूवै फिर आचमन करके द्विजदम्पती का संकल्पपूर्वक पूजन करै इसके

ॐ स्वतीति प्रतिवचनम् ॥ ततः काञ्चनपुरुषं स्पृशेत् ॥ आचम्य ॥ कुशत्रय-तिलजलान्यादाय ॥ अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गप्राप्तिकामो द्विजदम्पतिपूजनमहं करिष्ये ॥ ततो द्विजदम्पतीभ्यां नमः इति सम्पूज्य ॥ ततः सूपौदनदानम् । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकाङ्क्षी स्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामः इमानि सूपौदनपञ्चपात्राणि भोजनपाकार्थं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ अद्य कृतैतत्सूपौदनपञ्च-पात्रदानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्म-

बाद (सूपौदन) याने पाँच बर्तन का दान करै । भोजन पाकके लिये ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै । बाद तीन कुशा तिलजलदक्षिणालेकर संकल्प पढ़कर ब्राह्मणको दक्षिणा देवे ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै

यजमान दोनोंको नमस्कार करै । अब वृषोत्सर्गका क्रम कहते हैं-आचमनकर तीन कुशा तिल जल
णाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ तौ नमस्कुर्यात् ॥

अथ वृषोत्सर्गः ॥ तत आचान्तः पूर्वाभिमुख उपविश्य, कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मोक्षकामः सोपकरणवत्सतरीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गमहं करिष्ये ॥ (नीलवृषप्राप्तौ नीलपदप्रक्षेपः) तत्राऽऽदौ ईशाने रुद्रवेद्यां कलशं स्थापयेत् ॥ ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि ॥ इति सप्तधान्यं विकिरेत् ॥ ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा

६ विशंत्विन्दवः ॥ पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशतान्द्रयिः । इति धान्योपरि कलशं स्थापयेत् ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भ-
लेकर 'अद्याऽशौचान्त' पढ़कर वृषोत्सर्गका सङ्कल्प करै । यदि नीलवृष होय तो 'नीलवृषोत्सर्ग'

सङ्कल्प में कहै, पहिले ईशान में रुद्रवेदी पर कलश स्थापनकी विधि से कलशका स्थापन करै

नमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्न्यसि व्वरुणस्य ऽऋ-
तसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋत सदनमासीद ॥ इति कलशे जलं पूरयेत् ॥ ॐ त्वां
गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्न्य-
क्ष्मादमुच्यत ॥ इति कलशे गन्धं क्षिपेत् ॥ ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जाता
देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ॥ मनैनु व्वभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥ इति कलशे
सर्व्वौषधीः क्षिपेत् ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि एवा नो
दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ इति कलशे दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत् ॥ ॐ अश्वत्थे
वो निषदनम्पर्णे वो वसतिष्कृता ॥ गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥
इति कलशे पञ्चपल्लवान् क्षिपेत् । ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ इति कलशे सप्तमृत्तिकां क्षिपेत् ॥ ॐ याः फलि-

उस पर वरुण का पूजन करै ।

नीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥ इति कलशे पूगीफलं क्षिपेत् । ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्या-न्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति कलशे पञ्चरत्नानि क्षिपेत् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ॥ स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति कलशे हिरण्यं क्षिपेत् ॥ ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ॥ व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसोः ॥ इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत् ॥ ॐ पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत व्वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जꣳ शतक्रतो ॥ इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् ॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥ इति वरुणमावाह्य सम्पूज्य तस्योपरि रुद्रं पूजयेत् ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव

'नमस्ते रुद्र' इस मन्त्र से उसी कलश पर रुद्र का षोडशोपचार से पूजन करै ।

तिसके बाद पुरुषसूक्त 'सहस्रशीर्षा १६ मन्त्र, नमस्ते रुद्राध्याय ६६ मन्त्र' पढ़ै ।

ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि ॥
ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु॥
विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामोँ प्रतिष्ठ ॥ अस्मिन्कलशे वरुणरुद्राः सुप्रति-
ष्ठिता वरदा भवत ॥ ततो षोडशोपचारैः सम्पूज्य ॥ अनया पूजया वरुण-
रुद्राः प्रीयन्ताम्॥ततः पुरुषसूक्तं षोडशमन्त्रान्,रुद्राध्यायं षष्ट्युत्तरेषष्टिमन्त्राः॥
तद्यथा ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ स भूमिꣳ सर्व्वत-
स्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥ ॐ पुरुष ऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्॥
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ ॐ एतावानस्य महिमातो
ज्ज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोस्य व्विश्श्वा भूतानि त्त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥३॥
ॐ त्त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो व्विष्ष्वङ्व्यक्क्रा-
मत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥ ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधि पू-

रुषः ॥ स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा-
त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्व्यानारण्या ग्राम्म्याश्च
ये ॥६॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे ॥ छन्दाᳬसि जज्ञिरे
तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभ-
यादतः गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः ॥ ८ ॥ ॐ तं
यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्न्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः ॥ तेन देवा ऽअयजन्त साद्ध्या ऽऋष-
यश्च ये ॥९॥ ॐ यत्पुरुषं व्व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन् ॥ मुखङ्किमस्या-
सीत्किम्बाहू किमूरूऽपादा ऽउच्च्येते ॥ १० ॥ ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू
राजन्न्यः कृतः ॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬशूद्रो ऽअजायत ॥११॥ ॐ
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखाद-
ग्निरजायत ॥ १२ ॥ ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥१३॥ ॐ यत्पुरुषेण हवि-
षा देवा यज्ञमतन्न्वत ॥ व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥
ॐ सप्तस्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः॥ देवा यद्यज्ञन्तन्न्वाना ऽअब-
ध्नन्न्पुरुषं पशुम् ॥१५॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमा
न्न्यासन् । ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥
इति पुरुषसूक्तम् ॥ अथ रुद्राध्यायः॥ ॐ नमस्ते रुद्द्रमन्न्यव ऽउतो त ऽइषवे
नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥ ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूरघोरा ऽपाप-
काशिनी ॥ तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ ॐ
यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं
जगत् ॥ ३ ॥ ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथा नः
सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽअसत् ॥४॥ ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो

दैव्यो भिषक्॥ अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्न्यो ऽधराचीः परासुव
॥५॥ॐ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः ॥ ये चैनꣳ रुद्द्रो ऽअभितो
दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवै षाꣳहेड ऽईमहे ॥६॥ ॐ असौ यो ऽवसर्प्पति नील-
ग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति
नः ॥७॥ ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥ अथो ये ऽअस्य सत्वा-
नोऽहन्तेभ्यो ऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ ॐ प्प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योज्ज्याम् ॥
याश्च ते हस्त ऽइषवः पराता भगवो व्वप ॥९॥ ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो
व्विशल्ल्योबाणवाँ२ ऽउत ॥ अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥
ॐ या ते हेतिर्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः॥ ॐ तयास्मान्न्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज ॥११॥ ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः ॥ अथो य
ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहि तम् ॥१२॥ ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शते-

षुधे ॥ नीशीर्य्यं शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ १३ ॥ ॐ नमस्त
ऽआयुधायानातताय धृष्ष्णवे ॥ उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने
॥१४॥ ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्ब्भकम्मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षि-
तम् ॥ मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्ररीरिषः ॥१५॥
ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः ॥ मा नो
व्वीरान्न् रुद्द्रभामिनो व्वधीर्हविष्ष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥ ॐ नमो हिर-
ण्ण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्प-
तये नमो नमः शष्प्पिञ्जराय त्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायो-
पवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः ॥ १७ ॥ ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नाना-
म्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्त्रा-
णाम्पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः ॥ १८ ॥ ॐ नमो

रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीना-
म्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नम ऽउच्चैर्घोषा-
याक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः ॥ १९ ॥ ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते
सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनाम्पतये नमो
नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्या-
नाम्पतये नमः ॥२०॥ ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो
निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघाᳬसद्भ्यो
मुष्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥२१॥
ॐ नम ऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नम ऽइषुमद्भ्यो धन्वा-
यिभ्यश्च वो नमो नम ऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम ऽआय-
च्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च वो नमः ॥२२॥ ॐ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो

नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः ॥२३॥ ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम ऽआव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम ऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः ॥२४॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ २५ ॥ ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो ऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो ऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥२६॥ ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥२७॥ ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो

नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ २८ ॥ ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्न्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥ २९ ॥ ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च नमो बृहते च व्वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्ग्र्याय च प्प्रथमाय च ॥३०॥ ॐ नम ऽआशवे चाजिराय च नमः शीग्घ्र्याय च शीब्भ्याय च नम ऽऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥३१॥ ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्न्याय च बुध्न्याय च ॥३२॥ ॐनमःसोभ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च नमः श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च नम ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च ॥३३॥ नमो व्वन्न्याय च कक्ष्याय च नमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च नम ऽआशुषे-

णाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥३४॥ ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥ ३५ ॥ ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥३६॥ ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कूल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ॥३७॥ ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ॥ ३८ ॥ ॐ नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ॥३९॥ ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो ऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनी-

यसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ॥४०॥ नमः शम्भवाय च मयो-
भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥४१॥
ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय
च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥ ४२ ॥ ॐ नमः सिकत्याय च
प्रवाह्याय च नमः किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च
नम ऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च ॥४३॥ ॐ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च
नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च
गह्वरेष्ठाय च॥४४॥ ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाꣳसव्याय च रज-
स्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च॥४५॥ॐ नमः
१० पर्णाय च पर्णशदाय च नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम ऽआखिदते
च प्रखिदते च नम ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः ॥ नमो वः किरिकेभ्यो

देवानाᳶ हृदयेभ्यो नमो व्विचिन्वत्केभ्यो नमो व्विक्षिणत्केभ्यो नम ऽआनि-
र्हतेभ्यः ॥४६॥ ॐ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्रं नीललोहित ॥ आसाम्प्रजाना-
मेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्च नाममत् ॥४७॥ ॐ इमा रुद्राय
तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे व्विश्व-
म्पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥४८॥ ॐ या ते रुद्रशिवा तनूः शिवा व्विश्वाहा
भेषजी ॥ शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥ ४९ ॥ ॐ परि नो
रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ॥ अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनु-
ष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥५०॥ ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना
भव ॥ परमे व्वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि
॥ ५१ ॥ व्विकिरिद्द्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ॥ यास्ते सहस्रᳶ हेतयो-
न्न्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥ ५२ ॥ ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ॥

तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३ ॥ ॐ असङ्ख्याता सह-
स्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम् ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि
॥ ५४ ॥ ॐ अस्मिन्न्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा ऽअधि ॥ तेषाꣳ सह० ॥५५॥
ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः ॥ तेषाꣳ सहस्र० ॥५६॥
ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः ॥ तेषाꣳ सहस्र० ॥५७॥
ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा व्विलोहिताः ॥ तेषाꣳ सहस्र० ॥५८॥
ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥ तेषाꣳ सहस्रयो० ॥५९॥
ॐ ये पथाम्पथि रक्षय ऽऐलबृदा ऽआयुर्युधः ॥ तेषाꣳ सहस्र० ॥६०॥
ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ॥ तेषाꣳ सहस्रयो० ॥६१॥
ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥ तेषाꣳ सहस्र० ॥६२॥
ॐ य ऽएतावन्तश्च भूयाꣳस्श्च दिशो रुद्रा वितस्त्थिरे ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेव

धन्वानि तन्न्मसि ॥६३॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः ॥
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो
ऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः
॥६४॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात ऽइषवः॥ तेभ्यो दश प्रा-
चीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नो-
वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥६५॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां य्येषामन्नमिषवः॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश द-
क्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृ-
डयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६६ ॥ इति रुद्राध्यायं
जपेत् ॥ ततो मण्डपनैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये वेद्युपरि तृणमण्डपं कारयेत् ॥ तत्र
सप्तप्रेतमातॄः स्थापयेत् ॥ तद्यथा ॥ सिन्दूरारक्तकार्पासबीजेन प्रेतमातॄः निरूप्य

उसके बाद प्रेतमातृकी वेदी पर तृण का मंडप बनावै । उस वेदी पर सात प्रेतमातृ कपास

सिन्दूरमें रंगकर सातजगह रखै, और आठ धातुसे मिलाभया लोहा सातो जगहमें रखै। क्रमसे संकल्प पढ़कर सात प्रेतमातृके नामोंसे आवाहन करै। फूल चंदन अक्षत से पूजन करै। उरदीका ७ बरानैवेद्य

अष्टधातुमिलितलोहं च सप्तसु स्थानेषु संस्थाप्य क्रमेण पूजयेत् ॥ अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य विमुक्तिकाङ्क्षी स्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः सप्त प्रेतमातॄणां पूजनमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्पः ॥ ॐ करालयै नमः करालीमा० ॥१॥ ॐ भीषणायै नमः भीषणामा० ॥२॥ ॐ रौद्रायै नमः रौद्रामा० ॥ ३ ॥ ॐ यमदंष्ट्रायै नमः यमदंष्ट्रामा० ॥ ४ ॥ ॐ कृशोदर्यै नमः, कृशोदरीमा० ॥५॥ ॐ उग्रचण्डायै नमः उग्रचण्डामा० ॥६॥ ॐ महाकाल्यै नमः, महाकालीमा० ॥ ७ ॥ इति गन्धाक्षतपुष्पमाषान्नस्य सप्तवटकनैवेद्याचमनीयताम्बूलानि प्रत्येकं समर्पयेत् । एतत्पूजनसाङ्गताप्ति-

लगावै आचमन करावै पान सोपाड़ी सबको चढ़ावै और पूजन की पूर्ति के वास्ते लोहा दक्षिणा संकल्प करके ब्राह्मण को देय ।

उस वेदीके समीप ७ कलश स्थापन करै। उन कलशोंमें 'ॐ शन्नोदेवी' इस मंत्रसे जल डाले,

द्धयर्थं लोहदक्षिणां ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। तत्समीपे सप्तकलशान् स्थापयेत्। तेषु कलशेषु ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये॥ शँय्योरभिस्रवन्तु नः। इति जलं क्षिपेत्॥ ॐ यवोसि यवयास्मद्द्वेषोयवयारातीः, इति यवान् क्षिपेत्॥ ॐ तिलोऽसि सोमदेवत्यो गोसवो देवनिर्मितः॥ प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितृँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा॥ इति तिलान्क्षिपेत्॥ ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥ इति कुशान् क्षिपेत्। 'ॐ देवस्य त्वे' ति तज्जलं शिरस्यभिषिञ्चेय॥ तत्र मन्त्रः॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यै वाचो

'ॐ यवोऽसि' इस मंत्रसे यव डाले, ॐ तिलोऽसि' इस मंत्रसे तिल डाले, 'ॐ पवित्रे स्थो' इस मंत्रसे कुशा डाले, 'ॐ देवस्य त्वा' इस ३ मन्त्रसे सातों कलशका जल यजमान अपने शिर पर छिड़कै

तिसकेबाद सव्यहो कर पूरबमुँह 'सहस्त्रशीर्षा १६ मंत्र, तथा 'नमस्ते ६६ मंत्र' और 'यद्देवादेवकुष्मांडो' यह

यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥ ॐ देवस्य त्वा० ॥ सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाऽग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥२॥ ॐ देवस्य त्वा० ॥ अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि । सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसे ऽभिषिञ्चामि ॥३॥ ततः सव्येन पूर्वाभिमुखः पुरुषसूक्तं रुद्राध्यायं ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्च कृमा व्वयम् ॥ अग्निर्म्मा तस्मादेनसो व्विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥१॥ ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि च कृमा व्वयम् ॥ व्वायुर्मा तस्मादेनसो व्विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ २ ॥ ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽएनाꣳसि च कृमा व्वयम् ॥ सूर्यो मा तस्मादेनसो व्विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ ३ ॥ इति पठेत् ॥ ततोऽपसव्येन कुशत्रययवजलान्यादाय ॥ अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकाङ्क्षो स्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः वत्सत-

२ मंत्र पढ़ै, अपसव्य होकर तीन कुशा यव जल लेकर होम का सङ्कल्प करै और ब्राह्मण को

रीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गयज्ञे ब्राह्मणद्वारा हवनमहं करिष्ये ॥ तत उत्तराभिमुखं ब्राह्मणमुपवेश्य वरणद्रव्यञ्चादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कर्त्तव्य-वृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकश-र्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवस्त्रयुग्महेमालङ्कारयुक्तैर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे, ब्रह्माणं वृणुयात्। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ पुनः वरणद्रव्यञ्चादाय ॥ अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कर्त्तव्यवृषोत्सर्गाङ्ग-भूतहोमकर्म कर्तुं अमुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवस्त्रयुग्महेमाल-ङ्कारयुक्तैर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ यथा विहितं कर्म कुरु ॥ यथा ज्ञानं करवाणीति ॥ ततो होता प्राङ्मुख उपविश्याचान्तः कुशैर्हस्त-

संकल्प करके २ वरणी देय। ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि कहै, यजमान' कहै—जैसा कर्म लिखा है तिस विधिसे आप करैं । ब्राह्मण कहै जैसा ज्ञान है वैसा करैंगे। तिसके बाद होता पूर्व मुँह बैठकर आचमन करै,

और तीन कुशा लेकर होमकी वेदीको झाड़े उस कुशाको ईशानमें फेंकै। गोबर जल लेकर वेदी को लीपै वेदीके मध्यमें स्रुवाके जड़ से १० अंगुलकी ३ तीन रेखा करै। उत्तर उत्तर क्रमसे जिस प्रकारसे रेखाकी गयी है उसी प्रकारसे अनामिका अँगूठासे रेखा पर की मिट्टी उठाकर ईशानमें फेंकै। उन

मात्रं चतुरस्रं स्थण्डिलं परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य मध्ये प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण स्रुवमूलेन त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां तां क्षिप्त्वा तं देशं जलेनाऽभ्युक्ष्य तत्र दक्षिणहस्तस्थकांस्यपात्रेणाऽग्निमानीय तूष्णीं स्थापयेत्॥ अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्माऽऽसनम्॥ अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयं ब्रह्माऽऽसने ब्रह्मोपवेशनम्॥ प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमा-

रेखाओंपर जल छिड़कै, दहिने हाथसे कांसेकी थालीमें अग्नि लेकर वेदीपर स्थापन करै, बाद कुशकंडिका करै। उसका क्रम यह है-अग्निके दक्षिण तरफ तीन कुशा ब्रह्माके वास्ते आसन रखै, अग्निके उत्तरतरफ दोदो कुशाका आसन रखै; ब्रह्मा के आसन पर ब्रह्माको बैठावै प्रणीतापात्रको अपने आगे

रखै उसको जलसे भरै कुशाओं से ढँक अग्निके उत्तर तरफ जो दो आसन हैं उस आसनके पहिले आसन पर प्रणीता रखै। इसके बाद ब्रह्माके तरफ देखकर दूसरे आसन पर रखै उसके बाद मुट्ठी-भर कुशा लेवे (अथवा ८१ कुशा) उसमें से ४ भाग करै १ भाग वेदीके अग्नि कोण से ईशान

सने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् ॥ ततो बर्हिषश्च-तुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तं प्राच्याम् ॥ ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं दक्षिण-स्याम् ॥ नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं प्रतीच्याम् ॥ अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं उत्तरस्याम्॥ इति परिस्तरणम् ॥ तत्र पात्रासादनमुपयोक्ष्यमाणानामग्नेरुत्तरतः ॥ पवित्र-च्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रार्थमनन्तर्गर्भितं साग्रकुशपत्रद्वयं प्रोक्षण्यर्थं मृत्पात्रं

तक पूर्व और १ भाग ब्रह्मासे अग्नि तक दक्षिण और १ भाग नैर्ऋत्यसे वायव्य तक पश्चिम और १ भाग अग्निसे प्रणीता तक उत्तर में इस तरह कुशा बिछावे। अब कार्य में आनेवाले पात्र का आसादन करते हैं--अग्निके उत्तर पश्चिमसे पवित्र काटनेके वास्ते ३ कुशा पवित्रके लिये कुशाका दो पत्ता बीचका गर्भ निकाल कर और अग्रके सहित रखै प्रोक्षणीके लिए मिट्टीकी ढकनी रखै, घीके

लिये ताँबेका कटोरा रखै पायसचरु पिष्टचरुके लिये, दो खानावाली मिट्टीकी कड़ाही स्रुवाको पोंछने के लिये तीनकुशा हाथमें लेने के वास्ते वेणी रूप तीन कुशा १० अंगुलकी पलाशकी लकड़ी ३

आज्यार्थं ताम्रस्थाली। पायसचरु-पिष्टचर्वर्थञ्च सान्तरालमृत्तिकास्थाली। स्रुवसम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्। उपग्रहार्थं वेणीरूपं कुशत्रयं प्रादेशमात्रम्। पालाशसमित्त्रयम्॥ स्रुवः। आज्यम्। तन्दुलपिष्टम्। तन्दुलान्॥ जलम्। दुग्धम्॥ ब्रह्मदक्षिणार्थं पूर्णपात्रं, होतृदक्षिणार्थं वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यान्युपकल्पयेत्॥ ततो वाग्यत आसादितकुशपत्रद्वयमादाय पवित्रच्छेदनकुशैः प्रादेशमात्रं प्रमाप्य छिन्द्यात्॥ तान्नपास्य सपवित्रकरेण प्रणीतोदकेन त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय पवित्राभ्यामुत्पूय प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणं त्रिरुहिङ्गनम्॥प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी-

दस दस अंगुलकी स्रुवा घी चावलका पिसान चावल जल दूध ब्रह्माकी दक्षिणाके लिये, चावलसे भरा पूर्णपात्र रखै, होता की दक्षिणाके वास्ते २ वस्त्र सोना कांसा रखै। एकके आगे एक क्रमसे रखै। सब चीजें अब चुपचाप रखा हुआ २ कुशा पत्ता और ३ कुशा जो पवित्री काटनेवाला है सो उठावे

१० अंगुल पवित्रीको नापके ३ कुशासे बाकीको काट देवे उस पवित्रीको लेकर प्रणीताका जल तीन दफे प्रोक्षणीमें रखै दोनों हाथकी अनामिका और अँगूठासे पवित्रीको थामकर प्रोक्षणीके जलको

प्रोक्षणम् ॥ प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम् ॥ पवित्रशेषजलसहितप्रोक्षणी-पात्रं प्रणीताग्न्योर्मध्ये निधाय ॥ आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । सान्तराल-मृण्मयपात्रे प्रणीताजलं एकस्मिन्स्थाने । एकस्मिन्स्थाने क्षीरं पिष्टमयचरु-जलमध्ये क्षिपेत् ॥ ततो ब्रह्मादक्षिणतः आज्यमधिश्रयेत्, तस्योत्तरतः स्वयं चरुं श्रपयेत् । उल्मुकं सहविष्याग्नेः प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा तत्रैव क्षिप्त्वा ततो

उत्पवन करै । प्रोक्षणीको बाँये हाथ पर रखै । दहिने हाथसे पवित्री लेकर प्रोक्षणीके जलको तीन दफे उछालै।प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको प्रोक्षणकरै।प्रोक्षणीकेजलसे जितनीवस्तु रखीहै उसकोप्रोक्षण करै। पवित्राके सहित प्रोक्षणीको अग्निप्रणीताके बीचमें रखे।होमके कटोरामें घी रखै और दोखाना वाली मिट्टीकी कड़ाहीमें १ तरफप्रणीताजल १ तरफ दूधडालै।जलमेंचावलका पिसानऔरदूधमेंप्रणीता केजलसे धोकर चावलडालै। ब्रह्माअग्नि पर दक्षिण तरफघी रखै औरहोता घीके उत्तर तरफचरुरखै। जलतीभईलकड़ी उठाकरप्रदक्षिणाक्रमसे दोनोंहविके ऊपर घुमाकर अग्निमेंछोड़देय।बादस्रुवाकोनीचे

की ओर मुँह करके तपावै। संमार्जन कुशाको लेकर कुशाके अग्रसे स्रुवाके अग्रसे मूल तक कुशा के मूलसे स्रुवाके मूलसे अग्र तक पोंछै। प्रणीताके जलसे प्रोक्षण स्रुवाको करै। फिर तपा कर दक्षिण तरफ रखै, घी को अग्नि परसे चरुके पूरबसे उतार कर ले आवै। अग्निके पश्चिम

अधोमुखं स्रुवप्रतपनं सम्मार्गकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मार्ज्य प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य दक्षिणदेशे निधाय। आज्योद्वासनं चरुं पूर्वेणाऽऽनीय अग्निपश्चिमे निधाय, पायसचरुमुद्वास्याज्यपश्चिमेन नीत्वा आज्यस्योत्तरतो निधाय ॥ प्रोक्षणीतः पवित्रे समानीय आज्योत्पवनम् ॥ आज्याऽवेक्षणम् ॥ सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम् ॥ पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् ॥ उपयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तिष्ठन् प्रागग्रघृताक्तसमित्त्रयं

११ तरफ रखै। पायस चरु उतार कर घी के पश्चिमसे ले आवै, घी के उत्तर तरफ रखै, प्रोक्षणी में से पवित्रा लेकर घीको प्रोक्षणीकी तरह उत्पवन करै और घीमें देखै कोई खराब चीज हो तो निकाल देवै। फिर उसी पवित्रसे प्रोक्षणीको उत्पवन करै, उपयमन जो वेणीरूप कुशा है उस को

बायें हाथ में लेकर दहिने हाथसे तीन पलाशवाली समिधा (लकड़ी) लेकर खड़ा हो ब्रह्माको मन में ध्यान करके पूरबको अग्र रहैं ऐसा घी में डुबोकर तीनों लकड़ी अग्नि में डाल देवै बैठ कर पवित्रा के सहित प्रोक्षणी का जल ईशान से लेकर ईशान तक घुमावै, पवित्रा प्रणीता में रखै

वह्नौ क्षिपेत् ॥ उपविश्य सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशान-पर्यन्तमग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय, ततो ब्रह्मणा कुशेनाऽन्वा-रब्धो दक्षिणजानुं पातयित्वा ॥ ॐ इह रतिः स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥१॥ अग्निमध्ये त्यागः न तु प्रोक्षणीपात्रे ॥ ॐ इह रमध्वꣳ स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ इह धृतिः स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ इह स्वधृतिः स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ ४ ॥ ॐ उपसृजं धरुणं मातरं मात्रधरुणो मातरं धयन् स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥ ॐ रायस्पोषमस्मासु दीध-

बाद होताको ब्रह्मा कुशासे छूये रहै, होता दहिना पैर मोड़ कर आगे लिखे हुये ॐकार सहित मन्त्रोंसे ६ आहुति देय और आहुति देनेके बाद स्रुवाका शेष प्रोक्षणी में डालै। किसीके मतसे

ॐकार सहित, किसीके मतसे ॐकार रहित करै। ब्रह्मासे स्पर्श किये हुये 'प्रजापतये इन्द्राय अग्नये
रत् स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥६॥ केषाञ्चिन्मते ॐकारसहितः षडाज्याहुतीः कुर्यात् ॥ संस्रवं प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥ ततः आघारावाज्यभागं पायसहोमं तु ॐकाररहितः कुर्यात् ॥ ब्रह्मणान्वारब्धः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम ॥ तत अनन्वारब्धः पायसहोमः ॥ ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ रुद्राय स्वाहा, इदं रुद्राय० ॥ २ ॥ ॐ शर्वाय स्वाहा, इदं शर्वाय न० ॥ ३ ॥ ॐ पशुपतये स्वाहा, इदं पशुपतये० ॥ ४ ॥ ॐ उग्राय स्वाहा, इदमुग्राय० ॥ ५ ॥ उशनसे स्वाहा, इदमुशनसे० ॥ ६ ॥ ॐ भवाय स्वाहा, इदं भवाय० ॥ ७ ॥ ॐ महादेवाय स्वाहा, इदं महादेवाय० ॥ ८ ॥ ॐ ईशा-
सोमाय' ४ आहुति दे। ब्रह्मासे स्पर्श छोड़कर इन मंत्रोंसे पायस होम देवे 'अग्नये रुद्राय शर्वाय पशुपतये'

'उग्राय उशनसे भवाय महादेवाय ईशानाय' अब पिष्ट चरुका होम 'ॐपूषा गा अन्वेतु नः' इसमन्त्रसे करै बाद ब्रह्मासे स्पर्श करके घी पायस पिष्ट चरु शेष एकट्ठा सब लेकर 'अग्नये स्विष्टकृते' से स्विकृत

नाय स्वाहा, इदमीशानाय० ॥ ९ ॥ अथ पिष्टकेन । ॐ पूषा गा ऽअन्न्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः ॥ पूषा वाजꣳसनोतु नः स्वाहा, इदं पूष्णे न मम ॥१०॥ ततोऽन्वारब्धेन ॥ ततः पायसपिष्टकाभ्यामुत्तरार्द्धावदानभूताभ्याम् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ तत आज्येन ॥ ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये० ॥ ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे० ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०॥ ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ स त्वन्नो ऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ ॥ अव यक्ष्व नो व्वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि

आहुति देय और घी की नव आहुति 'भूः' इत्यादि मन्त्रोंसे देवे। शेष प्रोक्षणीमें डालै, प्रोक्षणीका

घी प्राशनकरै वा सूँघै आचमन करै पवित्रासे प्रणीताका जल अपने ऊपर छिड़कै 'सुमित्रियान' इस

स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्य-मित्वमया ऽअसि ॥ अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे० । ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः ॥ तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणायादित्यायाऽदितये न मम॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥ इति मनसा ॥ संस्रवप्राशनम् ॥ आचमनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ ॐ सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु ॥ ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयन्द्विष्मः, इति ऐशान्यां

मन्त्रसे 'दुर्मित्रिया' इस मन्त्रसे प्रणीताको ईशान में उलट दे । फिर हाथमें जल वो पूर्णपात्र में

दक्षिणाके सङ्कल्प पढ़कर ब्रह्माको देय ब्रह्मा 'स्वस्ति' कहै। किसीका मत पूर्णाहुति करनेका है किसीका नहीं है। यदि पूर्णाहुति करना हो तो 'मूर्धानं' इस मंत्रसे देय और वेदीकेचारो तरफ

प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात् ॥ कृतस्य वृषोत्सर्गाङ्गहवनकर्मणः कृताऽकृतावेक्षणरूप-ब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्म-णाय दक्षिणां ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ केषाञ्चि-न्मते पूर्णाहुतिं कुर्यात् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम् ॥ कविꣳ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जन-यन्त देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ तत आस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य आज्ये-नाभिघार्य्य हस्तेनैव जुहुयात् ॥ ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनमस्पत ऽइमं देवयज्ञꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा, इदमग्नये० ॥ इति बर्हिर्होमः॥

का कुशा उठाकर घीमें डुबोकर 'देवागातु' इस मन्त्रसे अग्निमें डाल देवै इसको बर्हिर्होम कहते हैं। तीन कुशा तिल जलर वस्त्र सोना कांसा लेकर संकल्प पढ़के होताको दक्षिणा देवे होता

'ॐ स्वस्ति' कहै तिसके बाद 'नमस्ते' इत्यादि ६६ मंत्र पढ़कर वृषभ दागनेवालेको बुलाकर वृषभको

कुशत्रयतिलजलान्यादाय वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यपात्राणि चादाय ॥ अद्य कर्त्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतकृतैतद्धोमप्रतिष्ठार्थं एतानि वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यानि बृहस्पतिवह्निचन्द्रदैवतानि अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय होत्रे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो रुद्राध्यायं जपेत् ॥ लोहकारमाहूय वृषभं लाञ्छयेत् ॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमस द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ इति मन्त्रेण दक्षिणपार्श्वे द्वादशाङ्गुलेन त्रिशूलं लिखेत् ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः, बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ इति वामपार्श्वे अष्टाङ्गुलं चक्रं लिखेत् ॥ दधिगोमययोर्मध्ये स्नापयित्वाऽङ्कितम्पुनः ॥

त्रिशूल वो चक्रका चिह्न करावै 'ॐ इमा रुद्राय' इस मन्त्रसे दहिने तरफ १२ अं० त्रिशूल 'ॐ नमस्ते रुद्र' १ मन्त्रसे आठ अंगुलका बायें तरफ चक्र लिखै। दही गोबर मिलाकर नहवावै फिर

उसको अंकित करैं। तिसके बाद चारो बछिया के संग वृषभका कुश जलसे स्नान करावै, स्नानका
ततो वत्सतरीचतुष्टयसहितं वृषभं कुशजलेन स्नापयेत् ॥ तत्र स्नानकरण-
मन्त्राः ॥ ॐ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासु जातः कश्यपो यस्त्विन्द्रः ॥
या ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न ऽआपः शꣳ स्योना भवन्तु ॥ ॐ या-
साꣳ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते ऽअवपश्यञ्जनानाम् ॥ या ऽअग्निं
गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न ऽआपः शꣳ स्योना भवन्तु ॥ ॐ यासां देवा
दिवि कृण्वन्तु भक्षं या ऽअन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ॥ या अग्निं गर्भं दधिरे
सुवर्णास्ता न ऽआपः शꣳ स्योना भवन्तु ॥ ॐ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः
शिवया तन्वोपस्पृश तत्वचं मे। घृतश्च्युतः शुचयो याः पावकास्ता न ऽआपः
शꣳ स्योना भवन्तु ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शं
य्योरभिस्रवन्तु नः ॥ इति मार्जनम् ॥ ततो लोहघण्टिकानूपुरकनककपर्दिका-
मंत्र मूल में देखना। तिसके बाद पांचोंको लोह घंटी पजेब इत्यादिसे अलंकृत कर, अघमर्षण रुद्रा-

ध्याय ६६ मन्त्र पुरुष सूक्त १६ मन्त्र 'यद्देवा देवहेडनं' ३ मन्त्र पढ़ै। बाद बैल के दहिने

दिभिः पञ्चाप्यलङ्कृत्य सावित्रीमघमर्षणं रुद्राध्यायं पुरुषसूक्तं ॐयद्देवा देवेति च जपेत् । ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्च कृमा व्वयम् ॥ अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि च कृमा व्वयम् ॥ वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽएनाꣳसि च कृमा वयम् ॥ सूर्य्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ इति ऋक्त्रयं कूष्माण्डीश्च जपेत् ॥ ततो वृषभस्य दक्षिणकर्णे जपेत् ॥ ॐ पिता वत्सानां पतिरघ्नीयानामथो पितामहता गर्गराणाम् वत्सो जरायुः । प्रतिधुक् पीयूष ऽआमिक्षा घृतं तद्वस्यरेतः ॥ वृषोऽसि भगवान्धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः । वृणोमि त्वामहं भक्त्या स मां रक्षतु सर्वतः ॥ सत्यं वृषस्वरूपेण गवामानन्दकारकः । अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन ॥ त्वयि मत्तो क्षया-

कान में 'ॐ पिता वत्सा' इस मन्त्रको कहै और 'वृषोऽसि भगवान्' इस श्लोक को कहै आगे

'त्र्यम्बकं' इत्यादि मन्त्रों से वृषभका न्यास करै तिसके बाद चारो बछिया के सहित वृषभ का

ल्लोकाः प्रेताः सन्तु निरामयाः ॥ इति मन्त्रद्वयं जपित्वा ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मु-क्षीय मामृतात्, इति शिरसि ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः, इति ललाटे ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ इति मुखे ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ इति नासिकायाम् ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेव धन्वानि त-न्मसि ॥ इति ग्रीवायाम् ॥ ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवेति ॥ दुरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ इति बाह्वोः ॥ ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥

पूजन करके तीन कुशा तिल जल लेकर चारों बछियाके सहित वृषभका सङ्कल्प करके त्याग

निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥ इति लाङ्गूले ॥ ॐ वृषाग्नि वृषणंभरन्नपाङ्गर्भ॑ समुद्रियम् ॥ अग्न ऽआयाहि वीतये ॥ इति वृषणे ॥ ॐ त्र्यम्बकमिति पादेषु ॥ इति न्यासः ॥ ततो वत्सतरीसहितं वृषभं पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ वत्सतरीभ्यो नमः ॥ धर्मरूपाय वृषाय नमः, इति पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानादिभिरुपचारैः सम्पूज्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मोक्षकामो रुद्रदैवत्यं वृषमेनं युवानं पतिं वो ददानि तेन क्रीडन्त्यश्च रथप्रियेण ॥ मा नः साप्त्यजनुषा सुभगा रायस्पोषेण समिषा मदेम ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ तत ऐशान्यां दिशि पञ्चापि चालयेत् ॥ पुनः पञ्चापि पूजयेत् ॥ ततो वत्स-

करै और ईशान दिशा के तरफ पाँचो को चलावै फिर पाँचों का पूजन करै तिस के बाद चारों

बछिया के मध्य में वृषभ को मूल में लिखे हुये मन्त्रों से अभिमन्त्रण करै आगे अपसव्य

तरीचतुष्टयमध्यगतं वृषभमभिमन्त्रयेत् ॥ तत्र मन्त्राः ॥ ॐ समुद्रोऽसि नभस्वा-
नार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा ॥ मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भू-
र्मयो भूरभिमा बाहि स्वाहा ॥ वस्युरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयो भूरभि मा ञ्वाहि
स्वाहा ॥ ॐ यास्ते ऽअग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः ॥ ताभिर्न्नो
ऽअद्य सर्व्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि । या वो देवाः सूर्य्ये रुचो गोष्वश्वेषु या
रुचः ॥ इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचन्नो धत्त बृहस्पते ॥ रुचन्नो धेहि ब्राह्मणेषु-
स्त्व ६ राजसु नस्कृधि ॥ रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचारुचम् ॥ ॐ तत्त्वा यामि
ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेहबोध्यु
रुश६ स मान ऽआयुः प्रमोषीः ॥ स्वर्णः घर्मः स्वाहा स्वर्णार्क्कः स्वाहा स्वर्ण-
शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा ॥ (अथ नीलश्राद्धम्)

होकर पितृपक्ष इत्यादिमें लिखे हुये २६ श्लोकों से नीलश्राद्ध (याने यवका पिण्ड २६दे) करै

ततोऽपसव्यम् ॥ पितृपक्षाश्च ये केचिद्ये चाऽन्ये मातृपक्षकाः । गुरुश्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥१॥ ये चाऽन्ये लुप्तपिण्डाश्च पुत्रदारविवर्जिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ २ ॥ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ॥ कुलद्वये ये मम वंशभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ३ ॥ मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः दृष्टाश्च पृष्टाश्च कृतोपकाराः ॥ देशान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधाकृत्य इदं ददामि ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ४ ॥ ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ॥ अकालेऽपगता ये च ये
१२ चाऽन्धाः पङ्गवस्तथा ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥५॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञातकुले मम ॥ आमगर्भाश्च ये केचिदागता

मुखगोचरे ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ६ ॥ वृषयोनि-
गता ये च कीटकादिपतङ्गकाः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्य-
हम् ॥ ७ ॥ रौरवे नरके जाताः कुम्भीपाके च ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं
गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ८ ॥ तप्ततैले च चीयन्ते यमलोके महा-
भये ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ९ ॥ पीड्यन्ते किङ्क-
रैर्ये च सुदृढमिक्षुकाण्डवत् ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्
॥ १० ॥ जलेन पीडिताः पङ्के यमदूतैर्महाबलैः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु
नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥११॥ यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते प्रेतपीडाव्यवस्थिताः ॥
ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥१२॥ कुष्ठा-ऽपस्मार-लूताभि-
र्जलोदर-भगन्दरैः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ १३ ॥ ॥६७॥
गण्डमाला-पाण्डुरोगैः क्षयव्याधिमृताश्च ये। ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपि-

एडं ददाम्यहम् ॥१४॥ कारागृहे मृता ये च व्याघ्रभीतिहतास्तथा ॥ ते सर्वे तृप्तिं
गच्छन्तु नीलपिण्ड ददाम्यहम् ॥ १५ ॥ चाण्डालैर्निर्हिता मार्गे आशौच-
शयने मृताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० ॥१६॥ ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापा
ब्रह्महारिणः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ १७ ॥ कुब्जाश्च बधिरा ये च
पितृमातृकुलोद्भवाः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥१८॥ संसाररहिता ये
च रौरवादिषु ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ १९ ॥ वृक्षयोनि-
गता ये च तृण-गुल्म-लतास्थिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २० ॥
देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक्प्रेत-पिशाचकाः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥२१॥
कृमि कीट-पतङ्गत्वं गता ये च स्वकर्मणा ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील०॥२२॥
रौरवे नरके जाताः कुम्भीपाके च ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० ॥ २३ ॥
आसुरीं योनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील०

॥ २४ ॥ उद्बन्धनरके जाता ऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्च ये ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २५ ॥ महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्य दारुणान् ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० ॥ २६ ॥ महाप्रेता महाभागाः पूर्वप्रेतत्वसंस्थिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २७ ॥ अगम्यागमनं चैव व्रतभङ्गकराश्च ये ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २८ ॥ जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० २९ ॥ इति नीलश्राद्धम् ॥ (अथ नीलपुच्छतर्पणम्) ततः सव्येनाचम्य पूर्वाभिमुखः कुशयवजलान्यादाय ॐ ब्रह्माद्या देवताः सर्वाः ऋषयो मुनयस्तथा ॥ सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १ ॥ असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चएडकास्तथा ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ग्रहदेवाधदेवताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु० ॥२॥ विश्वेदेवास्तथाऽऽदित्याः साध्याश्चैव मरुद्गणाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ३ ॥

आगे सव्यहोकरआचमनकरैपूर्वमुँहहोकेकुशयवजललेकर 'ब्रह्माद्या' इत्यादिश्लोकोंसेनीलपुच्छतर्पण करै

क्षेत्रपीठोपपीठादि नदा नद्यश्च सागराः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ४ ॥ पाताले नागपत्न्यश्च नागाश्चैव स-पर्वताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ५ ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाशमेव च ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ६ ॥ पिशाचा गुह्यकाः प्रेताः गणाः गन्धर्वराक्षसाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ७ ॥ दिवि भुव्यन्तरिक्षे च ये च पातालवासिनः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ८ ॥ शिवः शिवा तथा विष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मीः सरस्वती ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ९ ॥ तपोधनश्च भगवान् व्यक्ताऽव्यक्तः परमेश्वरः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १० ॥ क्षेत्रौषधीर्लता वृक्षाः वनस्पत्यादिदेवताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥११॥ कपिलः शेषनागश्च तक्षकोऽनन्त एव च ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु

तर्पिताः ॥ १२ ॥ अनेकजलचरा जीवा असङ्ख्यातास्त्वनेकशः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥१३॥ चतुर्दश यमाश्चैव ये चाऽन्ये यमकिङ्कराः ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १४ ॥ सर्वे तु यक्षराजानः पशवः पक्षिणस्तथा ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥१५॥ स्वेदजोद्भिजजातोया अण्डजाश्च जरायुजाः ॥ शान्तिदाः शुभदास्ते स्युर्नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १६ ॥ ततः कृताऽपसव्यो दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः यवतिलमोटकवृषपुच्छं च गृहीत्वा अञ्जलित्रयेण तर्पयेत् ॥ ॐ स्वधा पितृमातृभ्यो बन्धुभ्यश्चापि तृप्तये ॥ मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये चान्ये पितृपक्षजाः गुरु-श्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १ ॥ ये चान्ये लुप्तपिण्डाश्च पुत्रदारविवर्जिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ २ ॥ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंश-

बादअपसव्यहोके दक्षिणमुँह मोटकतिलजलसे तीनतीनअंजलीमूलमें लिखेहुए श्लोकोंसे तर्पणकरै।

भवा मदीयाः ॥ कुलद्वये ये मम वंशभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ ते सर्वे
तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ३ ॥ मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः दृष्टाश्च पृष्टाश्च
कृतोपकाराः ॥ देशान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधाकृत्य इदं ददामि ॥
ते सर्वे तृप्ति० ॥ ४ ॥ ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ५ ॥ अकालेऽपगता ये च ये चाऽन्धपङ्गव-
स्तथा ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ६ ॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाता-
ऽज्ञात कुले मम ॥ आमगर्भाश्च ये केचिदागताः पुच्छगोचरे ॥ ते सर्वे तृप्ति-
मायान्तु नील० ॥ ७ ॥ वृषयोनिगता ये च कीट-काक-पतङ्गकाः ॥ ते सर्वे
तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ८ ॥ किङ्करैः पीड्यते ये च सुतरामिक्षुकाण्डवत् ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ९ ॥ जलेन पीडिताः पङ्के यमदूतैर्महाबलैः ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १० ॥ यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते प्रेतपीडाव्यव-

स्थिताः ॥ कुष्ठा-ऽपस्मार-लूतादिजलोदर-भगन्दरैः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ११ ॥ गण्डमालापाण्डुरोगैः क्षयव्याधिमृताश्च ये ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १२ ॥ कारागृहे मृता ये च सिंह-व्याघ्रहताश्च ये ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १३ ॥ चाण्डालैर्निहिता मार्गे अशौचशयने मृताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १४ ॥ ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापाः स्वर्णहारिणः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १५ ॥ कुब्जाश्च बधिरा ये च मातृपितृकुलोद्भवाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १६ ॥ संसाररहिता ये च रौरवादिषु ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ १७ ॥ सर्पयोनिगता ये च तृणगुल्मलतास्थिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १८ ॥ देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक्प्रेतपिशाचकाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥१९॥ कृमि-कीट-पतङ्गत्वं गता ये च स्वकर्मणा ॥ ते सर्वे तप्तिमायान्तु० ॥२०॥

पश्वादियोनिजाता ये वृश्चिकादिषु ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥२१॥ आसुरीं योनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २२ ॥ उद्बन्धनरके जाता ऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्च ये ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २३ ॥ महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्य दारुणान् ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २४ ॥ महाप्रेता महाभागाः प्रेतपूर्वे च ये स्थिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २५॥ अगम्यागमनं चैव व्रतभङ्गकराश्च ये ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छे० ॥ २६ ॥ जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥२७॥ ये प्रेतभावमापन्ना ये चाऽन्ये श्राद्धवर्जिताः ॥ वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभन्तां प्रीतिमुत्तमाम् ॥ २८ ॥ इति नीलपुच्छतर्पणम् ॥ ततः कर्मकारमाहूयाऽभिवेतनं दद्यात् ॥ उत्सृष्ट्वा ब्राह्मणान् श्रावयेत् ॥ यत्किञ्चिद्द्विजने मयोत्सृष्टं तदन्यो नयेत् ॥ न वाह्यां न चैतत्त्वोरं

वृषभ दागने वालेको दगाई द्रव्य देवे । उत्सृष्टा ब्राह्मण लोग 'यत्किंचिद्द्विजने' इत्यादि सुनावैं

अब बैतरणीदान कहते हैं। सब सामग्रीके सहित कपिला गौका पूजन और ब्राह्मणका पूजन करै, तीन दफे 'इमां सोपकरणां' कहकर ब्राह्मणके हाथ पर जलदेय और जल गौके ऊपर छीटै। वरण बो हाथ

पातव्यं केनचित्किञ्चित्क्वचित् ॥ रुद्राग्निबहुसर्पिष्कं पायसं ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ (अथ वैतरण्यर्थं सोपकरणयुतां कपिलां दद्यात्) तद्यथा ॥ ॐ सोपकरणसवत्सकपिलागवे नमः ॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य ॥ इमां सोपकरणां सवत्सां कपिलां गां ददामिति द्विजकरे जलदानम् ॥ जलेन देयद्रव्याऽभिषेचनम् ॥ (वरणद्रव्यं गृहीत्वा) अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि कपिलागोदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ ततो गोदानम् ॥ कुशादीन्यादाय, अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गप्राप्तिकामः

में जल इत्यादि लेकर 'अद्याशौचान्त' इत्यादि उच्चारण करके ब्राह्मण के हाथ में देय ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहै। अब कुश तिल यव जल वो गौ की पूछ थाम कर 'अद्याशौचान्त' इत्यादि उच्चारण

करके ब्राह्मणके हाथमें देय ब्राह्मण 'स्वस्ति' कहै बाद मूलमें लिखे हुए श्लोकोंसे गौ की प्रार्थना

इमां सवत्सां कपिलां गां हेमशृङ्गीं रौप्यखुरां वस्त्रयुगच्छन्नां कांस्योपदोहां मुक्ता-लाङ्गूलभूषितां रुद्रदैवत्याममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ अथ प्रार्थना ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥ नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ अर्चितासि वसिष्ठेन विश्वा-मित्रेण पूजिता ॥ सुरभी ! हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ यमद्वारे महाघोरे श्रुत्वा वैतरणीं नदीम् ॥ तर्तुकामो ददाम्येतां तुभ्यं वैतरणीं नमः ॥ गावो मे चाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ विष्णुरूप ! द्विजश्रेष्ठ ! मामुद्धर महीसुर ! ॥ सदक्षिणा मया दत्ता तुभ्यं वैतरणीं नमः ॥ धर्मराजं च सर्वेशं वैतरण्याख्यधेनुकम् ॥ सर्वान् प्रदक्षिणीकृत्य ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ पुच्छं सङ्गृह्य धेन्वाश्च अग्रे कृत्वा तु वै द्विजम् ॥ धेनुके ! त्वं

करै और धर्मराज वैतरणी धेनु (गौ) इत्यादि की प्रदक्षिणा करके ब्राह्मण को निवेदन करै,

गौ वो ब्राह्मणको आगे करके मूलमें लिखे हुए श्लोकसे वैतरणीकी प्रार्थना करै, अब ऊख को नाव मजबूत लोहे का दण्ड और सोनेके धर्मराज यह सब वैतरणीके नैर्ऋत्य कोण में ले आवै

प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये ॥ उत्तारणार्थं देवेशि ! वतरिण्यै नमोऽस्तु ते ॥ इति सम्प्रार्थ्य इक्षुदण्डमयं सुदृढं लोहदण्डसमन्वितम् ॥ हेममयं यज्ञपुरुषं एतत्सर्वं वैतरणीसमीपे कृत्वा । वैतरणीनैर्ऋत्यकोणे नौकामाहूय तत्रोपरि कार्पासं कृत्वा सलवणं घृतखण्डं यज्ञपुरुषं च स्थापयेत् ॥ ततो गोऽग्रे यजमानः पृष्ठे नौकां गोपुच्छं च गृहीत्वा ईशानद्वारेण पारं गच्छेत् । ततो गोदानसाङ्गता ॥ कृतैतत्कपिलादानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानाम-गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ (अथा

नावके ऊपर कपास, नोन, घी, खाँड यह सब रखै, इसके बाद गौ को आगे करै यजमान वो नाव पीछे रहै, गौ का पूछ थामकर यजमान वैतरणी के ईशान की तरफ पार होय। गोदान की सांगता दक्षिणा संकल्प करके ब्राह्मण को देय ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै।

अब घोड़ाका दान करै। पहिले घोड़ाका व ब्राह्मणका ३ दफे पूजन करै। बाद कुशा इत्यादि लेकर और केश थाम कर सङ्कल्प पढ़ कर ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। इस के बाद दक्षिणा सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै।

'श्वदानम् । अश्वाय नमः, ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य । त्रिकुशादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्योच्चावचदुर्गभूमिसंतरणकामः अमुमश्वं सूर्यदैवतं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ अद्य कृतैतदश्वदानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ (अथ महिषीदानम्) यमरूपायै महिष्यै नमः ॥ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य ॥ त्रिकुशजला-

अब महिषीदान कहते हैं। महिषी का व ब्राह्मण का ३ दफे पूजन करके हाथ में तीन

१३

१-टि. दन्तैर्गजं घाटकमेव केशैर्गां चापि पुच्छैर्महिषीं तु शृङ्गैः ॥ अथाविकां च स्तननाभिमध्येऽप्युष्ट्रं गलेश्चापि वृषं च अंसैः। खड्गं तु चाग्रैस्तवचक्रमध्यैः केशैस्तु दासीं हृदयेन पत्नीम् ॥

कुशा तिल जल लेके भैंस की सींग थाम के सङ्कल्प करके ब्राह्मण के हाथ में देय । ब्राह्मण

न्यादाय । (अपसव्यम्) अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम दीर्घायुष्यैहिकामुष्मिकयज्ञयाज्ञित्वपितृतारणात्मशुभविंशतिधेनुदानसमफलावाप्तिसर्वदोत्तमफलपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्ध्यर्थं अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गाद्युत्तमलोकनिवासार्थं यमदेवताप्रीत्यर्थं च इमां महिषीं सालङ्कारां रक्तमाल्यां रक्तवस्त्रावृतां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रदोहां हैमतिलकां सप्तधान्ययुतां घण्टाभरणां धेनूपस्करां यमदैवत्यां अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना ॥ महिषी ब्रह्मसूता च लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ प्रार्थिताऽसि मया देवि! यममार्गं निवारय ॥ महिषी यमरूपा त्वं विश्वामित्रविनिर्मिते ! । पूजिता हर मे पापं सर्वदानफलप्रदे ! इन्द्रस्याप्सरसो देवि महिषीरूपविष्णुना ॥ सर्वभाग्यप्रदे देवि दीर्घशृङ्गि ! नमोऽस्तु

ॐ 'स्वस्ति' कहै । महिषी की प्रार्थना मूल में लिखे हुए श्लोक से करै ।

बाद तीन कुशा जल दक्षिणा लेकर सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। अब शिबिकादान कहते हैं। हाथ में तीन कुशा तिल जल लेकर शिबिका का दंडा थामते ॥ कृतैतन्महिषीदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ (अथ शिबिकादानम्) अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य पापक्षयपूर्वकशिवविष्णुसायुज्यावाप्तिकाम इमां शिबिकां यथोपस्करां आङ्गिरोदैवत्यां इष्टलोकावाप्तये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना ॥ शिबिका ते मया दत्ता यथाशक्त्या विभूषिता। द्विज त्वं प्रतिगृह्णीष्व वाञ्छितं तेन मे भव ॥ कृतैतच्छिबिकादानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ कर सङ्कल्प करके ब्राह्मणको देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। बाद शिबिकाको प्रार्थना मूल में लिखे श्लोक से करै। तीन कुशा जल दक्षिणा लेके सङ्कल्प पढ़ कर ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण

'ॐ स्वस्ति' कहै ॥ अब पृथिवीदान कहते हैं । तीन कुशा तिल जव जल हाथ में लेकर सङ्कल्प

स्वस्ति । [अथ पृथ्वीदानम्] अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य समस्तपापक्षयपूर्वकषष्टिवर्षसहस्रमितं स्वर्गे शिवपुरनिवासकामो यथापरिमितां इमां भूमिं सस्योद्भवां सवृक्षफलपुष्पाद्युपेतां विष्णुदैवत्यां अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ब्राह्मणस्तु भूमिप्रदक्षिणां कुर्वन् प्रतिगृह्णीयात् ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु ॥ प्रार्थना ॥ सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता॥अनन्तसस्यफलदामतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले ॥ भूमेः प्रदानात्सफला मम सन्तु मनो-

पढ़ कर ब्राह्मण के हाथ में देय । ब्राह्मण उस भूमि की प्रदक्षिणा करके ग्रहण करै । 'ॐ देवस्य त्वा०' । 'द्यौस्त्वा ददातु' इस मंत्रसे और आगे मूल में लिखे हुए श्लोक से प्रार्थना

करें। तीन कुशा यव जल दक्षिणा हाथमें लेके संकल्प करके ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। अब अपसव्यसे जल भरा १२ कुम्भ अन्न के सहित संकल्प पढ़कर ब्राह्मणों को देय ब्राह्मण लोग 'ॐ स्वस्ति' कहैं। इति वृषोत्सर्गः ॥

रथाः ॥ कृतैतद्भूमिदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥

[अथ द्वादशान्नोदककुम्भदानम्] अपसव्येन दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः। अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य क्षुधातृषानिवारणार्थं इमानि द्वादशसान्नोदककुम्भानि अमुकाऽमुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ इति वृषोत्सर्गप्रयोगः समाप्तः ॥

[अथोत्तमषोडशी] द्वादशप्रतिमासेषु पाक्षिकं च त्रिपाक्षिकम् ॥

अब उत्तम षोडशी कहते हैं कि–१२ महीने का १२ पिण्ड और १ पाक्षिक का (याने एकादशाहका) १ डेढ़ महीना पर (याने त्रिपाक्षिक) १ साढ़े पाँच महीना पर (याने ऊनषाण्मासिक) १ साढ़े ग्यारह महीना पर (याने ऊनाब्दिक) यह सब मिलाकर १६ पिण्ड भया। इस

प्रकार ३ षोडशी का ४८ पिण्ड करने से प्रेतत्व का नाश होता है। जो इस विधि से करेंगे उनके पितर लोग पितर की पंक्ति में प्राप्त होंगे। पितृ पंक्ति में प्रवेश के वास्ते तीन षोडशी करै। जिसकी ३ षोडशी नहीं होती वह प्रेत सुस्थिर रहता है। प्रेतत्व छुटता नहीं। यह गरुड़का

न्यूनषाण्मासिकं पिण्डं दद्यान्न्यूनाब्दिकं तथा ॥१॥ उत्तमं षोडशं चैतन्मया ते परिकीर्तितम्। अर्पयित्वा चरुं तार्क्ष्य! कुर्यादेकादशेऽहनि ॥ २ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाष्टौ श्राद्धं प्रेतत्वनाशनम् ॥ यस्य जातं विधानेन स भवेत्पितृपंक्तिभाक् ॥३॥ पितृपंक्तिप्रवेशार्थं कारयेत्षोडशत्रयम् ॥ एतत् श्राद्धविहीनश्चेत्प्रेतो भवति सुस्थिरम् ॥ ४ ॥ [अथैकादशाहाऽपात्रकश्राद्धप्रयोगः] तत्र मध्याह्ने शुचिराचान्तः शुक्लद्विवासा गोमयोपलिप्तायामपसव्यवत्कृतगोमूत्रमण्डलायां मण्डलाद्बहिः ॐ भूम्यै नमः इति त्रिः यवपुष्पैः सम्पूज्य तस्योपरि कुशासने-

वचन है। आगे एकादशाह प्रयोग कहते हैं। दोपहरमें स्नान करके आचमन करै दो सफेद वस्त्र पहिनकर गोबरसे लिपी भई भूमिमें गौके मूत्रसे मंडल किये गये स्थान के बाहर 'ॐ भूम्यै

नमः, ऐसा कहकर तीन दफे यव जल फूल लेकर जमीन पर छोड़ै। तिसके ऊपर कुशासन बिछा
कर पूर्व मुँह बैठे। 'अपवित्रः' इस श्लोकसे कुशाका जल अपने ऊपर और सामग्री पर छिड़के

षूपविश्य पूर्वाभिमुखः कुशोदकेन॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः, इति मन्त्रेण श्राद्धीयद्रव्याण्यात्मानं च सिञ्चेत्॥ आसनसमीपे तिलतैलेन घृतेन वा दीपं प्रज्वाल्य दिग्रक्षणं कुर्यात्॥ श्वेतसर्षपान्वामहस्ते कृत्वा दक्षिणेनाच्छाद्य॥ ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम!। इदं श्राद्धं हृषीकेश! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥ ॐ प्राच्यै नमः॥ ॐ अवाच्यै नमः॥ ॐ प्रतीच्यै नमः॥ ॐ उदीच्यै नमः॥ ॐ अन्तरिक्षाय नमः॥ ॐ भूम्यै नमः॥ ततः त्रिकुशतिलजला-

और आसनके समीप तिल्लीके तेलका रक्षादीप जलाकर रखै। पीली सरसों बायें हाथमें लेकर
दहिने हाथ से ढँककर 'ॐ नमो नमस्ते' इस श्लोक को पढ़ै। बाद दहिने हाथ से पूरब दक्षिण
पश्चिम और उत्तर 'भूम्यै नमः' इस मंत्रसे क्रमसे फेकै। तीन कुशा तिल जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प

पढ़े। फिर कुशा आदि लेकर संकल्प पढ़कर संकल्प करें। तीन दफे गायत्री पढ़े। अपसव्य हो
के दक्षिण मुँह हो बायाँ पैर मोड़कर मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके आसन देवे। तब

न्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकामः अद्यादीनि यथाकालं षोडशश्राद्धान्यहं करिष्ये ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुकषोडशश्राद्धान्तर्गताद्य श्राद्धमहं करिष्ये ॥ त्रिर्गायत्रीं जपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च ॥ नमः स्वाहाय स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् ॥ अपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुर्मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति मोटकरूपासनं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुख उपविश्य ॥ ॐ छत्राय नमः ॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः, इतिः त्रिः सम्पूज्य ॥ इदं छत्रं

सव्य होकर पूर्व मुँह बैठके छाताका व ब्राह्मणका ३ दफे पूजन करके ब्राह्मण के हाथ में जल देय।

ब्राह्मण 'ददस्व' कहैं। छाते पर जल छिड़कै। कुशा तिल जल व छाता लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहैं। मूल में लिखे हुये श्लोक से प्रार्थना करै और तीन कुशा तिल जल लेकर सङ्कल्प पढ़कर दक्षिणा ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहैं। ब्राह्मण

ददानि, इति द्विजकरे जलदानम् ॥ छत्रमभिषिच्य कुशत्रयतिल-जलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽऽवरणकाम इदं छत्रमुत्तानमङ्गिरोदैवत्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना । इहामुत्राऽऽतपत्राणं कुरु मे केशव प्रभो ! । छत्रं त्वत्प्रीतये दत्तं ममाऽस्तु च सदा शुभम् ॥ कृतैतच्छत्रदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे, ॐ स्वस्ति छत्रदण्डं धारयेत् ॥ तत उपानद्भ्यां नमः ॥ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य॥ इमे उपानहौ ददानि॥ इति द्विजकरे जलदानम्॥

छाता का दंडा धारण करै। तिस के बाद जूता पर अक्षत फूल चढ़ावै और ब्राह्मण को गंध अक्षत फूल से तीन दफे पूजन करै। आगे 'इमे उपानहौ' कहकर ब्राह्मण के हाथ में जल दे

पढ़े । फिर कुशा आदि लेकर संकल्प पढ़कर संकल्प करे । तीन दफे गायत्री पढ़े । अपसव्य हो
के दक्षिण मुँह हो बायाँ पैर मोड़कर मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके आसन देवे । तब

न्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकामः अद्यादीनि
यथाकालं षोडशश्राद्धान्यहं करिष्ये ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥
अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुकषोडशश्राद्धान्तर्गताद्य
श्राद्धमहं करिष्ये ॥ त्रिर्गायत्रीं जपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायो-
गीभ्य एव च ॥ नमः स्वाहाय स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्ज-
पेत् ॥ अपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुर्मोटकादीन्यादाय ॥
अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठ-
ताम् ॥ इति मोटकरूपासनं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुख उ-
पविश्य ॥ ॐ छत्राय नमः ॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः, इतिः त्रिः सम्पूज्य ॥ इदं छत्रं ॥ ७६ ॥

सव्य होकर पूर्व मुँह बैठके छाताका व ब्राह्मणका ३ दफे पूजन करके ब्राह्मण के हाथ में जल देय ।

ब्राह्मण 'ददस्व' कहैं। छाते पर जल छिड़कै। कुशा तिल जल व छाता लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। मूल में लिखे हुये श्लोक से प्रार्थना करै और तीन कुशा तिल जल लेकर सङ्कल्प पढ़कर दक्षिणा ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। ब्राह्मण

ददानि, इति द्विजकरे जलदानम् ॥ छत्रमभिषिच्य कुशत्रयतिल-जलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽऽवरणकाम इदं छत्रमुत्तानमङ्गिरोदैवत्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना । इहामुत्राऽऽतपत्राणं कुरु मे केशव प्रभो ! । छत्रं त्वत्प्रीतये दत्तं ममाऽस्तु च सदा शुभम् ॥ कृतैतच्छत्रदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे, ॐ स्वस्ति छत्रदण्डं धारयेत् ॥ तत उपानद्भ्यां नमः ॥ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य॥ इमे उपानहौ ददानि॥ इति द्विजकरे जलदानम् ॥

छाता का दंडा धारण करै। तिस के बाद जूता पर अक्षत फूल चढ़ावै और ब्राह्मण को गंध अक्षत फूल से तीन दफे पूजन करै। आगे 'इमे उपानहौ' कहकर ब्राह्मण के हाथ में जल दे

ब्राह्मण 'ददस्व' कहै। जूता पर जल छिड़कै। तीन कुशा जल लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण ॐ स्वस्ति' कहै। मूल में लिखे हुये श्लोक से प्रार्थना करै। बाद तीन कुशा आदि लेकर

उपानहावभिषिच्य कुशादीन्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य तप्तबालुकाऽसि-कण्टकित-भूदुर्गसन्तरणकाम इमे उपानहावुत्तानाङ्गिरोदैवत्ये अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। प्रार्थना। उपानहौ प्रदत्ते मे कण्टकादिनिवारणे। सर्वमार्गेषु सुखदे अतः शान्ति प्रयच्छ मे। कृतैतदुपानहानप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐस्वस्ति। इत्युपानहावारोहयेत्॥ ततोऽपसव्यम्॥ दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः॥ ॐ अपहताऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः, इति वामावर्तेन तिलान्विकीर्य॥

दक्षिणासङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मण को देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहै। ब्राह्मण जूता पहिरै। फिर अपसव्य होकर दक्षिण मुख बायाँ पैर मोड़कर 'ॐ अपहता' इस मंत्रसे बायें तरफसे तिल

छिड़कै। 'आयन्तु नः' इस मंत्र को पढ़ै। तिसके बाद अर्घपात्र में दक्षिण को अग्र करके पवित्रा को रखै। 'ॐ शन्नो देवी' इस मंत्रसे अर्घ में जल देय। 'ॐ तिलोऽसि' इस मंत्र से अर्घ में

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः॥ अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ इति जपेत्॥ ततोऽर्घपात्रे अनन्तर्गर्भं दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। ॐ शँय्योरभिस्रवन्तु नः, इत्यर्घपात्रे जलं दत्वा ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवर्निमितः॥ प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितृँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा॥ इत्यर्घपात्रे तिलान्प्रक्षिप्य गन्ध पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्॥ अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं

तिल्ली डालै और चन्दन फूल चुपचाप छोड़ै। अर्घपात्र को बायें हाथ पर रखै। दहिने हाथसे पवित्रा निकालकर भोजनपात्र पर उत्तर को अग्र करके रखै। उसके ऊपर किंचित् दूसरे पात्र

का जल देकर दहिने हाथसे अर्घ को ढाँकै और 'या दिव्या' इस मन्त्रको पढ़ै। मोटकतिल जल लेकर संकल्प करके अर्घका थोड़ा जल पवित्राके ऊपर गिराकर पवित्राको अर्घमें रखके पवित्रा

दत्वा ॥ ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा संबभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः शꣳस्योना सुहवा भवन्तु ॥ इति पठित्वा मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पवित्रोपरि अर्घजलमुत्सृजेत्। ततोऽर्घपात्रं सपवित्रकं पितृवामपार्श्वे पित्रे स्थानमसि इत्यधोमुखं स्थापयेत् ॥ तच्च दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेत् न चालयेत् ॥ ततः श्राद्धदेशे तिलान्विकीर्य दर्भहस्तो भूतले प्रेतमावाहयेत् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ इमं

के सहित अर्घपात्रको आसनके बाँयीं तरफ उलट देय। जब तक दक्षिणासंकल्पका समय न आवै तब तक अर्घपात्र को न हिलावै, न उठावै। श्राद्धके स्थान में तिल छींटै। कुशा हाथ में लेकर

इम लोकं' पढ़ कर प्रेत का आवाहन करै। स्त्री श्राद्ध में भी 'गतोसि' पढ़ै। आत्मउद्देश से आगे मोटक रूप आसन पर गन्धादि चढ़ावै। मोटक आदि लेकर सङ्कल्प करै। बाद 'यथा चक्रायुधो' इस

लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम् ॥ इति ॥ अत्र स्त्रीश्राद्धेऽपि गतोऽसी-
त्येवमेव पठनीयमात्मत्वेनोद्देश्यत्वात् ॥ ततो मोटकोपरि गन्धादि दद्यात् ॥
मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे एतानि गन्ध-
पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्
ततो जलेनासनभोजनपात्रसहितचतुष्कोणं मण्डलं कुर्यात् ॥ यथा चक्रायुधो
विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ॥ एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥ श्राद्धी-
याऽन्नं किञ्चिदुद्धृत्य तिलघृतयुक्तं कृत्वा ॥ ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो

श्लोकसे भोजन पात्रके सहित आसनके चारो तरफ जल घुमावै। श्राद्धके अन्नमें से थोड़ा अन्न लेकर घी मधु मिलाकर 'इदमन्नं' कह करके दक्षिण तरफ कुशापर रख दे। बाद गरमअन्न ताँबे के

पात्र में रख दोनों हाथसे उठा कर मन को स्थिर कर पितर का ध्यान करते हुये १ मनुष्य के भरपूर भोजन भर परोसै। १ दोनियाँ में घी १ दोनियाँमें जल रखै और 'मधुवाता' इस मन्त्र से

नमः ॥ इति दद्यात् ॥ तत उष्णमन्नं ताम्रपात्रेण कराभ्यामादाय मनाक् स्थित्वा पितरं ध्यात्वा पुरुषतृप्तिक्षमं परिविष्यात् ॥ घृतं जलं चोपनीय-मन्नं मधुनाऽभिघारयेत् । ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ॥ मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ मधु मधु मध्वीति च जपेत् । व्यस्ताभ्यां पाणिभ्यां पात्रमा-लभ्य ॥ ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते ऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳसुरे

दोनों हाथसे अन्न पर शहद देय और 'मधुमधु' ऐसा तीन दफे कहै। और दोनों हाथ उलट कर भोजन पात्रको छुवै 'पृथिवी ते पात्रं इदं विष्णु० कृष्णकव्य' इसको पढ़ै। बायां हाथ पात्र में लगा

रहै। दहिने हाथके अङ्गूठाको अन्नमें, जलमें, घी में फिर अन्न में लगावै। 'ॐ अपहता' इस मन्त्रसे अन्न पर तिल्ली छीटै। मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करै। सव्य होकर प्रणव सहित व्याहृति

स्वाहा ॥ ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्। ॐ इदमन्नम्। इमा आपः। इदमाज्यम्। इदं कविरिति दक्षिणाङ्गुष्ठमन्नजलघृतादिषु निवेश्य ॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः, इत्यन्नोपरि तिलान्विकीर्य ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इत्युत्सृजेत्। सव्यं सप्रणवां सव्याहृतिकां गायत्रीं ॐमधुव्वातेत्यादि ऋचं मधु मधु मध्वीति च जपित्वा ॥ ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु ॥ इति पठित्वा श्राद्धकर्ता दर्भेष्वासीनः ॥ सप्रणवां सव्याहृतिकां गायत्रीं मधुव्वाता इत्यादि ऋचं मधु मधु मध्वीति च

के गायत्री तीन दफे जपै और 'मधुव्वाता' जपै। मधु मधु कहै। 'अन्नहीनं' इस श्लोक को पढ़ै। श्राद्ध करने वाला कुशा पर बैठे। फिर गायत्री 'मधु वाता' मधु मधु मधु ऐसा कहै।

और 'कृणुष्वपाजः' रक्षोघ्नी पांच मन्त्र पढ़ै। सहस्रशीर्षा १६ मन्त्र, आशुःशिशान १२ मन्त्र पढ़ै। जपेत् ॥ ॐ कृणुष्व पाजः प्प्रसितिन्न पृथ्वीं य्याहि राजेवामवाँ२ ऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि व्विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्काः ॥२॥ प्प्रति स्पपशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः ॥ यो नो दूरे ऽअघ शꣳसो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्व्यथिरादधर्षीत् ॥३॥ उदग्ग्ने तिष्ठ प्प्रत्यातनुष्व न्न्यमित्राँ२ ऽओषतात्तिग्महेते ॥ यो नो ऽअरातिꣳ समिधा न चक्रे नीचा तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥४॥ ऊर्द्ध्वो भव प्प्रतिविद्ध्याद्ध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्व्यान्न्यग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि यातु जूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ इति रक्षोघ्नमन्त्रान्पठित्वा ॥ भूमौ तिलान्विकीर्य ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्न्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ॥ असुँ य ऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ॐ सहस्र-

'नमस्तुभ्यं' इस श्लोकको पढ़ै । अपसव्य होकर भोजनपात्रके समीपमें तीन कुशा जल छींटकर रखै । सम्पूर्ण प्रकार के अन्न जल तिल घृत के सहित १ दोनिया में लेकर उस दोनिये को

शीर्षाषोडशमन्त्रान् पुरुषसूक्तम् ॥ ॐ आशुः शिशान १२ मन्त्रान् अप्रतिरथं च जपेत् । नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे ! ॥ नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति पठेत् ॥ अपसव्यम् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधावास्तृतदक्षिणाग्रकुशत्रयीं भूमिं प्रोक्ष्य सर्वप्रकारमन्नं तिलघृतसहितं जलेनाऽऽप्लाव्य गृहीत्वा ॥ ॐ अनग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ इति मन्त्रेण कुशोपरि तदन्नं विकिरेत् ॥ ततः सव्यम्-आचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यं कृत्वा ॥ उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं हस्तैकप्रमाणं दक्षिणप्रवणं चतुरङ्गुलोच्छ्रितं स्थानं निर्माय

'अनग्निदग्धा' इस मन्त्रसे कुशेके ऊपर रख दे । तिसके बाद सव्य होकर आचमन करै । विष्णु का ध्यान करै । अपसव्य हो भोजन पात्रके समीप में १ हाथ लम्बी चौड़ी ४ अङ्गुल की ऊँची

दक्षिणाको ढालू ऐसी १ वेदी बनावै। उस वेदीके मध्यमें बाँयें हाथसे कुशा एक जुट्टा लेय दहिने हाथ से बाँया हाथ लगा हुवा रहै ऐसी १० अंगुल की १ रेखा दक्षिणाग्र 'अपहता' इस

तन्मध्ये वामहस्तेन दर्भपिञ्जुलीमादाय तन्मूलेन वामान्वारब्धदक्षिणकरेण प्रादेशमात्रं लिखेत् ॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः ॥ इति दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि निःक्षिपेत् ॥ तदुपरि ॥ ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ॥ परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् । इति रेखोपरि उल्मुकं भ्रामयित्वा दक्षिणतः क्षिपेत् ॥ रेखोपरि उपमूलसकृल्लूनकुशान्दक्षिणाग्रानास्तीर्य ॥ सव्यं कृत्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

मन्त्र से खींचै। कुशाका जुट्टा उत्तर तरफ फेंकै। उस रेखा के ऊपर 'ॐ ये रूपाणि' इस मन्त्रसे अङ्गार घुमाकर दक्षिण के तरफ रखै। बाद रेखाके ऊपर मूलके सहित जरासा मूल कटा हुवा तीन कुशा दक्षिणाग्र बिछावै। सव्य होकर 'ॐ देवताभ्य' इस मन्त्र को तीन दफे पढ़ै।

अपसव्य होकर पलाशके दोनियेमें तिल जल चन्दन फूल डालकर बाँयें हाथमें लेय दहिने हाथमें मोटक तिल जलले संकल्प पढ़कर वेदी पर जो कुशा बिछाया है उसके मध्य में आधा जल

इति त्रिर्जपेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ पर्णपुटके तिलजलगन्धपुष्पयुतं वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते मोटकादिकमादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे पिण्डस्थाने ऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति कुशमध्ये अवनेजनजलं किञ्चिद्दद्यात् ॥ किञ्चिदवशेषयेदग्रे निधाय ॥ ततः श्राद्धशेषमन्नं सर्वव्यञ्जनतिलमधुघृतयुतमेकीकृत्य एतेन बिल्वप्रमाणं पिण्डं निर्माय ॥ घृतमध्वभिघारितं कृत्वा दक्षिणहस्तेनादाय मोटकादींश्चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोप-

गिरावै। आधा जलके सहित दोनिया आगे रखै। तिसके बाद श्राद्ध का शेष (बचा) जो अन्न सम्पूर्ण व्यंजन तिल शहद घी सब मिलाकर बेल के बराबर १ पिण्ड बनावै उसमें घी शहद लगाकर दाहिने हाथ में मोटक तिल जल और पिण्ड लेकर संकल्प पढ़कर—

वेदीपररखै। कुशाकेजड़में हाथपोछै। सव्यहोकर आचमन करै भगवानका स्मरणकरै। अपसव्य होकर बाँये तरफ से उत्तर मुँह हो 'अत्र पितर' इस मन्त्र को पढ़कर मनको स्थिर करके स्वाँस खींचै सुखके

तिष्ठताम् ॥ इति कुशोपरि अवनेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणकरेण पिण्डं दद्यात् ॥ आस्तृतदर्भमूले करं प्रोञ्छ्य ॥ सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यम् ॥ ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व ॥ इति पठित्वा वामावर्तेनोदङ्मुखो भूत्वा मनाक्स्थित्वा श्वासं नियम्य तेनैव यथासुखं पर्यावर्त्तयन् पितरं भास्वरमूर्तिं ध्यायन् ॥ ॐ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ अवनेजनपात्रमादाय वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥

सहित मुँह घुमाते भये पितरको भास्वर मूर्तिका ध्यान करतेहुए 'ॐ अमीमदन्त' इसमंत्रको पढ़े दक्षिण को स्वास छोड़े अवनेजनका बचा हुवा जल वो मोटकतिल जल लेकर संकल्प पढ़के पिंड के ऊपर

जल चढ़ावै। इसके बाद नीवीको त्यागदे, सव्य होके आचमन करै, विष्णु का ध्यान करै, अपसव्य होकर बाँये हाथसे सूत लेकर दहिने हाथसे थामकर पिण्ड पर 'एतत्ते पितर्वास' इस वाक्यसे चढ़ावै

ततो नीवीं विस्रस्य ॥ सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यम् ॥ वामेन पाणिना धृतं सूत्रं दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा, ॐ एतत्ते पितर्वासः। इति पिण्डोपरि सूत्रं धृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत आद्यश्राद्धपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ ततस्तूष्णीं पिण्डे गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलानि दद्यात् ॥ ततः पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे निकिरेत् ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु ॥ इति जलम् ॥ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम् । अक्षतं चारिष्टमस्तु ॥ इति तण्डुलान् भोजनपात्रे

मोटक आदि लेकर संकल्प पढ़ कर जल छोड़ देवे। तिसके बाद चुपचाप पिण्ड पर चन्दन फूल धूप दीप पान सोपाड़ी देय और पिण्डसे बचाहुवा अन्नपिण्डके समीपमें रखै। बाद 'शिवा आपः' इससे जल, 'सौमनस्य' इससे फूल, 'अक्षतं' इससे अक्षत भोजन पात्र पर देय मोटक तिल जल लेकर संकल्प

पढ़ कर अक्षय्योदक देय। तिसके बाद सव्य होकर पूरब मुँह अँजुली करै। सुन्दर मनसे दक्षिण दिशा को देखै 'अघोरः' इसको पढ़े पिण्ड के ऊपर पूर्वाग्र जल धारा देना यह चलन है। पूर्व मुँह

दद्यात्॥ततो मोटकादीन्यादाय॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य श्राद्ध श्राद्धे तत्रैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ॥ इत्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुखः कृताञ्जलिस्तन्मनाः सुमनाः दक्षिणादिशं पश्यन्॥ अघोरः पिताऽस्तु, इति पठेत् ॥ अत्र समाचारात्पूर्वाभिमुखः पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जल-धारां दद्यात् ॥ इत्याचारः ॥ ततः पूर्वाभिमुखः ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो माव्यगमद्बहु देयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥ इति पठेत् ॥ ततोऽपस-

होकर 'गोत्रन्नो' यह पढ़कर पितृसे आशीर्वाद मांगै। अपसव्य होके पवित्राके सहित तीन कुशा पिण्ड

के ऊपर दक्षिणाग्र रखै तिसपर जल धारा या पय (दूध) धारा देय तिसके बाद झुककर पिण्डकोसूंघ के उठावै पिण्डके नीचे का कुशा और अङ्गार जो घुमाकर दक्षिणमें रखा रहा सो दूसरे अग्निमें

व्यम् ॥ सपवित्रकुशत्रयं पिण्डोपरि दक्षिणाग्रं धृत्वा पुटके जलं गृहीत्वा ॥ ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम् ॥ स्वधास्थ तर्पयत मे पितरम् ॥ इति दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ ततो नम्रीभूय पिण्डमाघ्रा- योत्थापयेत् ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ ततोऽर्घपात्रमुत्ता- नीकृत्य मोटकादीन्यादाय दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुर- मुकप्रेतस्य कृतैतदाद्यश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ततो दक्षिणपाणिना पात्रब्रा- ह्मणस्य दक्षिणपाणिं गृहीत्वा शय्याऽऽसनमञ्जनं कङ्कतिकाञ्चाऽर्चयेत् ब्राह्मण-

डालै अर्घपात्रको उलट देय मोटक तिल जल दक्षिणा लेकर संकल्प पढ़ कर ब्राह्मणको देय ब्राह्मण ॐ 'स्वस्ति' कहै तिसके बाद दहिने हाथसे ब्राह्मण का दहिना हाथ थाम कर

शय्या इत्यादि का स्पर्श करावै, ब्राह्मण शय्या इत्यादि को स्पर्श कर शय्या पर घड़ी भर विश्राम करै, सव्य होकर आचमन करै 'ॐ देवताभ्य' यह मन्त्र को तीन दफे पढ़े अपसव्य होकर दोनों हाथ से श्राद्धका रक्षा दीप बुझा हाथ पैर धोवै सव्य होकर आचमन

श्राऽञ्जनं कङ्कतिकाञ्चादाय श[य्या]माक्रम्य मुहूर्त्तं विश्रामयेत् ॥ सव्यं कृत्वा-ऽऽचम्य ॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत् ॥ अपसव्यम् ॥ पाणिभ्यां श्राद्धीय-दीपं निर्वाप्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य । सव्येनाचम्य श्राद्धसम्पूर्णकामः विष्णुं स्मरेत् ॥ ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः। इति एकादशाहप्रयोगः। (अथ मासिकश्राद्धप्रयोगः) आचम्य, प्राणानायम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरे-

करै श्राद्धके पूर्ण के वास्ते 'प्रमादात्' इस श्लोकको पढ़कर विष्णु का ध्यान करै ॥ इति भाषा-टीकायां एकादशाहप्रयोगः ॥ अब मासिक श्राद्धको कहते हैं। आचमन प्राणायाम करके पवित्री अनामिकामें पहिने। 'अपवित्रः' इस श्लोकसे अपने ऊपर और श्राद्ध सामग्री पर जल कुशा

से छिड़कै रक्षादीप जलाकर रखै, सफेद सरसों बायें हाथ में लेकर दहिने हाथसे ढँककर 'नमो नमस्ते' यह श्लोक पढ़े बाद उस सरसों को दाहने हाथ से पूरब, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर भूमि

त्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥कुशेन श्राद्धीयद्रव्याण्यात्मानं च सिञ्चेत्॥ रक्षादीपं प्रज्वाल्य ॥ गौरसर्षपान्गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ नमो नमस्ते गोविन्द ! पुराण पुरुषोत्तम ! ॥ इदं श्राद्धं हृषीकेश ! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ ॐ प्राच्यै नमः ॥ ॐ अवाच्यै नमः ॥ ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः ॥ ॐ अन्तरिक्षाय नमः ॥ ॐ भूम्यै नमः ॥ ततो वामे नीवीबन्धनमित्याचारः ॥ ॐ यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः, इति त्रिः सम्पूज्य ॥ त्रिकुशतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुक-षोडशश्राद्धान्त-

पर फेंकै, शेष बचै सो कमर के बाँये तरफ खोंस ले (किसी का मत है) इसको नीवी बन्धन कहते हैं, आगे यव फूल लेकर 'श्राद्धभूम्यै' कहकर तीन दफे जमीन पर डालै। तीन कुशा तिल जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प पढ़े।

यदि उस सालमें अधिक महीना होनेवाला होय तो षोडश श्राद्ध जो संकल्पमें वाक्य है उसके जगह
में सप्तदश श्राद्ध जोड़ देना और सालभरका एक साथ सङ्कल्प करना हो तो प्रथममासिकसे लेकर

र्गत-प्रथममासिकश्राद्धमहं करिष्ये । (तत एकादशमासाभ्यन्तरेऽधिमासपाते चेत् षोडशपदस्थाने सप्तदशपदं तत्र प्रयोज्यम्) एकतन्त्रेण सङ्कल्पः (अद्या-मुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुकषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रथममासिक-त्रिपाक्षिक-द्वितीयमासिक-तृतीयमासिक - चतुर्थमासिक - पञ्चममासिकोनषाण्मासिक-षाण्मासिक-सप्तममासिका- ऽष्टममासिक-नवममासिक-दशममासिकैकादशमासिकोनवार्षिक-द्वादशमासिकश्राद्धानि (एकतन्त्रेणाऽहं करिष्ये) अधिमासपाते एकादशमासिकाऽनन्तरं द्वादशमासिकं तत ऊनवार्षिकं ततस्त्रयोदशमासिकं श्राद्धमिति क्रमः) ततस्त्रिर्गायत्रीं जपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च

द्वादश मासिकतक उच्चारण करै और बीचमें अधिमास होयतो एकादश मासिकके बादद्वादशमासिक
उसके बाद ऊनवार्षिक तब त्रयोदशमासिक का उच्चारण करै। यह क्रम है (तीन दफे गायत्री पढ़े

'ॐ देवताभ्य' इसको तीनदफे पढ़ै। उसकेबाद अपसव्य हो, मोटकतिलजल ले 'अद्यामुकगोत्र पढ़कर आसन देय। एक सङ्ग सब महीनेका संपूर्ण संकल्प करनाहो तो पहिलेकहे मुताबिककरै। 'ॐ अपहता'

महायोगीभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत्। ततोऽपसव्यम्। मोटकतिलजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् (वा एकतन्त्रेण सङ्कल्पः। तद्यथा। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिक-त्रिपाक्षिक-द्वितीयमासिक-तृतीयमासिक-चतुर्थमासिक-पञ्चममासिक ऊनषाण्मासिक-षाण्मासिक-सप्तममासिक अष्टममासिक-नवममासिक-दशममासिकैकादशमासिक-ऊनवार्षिक-द्वादशमासिकश्राद्धेषु इमानि आसनानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्) इत्युत्सृजेत्। ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳪसि वेदिषदः। इति वामावर्तेन श्राद्धदेशे तिलान्विकीर्य। ॐ आयन्तु

इस मंत्रसे बाँयी तरफसे श्राद्धस्थान में तिल छिड़कै 'ॐ आयन्तु नः' इस मंत्रको पढ़कर आवाहन करै

दोनियाँमें दक्षिणको अग्र करके पवित्र रखै 'ॐ शन्नोदेवी' से जल डालै 'ॐ तिलोऽसि' से तिल्लो डालै, चन्दन फूल चुपचाप डालै वह अर्घपात्र बायें हाथपर रखै उसमें का पवित्रा भोजन पात्रपर

नः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्नन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ इति मन्त्रेणावाह्य ॥ ततः पुटकादौ दक्षिणाऽग्रं पवित्रं धृत्वा ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शँ य्योरभिस्रवन्तु नः । इति पुटके जलं क्षिपेत् । ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा, इति पुटके तिलान् क्षिपेत् ॥ गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ तदर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा, दक्षिणेन पाणिना पुटकमाच्छाद्य इमं मन्त्रं पठेत् ॥ ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा संबभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः

उत्तराग्र रखै । तिसके ऊपर थोड़ादूसरे पात्रका जलदे अर्घपात्रको दहिनेहाथसे ढँके 'ॐ या दिव्या'

यह पढ़े बाद मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प पढ़कर पवित्रा पर अर्घका जल थोड़ा देय, पवित्रा उठा कर अर्घ में रख के आसन के बाँये तरफ 'पित्रे स्थानमसि' का उच्चारण कर उलट दे जब

शिवाः शऽस्योना सुहवा भवन्तु ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुक-गोत्र पितुरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तत्रोपतिष्ठ-ताम् ॥ इति पवित्रोपरि अर्घजलमुत्सृजेत् ॥ ततः पवित्रसहितमर्घपात्रमा-सनवामपार्श्वे ॐ पित्रे स्थानमसि, इति न्युब्जीकुर्यात् ॥ ततो दक्षिणादान-पर्यन्तं नोद्धरेन्न चालयेत् ॥ ततस्तूष्णीं गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीत-वासांसि दद्यात् ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ ततः आसनस्य भोजनपात्र-

तक दक्षिणाका समय न आवै तब तक उलटा भया अर्घ को न हिलावै, न उठावै तिसके बाद चुप-चाप चटरूप आसन पर चन्दन फूल धूप दीप सोपाड़ी जनेऊ वस्त्र चढावै मोटक तिल जल लेके सङ्कल्प करै, तिसके बाद जल लेके आसन भोजनपात्र के चारो तरफ घुमावै ।

यथाचक्रायुधो इस श्लोकसे बाद श्राद्धके लिये जो पाकबनाया है उसके ऊपरसे अन्न ले घृत शहदतिल मिलाकर १ दानियामें रखै ॐ इदंमन्नं कहकर दक्षिण तरफ कुशा पर रख देय बाद तामेके बरतन

सहितस्य चतुर्दिशं मण्डलं कृत्वा ॥ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ॥ एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥ ततो श्राद्धोयान्नाग्रभागं घृतव्यञ्जनतिलयुतं पुटकादौ कृत्वा ॐ इदमन्नं एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ॥ इति कुशोपरि दक्षिणत उत्सृजेत् ॥ ततस्ताम्रपात्रादिस्थितमन्नं हस्ताभ्यामादाय पितरं ध्यायन् भोजनपात्रे उपनयेत् ॥ पुटके घृतं जलं चोपनीय ॥ अन्नोपरि हस्तद्वये गृहीतपात्रेण मधु दत्वा ॥ ॐ मधु व्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः॥ माध्वी-

में अन्न रखै दोनों हाथसे उठाकरपात्र पितरका ध्यानकर भोजन पात्र पर परोसै और १ दोनियामें घी १ दानियामें जल रखै और दोनों हाथसे शहद लेकर ॐ मधुवाता इस मंत्र से अन्नके ऊपर गिरावै

तिस के बाद दोनों हाथ भोजन पात्र पर उलटै और 'पृथिवी ते पात्रं इदं विष्णु कृष्णकव्य' इस को पढ़े बाँया हाथ भोजन पात्र में लगा रहै, दहिने हाथ के अंगूठा से 'इदमन्नं' कह कर

गावो भवन्तु नः ॥ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ ततो व्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यामन्नपात्रमालभ्य । ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽमृते ऽमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पांसुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम् ॥ इति पठित्वा ॥ ॐ इदमन्नम् । ॐ इमा आप० । ॐ इदमाज्यम् ॥ ॐ इदं कविरिति पुनरन्ने । दक्षिणाङ्गुष्ठं निवेश्य ॥ ॐ अपहतेति अन्नोपरि तिलान्प्रक्षिप्य मोदकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं

अन्नमें, 'इमाआपः' कह कर जलमें, 'इदमाज्यं' कह कर घीमें, 'इदं कविः' कह कर फिर अन्नमें लगावै 'ॐ अपहता' इस मन्त्रको पढकर अन्नपर तिल छिड़कै, मोदक तिल जल लेकर सङ्कल्प करै ।

उसके बाद सव्य होके तीन दफे गायत्री पढ़ै—'ॐमधुवाता' ३ ऋचा 'ॐमधुमधु' यह पढ़े। 'अन्नहीनं' इस

ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ ततो सव्यं गायत्रीं त्रिर्जपित्वा ॥ ॐ मधु व्वाता० मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु ॥ ततः कुशेषूपविश्य ॥ पुनर्गायत्रीं ३ मधुव्वाता ३ मधुमधुमध्विति च जपेत् ॥ रक्षोघ्नमन्त्रान् जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐकृणुष्व पाजः प्प्रसितिन्न पृथिवीं य्याहि राजे वामवाँ२ ऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्प्रसितिन्द्रूणानोस्तासि विद्ध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव भ्भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूꣳष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितोव्विसृज व्विष्ष्व गुल्ल्काः ॥ २ ॥ ॐ प्प्रतिस्प्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः ॥ यो नो दूरे ऽअघशꣳसो यो ऽअन्त्यग्ग्ने मा किष्टे व्यथि-

श्लोकको कहै बाद कुशापर बैठे, फिर तीन दफे गायत्री 'मधुवाता ॐकृणुष्वपाजः' रक्षोघ्नी ५ मंत्र पढ़े

अपसव्य होकर जमीनपर तिल छींटे। 'उदीरता' यह पितृका मंत्र पढ़े। 'सहस्रशीर्षा१६मंत्रआशुः१२

राद्धर्षीत् ॥ ३ ॥ ॐ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्न्यमित्राँ२ ॥ ऽओषता-त्तिग्महेते ॥ यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥४॥ ऊर्ध्वो भव प्रति विद्ध्याद्ध्यस्म्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्न्यग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ अपसव्यम् ॥ भूमौ तिलान्विकीर्य ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ॥ असुँ य ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ॐसहस्र-शीर्षा० १६ मन्त्रपुरुषसूक्तम् ॥ ॐ आशुः शिशानः १२ मन्त्रान् अप्रतिरथं च पठेत् ॥ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे ! ॥ नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति पठेत् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधावास्तृतकुशत्रयीं

मंत्र' अप्रतिरथ सूक्त 'नमस्तुभ्यं' यह सब पढ़े। उसके बाद भोजनपात्रके समीपमें तीन कुशासे जल छींटे

वहीं पर तीनों कुशा भी रखदे और १दोनियाँमें अन्न घृत व्यंजन तिलजल लेकर'अनग्नि दग्धा'पढ़ के कुशाके ऊपर रखदे। सव्य होके आचमन करै विष्णुका ध्यान करै अपसव्य होय पिंडाके वास्ते

भूमिं प्रोक्ष्य पुटके घृतव्यञ्जनतिलयुतमन्नं कृत्वा वारिणाऽऽप्लाव्य ॥ अनग्निदग्धाश्च ये जीवा ये ऽप्रदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ इति तदन्नं कुशोपरि विकिरेत्। ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यम् ॥ पिण्डार्थं वेदिकां निर्माय ॥ तन्मध्ये वामहस्तोपेतदक्षिणहस्तगृहीतदर्भपिञ्जुलीमूलेन प्रादेशमात्रिकां रेखां कुर्यात्॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः ॥ दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत् ॥ ततो रेखोपरि अङ्गारं भ्रामयित्वा ॥ ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ॥ परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥

पहिले के तरह के १ वेदी बना कर उस पर कुशाके जड़ से १० अंगुल की रेखा 'ॐ अपहता' इस मन्त्र से देय कुशा को उत्तर में फेंकै उस रेखा पर 'ये रूपाणि' इस मन्त्र से अङ्गार घुमा कर,

दक्षिणमें रखै, रेखापर दक्षिणाग्र तीनकुशा जरासा जड़कटाहुवा बिछावे। सव्य होके 'ॐदेवताभ्यः' इसकोतीन दफेपढ़े। अपसव्य होय १दोनियामें जलतिल चन्दनफूल रखै मोटकतिलजल लेकर संकल्प

अङ्गारं दक्षिणतस्त्यजेत् ॥ ततो रेखोपरि उपमूलसकृल्लूनकुशत्रयं दक्षिणाग्रमास्तीर्य ॥ सव्यम् ॥ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ पुटके तिलजलगन्धपुष्पाणि कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति कुशोपरि दद्यात् ॥ ततस्तिलघृतमधुयुतेनाऽन्नेन पिण्डं कृत्वा मधुघृताभ्यामभिघार्य्य दक्षिणहस्तेन मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत

करके दोनियाका आधा जलवेदोके कुशापरदेय आधा जलसहित दोनिया आगेरखै। उसकेबाद तिल शहद घीके सहित अन्न लेकर पिण्ड बनावे घी शहद लगावै पिण्ड मोटकतिल जल दहिने हाथ में

लेकर संकल्प पढ़कर कुशा पर रखै और पिंडके नीचे वाले कुशाको जड़में हाथ पोंछै। सव्य होके आचमन करै। विष्णुका ध्यान करे। अपसव्य हो दक्षिण मुख होके 'ॐ अत्र पितर' इस मन्त्र

प्रथममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति वामान्वारब्धदक्षिणहस्तेनाऽवनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात् ॥ ततो दर्भमूले करं प्रोक्ष्य ॥ सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व ॥ इति उत्तराभिमुखो श्वासं नियम्य पितरं भास्वरमूर्तिं ध्यायन् पर्यावर्तयन् ॥ ॐ अमी मदन्त पिता यथाभागमावृषायिष्ट, इति पठेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्रं दत्तावशिष्टजलयुतं वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते मोटकतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितुरमुकप्रेत प्रथममा-

को पढ़े। उत्तर मुँह हो स्वांस खींचे भास्वर मूर्ति पितरका ध्यान करके मुँह घुमाते भये 'ॐ अमी मदन्त' पढ़ै दक्षिणको स्वांस छोड़े, उसके बाद अवनेजन से बचा हुआ दोनियाँका जल और मोटकतिल जल ले के संकल्प पढ़कर दोनियाका जल पिण्डपर देय। उसके बाद नीवी को

त्याग करै। सव्य होके आचमन करै। अपसव्य होयके बाँये हाथ से सूत उठाकर दहिने हाथसे थामकर दोनों हाथ से पिण्ड के ऊपर 'एतत्ते पितर्वासः' कहकर चढ़ाय देय। मोटक तिल जल

सिकश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निद्दव ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततो नीवीं विस्रस्य ॥ सव्यमाचम्य ॥ अपसव्यम् ॥ वामेन पाणिना धृतं सूत्रं दक्षिणहस्तेनादाय उभाभ्यां हस्ताभ्यां पिण्डोपरि एतत्ते पितर्वासः ॥ इति सूत्रं धृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे पिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति सूत्रमुत्सृजेत् ॥ ततस्तूष्णीं गन्धपुष्पादिकं पिण्डे दद्यात् ॥ पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु ॥

१६ इति जलम् ॥ ॐ सौमनस्यमस्तु ॥ इति पुष्पम् ॥ ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु, इति

ले के संकल्प करके त्याग करै। बाद चुपचाप पिण्ड के ऊपर चन्दन फूल पान इत्यादि चढ़ावै और पिण्डसे बचा हुवा अन्न पिण्डके समीपमें रखै। बाद 'शिवा आपः' इससे जल 'सौमनस्य' से

पुष्प, 'अक्षतं चारिष्टं' से अक्षत यह सब भोजन पात्र पर डालकर मोटक तिलजल लेकर संकल्प पढ़के अक्षय्योदकदान दे । सव्य होकर 'ॐ अघोरः पितास्तु' ऐसा कहकर पिण्डके ऊपर पूर्वाग्र

तण्डुलान्भोजनपात्रोपरि क्षिपेत् ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ॥ इत्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा ॥ ॐ अघोरः पिताऽस्तु ॥ इति दक्षिणां दिशं पश्यन् पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ ततः पूर्वाभिमुखो ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहुभवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु ॥ मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥ सन्त्वेताः सत्या आशिषः, इति प्रार्थनां कुर्यात् ॥ ततः अपसव्येन

जलधारा देवे, यह चलन है । उसके बाद पूरब मुँह होकर 'गोत्रन्नो' यह पढ़ के पितृ से-आशिर्वाद माँगै (अर्थात् प्रार्थना करै) । बाद अपसव्य होकर,

सहित पवित्राके तीन कुशा दक्षिणाग्र पिण्डके ऊपर रखै, उसपर १ दोनियामें जल या दूध लेकर 'ॐ ऊर्जं' पढ़कर दक्षिणाग्र जलधारा या पय धारा देय। नम्र होके पिण्डको सूँघकर उठावै और

पिण्डोपरि सपवित्रान्कुशान्धृत्वा ॥ ततः पुटकादिस्थजलं गृहीत्वा ॥ ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम्। स्वधास्थ तर्प्पयत मे पितरम्। इति कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ ततो नम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्प्रथममासिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इति दक्षिणां दद्यात् ॥ सव्यमाचम्य ॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ उभाभ्यां हस्ताभ्यां दीपं निर्वाप्य ॥ हस्तौ पादौ

पिंडके नीचेका कुशा व अङ्गाराको दूसरी अग्निमें डालै, अर्घपात्रको सीधाकरके मोटकतिलजल लेकर संकल्पउच्चारण करके दक्षिणादेय। सव्य होकर आचमनकरे। 'ॐदेवताभ्यः' इसमंत्रको तीनदफे पढ़ै

उसकेबाद अपसव्य होय दोनोंहाथसे रक्षादीपको बुझावै। हाथपैर धोवै। सव्यहो,के आचमन करै। 'प्रमादात्' इस श्लोकको पढ़कर श्राद्धपूर्तिके वास्ते विष्णुका स्मरण करै। इसीप्रकारसे त्रिपाक्षिक

प्रक्षाल्य ॥ सव्यमाचम्य ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवे नमः, इति त्रिः ॥ एव त्रिपाक्षिकश्राद्धमपि कर्त्तव्यम्। तच्च मासिकवत्। एवमेव द्वितीयमासिक-तृतीयमासिक-चतुर्थमासिक-पञ्चममासिक-ऊनषाण्मासिक-षाण्मासिक-सप्तममासिक-अष्टममासिक-नवममासिक-दशममासिक-एकादशमासिक-ऊनवार्षिक-द्वादशमासिकश्राद्धेषु तत्तत्पदप्रक्षेपेण प्रयोगो ऊह्यः ॥ अधिकमासपाते एकादशमासिकानन्तरं द्वादशमासिकं तत ऊनवार्षिकं ततस्त्रयोदशमासिकं श्राद्धमिति क्रमः ॥ इति मासिकश्राद्धप्रयोगः ॥

इत्यादि श्राद्ध आगे संकल्पमें लिखे हुये क्रमसे करना। इति भाषाटीकायां मासिकश्राद्धप्रयोगः ॥

अब सपिण्डन श्राद्धको कहते हैं। आचमन प्राणायाम करके 'अपवित्रः' इससे अपने और श्राद्धकै सामग्री पर कुशासे जल छिड़कै और तिल्लीके तेलका ५ रत्नादीप जला कर पाँचों आसनकेपास

अथ सपिण्डनश्राद्धप्रयोगः। आचम्य। प्राणानायम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः,इत्यात्मानं श्राद्धसामग्रीं च प्रोक्षयेत् ॥ ततः आसनसमीपेषु तिलतैलेन पञ्चदीपान्स्थापयेत् ॥ पीतसर्षपान्गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ ॐ नमो नमस्ते० ॥ ॐ प्राच्यै नमः ॥ ॐ अवाच्यै नमः। ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः। ॐ अन्तरिक्षाय नमः। ॐ भूम्यै नमः ॥ ततो यवपुष्पैः ॐ श्राद्धभूम्यै नमः ॥ इति त्रिः सम्पूज्य ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुक-

रखै अथवा १ दीप रखै। बाद पीली सरसों बाँये हाथ में रख कर दहिने हाथसे ढँककर 'नमोंनमस्ते' पढ़ै। बाद दहिने हाथसे पूरब दक्षिण पश्चिम उत्तर भूमि पर सब जगह छींटै। बाद यव फूल लेकर तीन

दफे जमीन पर छोड़ै। बाद तीन कुशा तिल जल लेकर प्रतिज्ञा सङ्कल्प पढ़ै। अधिमास यदि होय तो पहिले की तरह जोड़लेना। आगे तीन दफे गायत्रीपढ़ै और 'देवताभ्य' यह भी तीन

गोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुक-षोडशश्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धमहं करिष्ये। (अधिमासपाते चेत् षोडशपदस्थाने सप्तदशपदं प्रयोज्यम्) गायत्रीं त्रिर्जपेत्॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत्॥ ततो देवश्राद्धार्थोपकल्पितासनादिदेशमागत्योदङ्मुखोपविश्य कुशत्रययवजलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानामऽमुकामुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः॥ इति पश्चिमदिशि विश्वेदेवासने पूर्वाग्रं कुशत्रयरूपं स-जल-यवप्रोक्षितमुत्सृजेत्॥ ॐ विश्वान्देवानहमावाहयिष्ये॥ ॐ

दफे पढ़ै, बाद विश्वेदेव के आसनके पास उत्तर मुँह बैठे, तीन कुशा यव जल लेकर सङ्कल्प पढ़ कर विश्वेदेव को आसन देय और विश्वेदेव का आवाहन 'विश्वेदेवास' इस मन्त्र से करै।

'ॐ यवोऽसि' इस मन्त्रसे यव छींटै। 'ॐविश्वेदेवा शृणुते' इत्यादि मन्त्रोंको पढ़ै। उसके बाद दोनि-
यामें पूरबको अग्रकरके पवित्रा धरै 'ॐ पवित्रेस्थो' इस मंत्र से 'ॐ शन्नोदेवी' इसमंत्रसे दोनिया में

विश्वेदेवास ऽआगत शृणुता म ऽइमꣳ हवम्॥ एदं बर्हिर्निषीदत॥इत्यावाह्य॥
ॐ यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः॥ इति यवान्विकीर्य॥ ॐ विश्वेदेवाः
शृणुते मꣳ हवं मे ये ऽअन्तरिक्षे ये ऽउप द्यविष्ठ॥ ये ऽअग्निजिह्वा उत वा यजत्रा
ऽआसद्याऽस्मिन्न्वर्हिषि मादयध्वम्॥ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महा-
बलाः। ये चाऽत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥ इति पठेत्॥ ततो
पुटके पूर्वाग्रं पवित्रं धृत्वा ॐपवित्रे स्थेति मन्त्रेण॥ ॐशन्नो देवीरिति पुटकेजलं
क्षिपेत्॥ ॐ यवोसीति पुटके यवान्क्षिपेत्॥ गन्धपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्॥
तदर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे पूर्वाग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुद-

जल डालै। 'ॐयवोसि' इस मन्त्रसे दोनियामें यव डालै व चन्दन फूल चुपचाप डालै। उस अर्घपात्र

को बाँये हाथमें रखै दहिने हाथसे उसमें का पवित्रा निकालकर भोजनपर पात्र पूरबको अग्र करके रखै। उस पवित्रापर थोड़ा जल दूसरे पात्रसे देना। बाद अर्घपात्रको हाथ उलट कर ढाँकै 'ॐयादि-

कान्तरं दत्वा। पुटकदक्षिणहस्तेनाच्छाद्य। ॐया दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्याः॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः शᳬ स्योना सुहवा भवन्तु, इति पठित्वा। कुशत्रययवजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह—वृद्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष वो हस्तार्घो नमः। पवित्रोपरि अर्घजलमुत्सृजेत्। ततः पवित्रसहितमर्घपात्रमासनदक्षिणपार्श्वे ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि॥ इति उत्तानमेव स्थापयेत्॥ दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेन्न चालयेत्। ततो गन्धादि दद्यात्। त्रिकु-

न्या' यह मन्त्रको पढ़ै, तीन कुशा यव जल लेकर सङ्कल्पसे अर्घका जल आधा पवित्रा पर देकर पवित्रा के सहित 'ॐविश्वेभ्यो' कहकर अर्घपात्र आसनके दक्षिण सीधा रखै। दक्षिणातक उसको न छुवै।

अब चन्दन इत्यादि विश्वेदेवके आसन पर चढ़ाकर सङ्कल्प करैं। बाद भोजन पात्र व आसनके चारो तरफ जल 'यथा चक्रायुधो' इस श्लोकसे घुमावै। अपसव्य होके दक्षिण मुँह मोटक तिलजल लेकर

शयवजलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानां अमुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत--वासांसि वो नमः। इत्युत्सृजेत्। ततो भोजनपात्रासनयोश्चतुर्दिशं जलेन चतुष्कोणं मण्डलं कृत्वा। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु॥ अपसव्य दक्षिणाभिमुखो मोटकतिलजलान्यादाय घृतव्यञ्जनयुतमन्नं चादाय॥ ॐ इदमन्न एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः। इत्युत्सृजेत्। ततः सव्यं कृत्वा। ताम्रपात्रादिकं गृहीत्वा तेनाऽन्नमादाय देवान् ध्याय-

और घी व्यंजन के सहित अन्न लेकर 'इदमन्नं' कह के दक्षिण तरफ कुशा पर रखै। बाद सव्यसे ताँबे के बरतन में अन्न ले के देवता का ध्यान करते हुये भोजन पात्र पर परोसै। और दोनियामें घीव

रखै । दोनियामें जलरखे और दोनों हाथसे अन्न पर शहद 'मधुव्वाता' इस मंत्रसे डालै और 'मधुमधु'

न्न पात्रे परिविष्यात् ॥ घृतं जलं च तत्रोपनीय ॥ अन्नोपरि हस्तद्वयेन मधुद-
त्वा । ॐ मधु व्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो
वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ मधु मधु मध्विति च
जपेत् ॥ ततो ऋजुहस्ताभ्यामन्नपात्रमालभ्य ॥ ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं
ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते ऽमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा
निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्णहव्यमिदं रक्ष मदी-
यम् । इति पठित्वा । ॐ इदमन्नम् । ॐ इमा आपः । ॐ इदमाज्यम् ।
ॐ इदं हविरिति पुनरन्ने दक्षिणकराङ्गुष्ठन्युब्जमावेश्य ॥ ॐयवोऽसि यवयास्म-

ऐसाकहै व सीधे हाथसे भोजन पात्रको छूवै। 'ॐपृथिवीते' और 'इदंविष्णु कृष्णहव्य' इनकोपढ़करबाँया
हाथपत्तलमें लगारहै, दहिने हाथका अंगूठा उलटकर अन्नमें जलमें घीमेंफिर अन्नमें लगावै। 'ॐयवोसि'

इससे यव अन्न पर डाले। तीनकुशा यवजल लेके संकल्प करके त्याग करै। यह देवकर्म समाप्त हुआ। हाथ पैर धोकर आचमन करै। प्रेत श्राद्धके जगह पर आवै। दक्खिन मुँह बैठे अपसव्यहोके

द्वेषो यवयारातीः॥ इत्यन्नोपरि यवान्निःक्षिप्य॥ कुशत्रययवजलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वे-देवा एतद्वोऽन्नं सोपकरणं नमः, इत्यन्नमुत्सृजेत्॥ इति देवकाण्डं निर्वर्त्य। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य॥ प्रेतश्राद्धदेशमागत्य दक्षिणाभिमुखोपविश्य॥ अपसव्यं मोटकतिलजलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ इति प्रेतासनं दद्यात्॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳬंसि वेदिषदः॥ इति तिलान्विकीर्य॥ ॐ आयान्तु नः पितरः

मोटकतिल जल लेके संकल्पसे प्रेतको आसन देय। 'ॐअपहता' इस मंत्रसे अन्नपर तिल डाले।

'ॐ आयन्तु नः' इस मंत्रसे आवाहन करै। उसके बाद दोनियामें दक्षिणको अग्र करके पवित्रा रखै। 'ॐ शन्नोदेवी' इस मंत्रसे जल डालै। 'ॐ तिलोसि' इस मंत्र से तिल डालै। और चंदन फूल चुपचाप डालै। वह प्रेतार्घपात्र बाँये हाथपर रखै, दहिने हाथसे पवित्रा लेकर भोजनपात्र पर उत्तर के

सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि-ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ इति पठेत् ॥ ततोऽर्घपात्रे अनखच्छिन्नं दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयेति पुटके जलम् ॥ ॐ तिलोसीति, तिलान् क्षिपेत् ॥ गन्धपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ प्रेतार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा ॥ तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ दक्षिणहस्तेन पुटकमाच्छाद्य ॥ ॐ या दिव्याऽआपः, इति पठित्वा ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया

अग्र करके रखै। उस पर अर्घसे अतिरिक्त दूसरा जल थोड़ा देय और अर्घपात्रको दहिने हाथसे ढँकै। 'ॐ या दिव्या' इस मन्त्रको पढ़कर दहिने हाथमें मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके

अर्घ का जल थोड़ा पवित्रा पर देकर और जो अर्घमें जल बचा है सो आगे रखै। सव्य होकर हाथ पैर धोकर आचमन करके पितामह श्राद्ध के जगह पर आकर बैठे। अपसव्य होकर मोटक

दीयते तवोपतिष्ठताम्। पवित्रोपरि अर्घजलं उत्सृजेत्॥ अवशिष्टजलसहितार्घ-पात्रं अग्रे निधाय, सव्यम्। हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याऽऽचम्य। पितामहादिश्रा-द्धदेशमागत्योपविश्याऽपसव्यादि कृत्वा, मोटकतिलजलान्यादाय॥ ॐ अद्यामु-कगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहा-ऽमुकशर्मन् इदमासनं ते स्वधा॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुक-शर्मन् इदमासनं ते स्वधा॥ पुनर्मोटकादिकमादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य
१७ पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र-वृद्धप्रपितामहा-

तिल जल लेकर संकल्प करके पितामह को आसन देय। फिर मोटक इत्यादि लेकर संकल्प कर-के प्रपितामहको आसन दे। फिर मोटक इत्यादि लेकर संकल्प करके वृद्धप्रपितामहको आसन दे।

'ॐ उशन्तस्त्वा' इस मंत्रसे पितामहादिको आवाहन करै। 'ॐ अपहता' इस मंत्रसे तीनों जगह तिल छींटै। अब तीन दोनियामें नोख कटा न हो ऐसा पवित्रा दक्षिणको अग्र करके रखै। 'ॐशन्नो देवी' इस मंत्रसे जल डालै। 'ॐ तिलोसि' इस मंत्रसे तिल डालै और चन्दन फूल चुपचापसे डालै।

ऽमुकशर्मन् इदमासनं ते स्वधा॥ ॐ पितॄनावाहयिष्ये॥ ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि॥ उशन्नुशत ऽआवह पितॄन्हविषे अत्तवे॥ इति पितामहादीनावाह्य॥ ॐ अपहतेति त्रिषु स्थानेषु तिलान्विकीर्य॥ त्रिषु अर्घपात्रेषु अनखच्छिन्नं दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा॥ ॐ शन्नो देवीरिति जलम्। ॐ तिलोसीति, तिलान् प्रक्षिप्य गन्धपुष्पे तूष्णीं प्रत्येकं क्षिपेत्॥ ततः पितामहार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रं भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा॥ ॐ या दिव्या ऽआपः, इति पठित्वा॥ दक्षिणहस्ते

बाद पितामहका अर्घपात्र बाँये हाथमें रखै। दहिने हाथसे पवित्रा भोजन पात्रपर उत्तर को अग्र करके रखै और पवित्राके ऊपर थोड़ा जल देकर दहिने हाथसे अर्घको ढाँकै। 'ॐ या दिव्या'

इस मंत्रको पढ़कर मोटक तिल जल ले के संकल्प करके अर्घ का जल आधा पवित्रा पर देकर

मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते हस्तार्घः स्वधा ॥ इति पवित्रोपरि अर्घ्यं दद्यात् ॥ अवशिष्टजलयुतमर्घपात्रमग्रे धारयेत ॥ ततः प्रपितामहार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रं भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ 'ॐ या दिव्ये' ति पठित्वा ॥ दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते हस्तार्घः स्वधा ॥ इत्यर्घजलं पवित्रोपरि किञ्चिदु-त्सृजेत ॥ तदर्घपात्रमवशिष्टजलयुतमग्रे धारयेत् ॥ ततो वृद्धप्रपितामहार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा ॥ पवित्रं भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ ॐ या दिव्या आपः, इति पठित्वा ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्या-

आगे रखै । इसी प्रकारसे प्रपितामह वृद्धप्रपितामहको अर्घ देवे और आगे धरै । बाद सव्यहोकर

आचमन करै। अपसव्य होके आगे तीन दोनिया दूसरी रखना और प्रेतका अर्घपात्र उठावै।
'ॐ ये समानाः' यह दो मन्त्र पढ़कर प्रेतके अर्घका जल तीसरा हिस्सा पहिला दोनियामें रखै।

मुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते हस्तार्घः स्वधा ॥ इत्यर्घजलं पवित्रोपरि किञ्चिदुत्सृजेत् ॥ तदर्घपात्रमवशिष्टजलयुतमग्रे धारयेत् ॥ सव्यं कृत्वा ॥ आचम्य ॥ अपसव्यम् ॥ अन्यपुटकत्रयमग्रे धृत्वा ॥ प्रेतार्घपात्रं गृहीत्वा ॥ ॐ ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये ॥ तेषाँ ल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥१॥ ॐ ये समानाः समनसो जीवा ऽजीवेषु मामकाः ॥ तेषाᳪश्रीर्मयि कल्पताम-स्मिँल्लोके शतᳪ समाः ॥२॥ इति मन्त्राभ्यां प्रेतार्घपात्रस्थं जलं तृतीयभागं पुटकान्तरे धृत्वा ॥ पुनरपि ये समानाः, इति मन्त्रद्वयं पठित्वा ॥ अपरतृतीय-भागं पुटकान्तरे धृत्वा ॥ पुनरपि 'ये समानाः' इति मन्त्रद्वयं पठित्वा ॥ अप-

दो मन्त्र पढ़कर शेष तीसरा हिस्सा तीसरी दोनियामें रखै। फिर चुपचापसे पहिले दोनियाका

जलविभाग किया हुआ प्रेत के अर्घ पात्र में रखै और 'ॐ येसमाना' दो मन्त्र को पढ़कर पितामहके अर्घपात्र में मिलावै। फिर दूसरे दोनिया का जल प्रेत के अर्घ में लेकर दो मंत्रसे प्रपितामहके अर्घपात्रमें मिलावै, फिर तीसरी दोनियाका जल प्रेतके अर्घमें रखै दो मंत्र पढ़कर वृद्धप्रपिता-

रतृतीयभागशेषजलं तृतीयपुटके धृत्वा। तूष्णीं प्रथमपुटकस्थविभक्ततृतीयभागजलं प्रेतार्घपात्रे कृत्वा। ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयं पठित्वा, पितामहार्घपात्रे मेलयेत्। एवमपरपुटकस्थिततृतीयभागं जलं प्रेतार्घपात्रे कृत्वा। ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयं पठित्वा, प्रपितामहार्घपात्रे मेलयेत्॥ एवमपरपुटकस्थिततृतीयभागं जलं प्रेतार्घपात्रे कृत्वा, ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयं पठित्वा, वृद्धप्रपितामहार्घपात्रे मेलयेत्। ततः प्रेतार्घपात्रं पवित्रसहितं पितरासनवामपार्श्वे 'पित्रे स्थानमसि' इति न्युब्जीकुर्यात्। ततो वृद्धप्रपिता-

महके अर्घमें मिलावै। इसके बाद प्रेतके अर्घपात्रको पवित्राके सहित प्रेत आसनके बायें तरफ 'पित्रे

स्थानमसि' कहकर उलट देय। बाद वृद्धप्रपितामहार्घ पात्रका जल प्रपितामहके अर्घपात्रमें मिलावै। यह संपूर्ण जल पितामहके अर्घपात्रमें मिलावै। इसके बाद पितामह का अर्घपात्र प्रपितामह के अर्घपात्र पर रखै। ये दोनों पात्र वृद्धप्रपितामहके अर्घपात्र पर रखै। ये तीनों पात्र पितामह के आसन के बाँये इकट्ठा तीनों पात्र 'पितामहादिभ्य' कहकर उलट देय इस प्रकारसे स्थापित किया हुआ चारो

महार्घपात्रस्थं जलादिकं प्रपितामहार्घपात्रे कृत्वा। तत्सर्वं पितामहार्घपात्रे कृत्वा। पितामहार्घपात्रमुत्तानं प्रपितामहार्घपात्रोपरि धृत्वा॥ तद्द्वयमुत्तानं वृद्धप्रपितामहार्घपात्रोपरि धृत्वा॥ पात्रत्रयमेकदैव पितामहासनवामपार्श्वे पितामहादिभ्यः स्थानमसीति न्युब्जं कृत्वा स्थापयेत्॥ एवं स्थापितमर्घ-पात्रचतुष्टयं दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेन्न चालयेत्॥ प्रेतासनोपरि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वासांसि दद्यात्॥ मोटकतिलजलान्यादाय॥ ॐ

अर्घपात्र दक्षिणा दान तक न उठावे, न चलावै। अब प्रेतके आसनपर चंदन इत्यादि चढ़ाकर मोटक तिलजल लेकर संकल्प करै। इसके बाद पितामह आदिके आसनपर चंदन आदिको चढ़ाकर मोटकतिल

जल लेकर संकल्प करे। फिर मोटक आदि लेकर प्रपितामहका संकल्प करै। फिर मोटक आदि लेके वृद्ध

अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ ततः पितामहाद्यासनोपरि गन्धादि दद्यात् ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेतानि गन्धादीनि ते स्वधा ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतानि गन्धादीनि ते स्वधा ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतानि गन्धादीनि ते स्वधा ॥ ततः प्रेतासनभोजनपात्रसहितं चतुर्दिशं चतुष्कोणं मण्डलं जलेन कुर्यात् ॥ यथा

प्रपितामहका संकल्प करै। इसके बाद प्रेतके भोजनपात्र व आसन के चारो तरफ जल घुमावै, 'यथा

चक्रायुधो' इस मंत्रसे । इसी प्रकारसे पितामह आदिके तीनों आसनके चारो तरफ जल घुमावै। सव्य होके पूरब मुँह बैठे दहिना पैर मोड़कर खारा वस्तुसे अतिरिक्त व्यंजन घी अन्न लेकर ताँबेके पात्रमें एक दोनियामें जल रखै। उस जलमें इसी अन्नकी दो आहुति 'अग्नये कव्यवाहनाय, सोमाय

चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ॥ एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥ एवमपरं पितामहादि त्रिषु आसनेषु क्रमेण चतुष्कोणं मण्डलं कुर्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुखोपविश्य पातितदक्षिणजानुस्ताम्रपात्रादौ व्यञ्जनक्षार-वर्जितं सघृतमन्नं कृत्वा ॥ पुटकादिजले आहुतिद्वयं हस्तेनैव जुहुयात् ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा ॥ ॐसोमाय पितृमते स्वाहा ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ अवशिष्टमन्नं पितामहादिपात्रेषु किञ्चित् किञ्चिद्द्यात् । पिण्डार्थं चाऽवशेष-येत् ॥ ततो हस्ताभ्यां ताम्रपात्रमादाय तेन प्रेताऽन्नं गृहीत्वा प्रेतपात्रे ध्यायन्

पितृमते' इस मंत्रसे देय । इसके बाद अपसव्य होय के आहुति से बचा हुवा अन्न पितामह आदि के भोजन पात्रपर थोड़ा थोड़ा परोसै। और बाकी अन्न पिण्डके वास्ते बचाय रखै। आगे दोनों हाथ से ताँबेका पात्र लेकर उसमें प्रेत का अन्न लेकर प्रेतके भोजन पात्र पर, प्रेतका ध्यान करते हुये

परोसे और अलग अलग दोनियाँमें घी जल व्यञ्जन रखै। इसी तरहसे पितामह आदिके भोजन पात्र पर पितामह आदिका अन्न परोसै। घी जल व्यञ्जन इत्यादि अलग अलग रखै। उसके बाद प्रेतके भोजनपात्रके अन्न पर और पितामह आदि के भोजनपात्र के अन्न पर दोनों हाथ से

परिविष्यात् ॥ पृथक् पृथक् पुटकादिस्थितानि घृतजलव्यञ्जनानि चोपनयेत् ॥ ततस्तेनैव क्रमेण पितामहादिपात्रेषु प्रत्येकं परिवेषणं कुर्यात्॥ घृतं जलं चोपनीय ततः प्रेतादिपात्रस्थिताऽन्नेषु हस्तद्वयेन प्रत्येकं मधु दत्वा॥ ॐ मधु व्वातेति॥ ततः प्रेतान्नपात्रं व्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यामालभ्य॥ ॐ पृथिवी ते पात्रमिति॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, इति च। ॐ कृष्णकव्यमिति पठित्वा दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठेन। ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्। ॐ इदं कविरिति-

अलग अलग शहद देय 'ॐ मधु व्वाता' इस मन्त्रसे। उसके बाद प्रेतके अन्नपात्रको दोनों हाथोंको उलटकर छूवै और 'पृथिवी ते पात्रं' वो 'इदं विष्णु' व 'कृष्णकव्य' यह पढ़कर बाँया हाथ भोजनपात्र में लगा रहै दहिने हाथके अँगूठा को अन्नमें जल में घी में फिर अन्न में लगावै।

'ॐ अपहता' इस मन्त्रसे अन्न पर तिल छींटै, मोटक तिल जल लेकर संकल्पको पढ़कर त्याग करै। इसी तरह पितामह इत्यादि पात्रोंको छूवै और अन्न जल घी अन्न में अंगूठा लगावै।

पुनरन्ने ॥ ॐ अपहतेति अन्नोपरि तिलान्प्रक्षिप्य ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पित्रे अन्नमुत्सृजेत् ॥ अनेनैव क्रमेण पितामहाद्यन्नपात्रमालभ्य ॐ पृथिवी ते पात्रमित्यादि पठित्वा। ॐ इदमन्न-मित्यादिना स्वदक्षिणकराङ्गुष्ठनिवेशनं कृत्वा ॥ ॐ अपहतेति अन्नोपरि तिला-न्विकीर्य ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेतत्तेऽन्नं सोपकरणं ते स्वधा ॥ इति पितामहायाऽन्नमुत्सृजेत्। एवं प्रपितामह—वृद्धप्रपितामहयोरपि पूर्ववदन्नमुत्सृजेत्। सव्यम्। स-प्रणवव्याहृतिकां गायत्रीं त्रिर्जपित्वा। ॐमधु

'ॐ अपहता' इस मन्त्रसे अन्न पर तिल छींटै। मोटक आदि लेकर संकल्प करके त्याग करै। सव्य

होकर ॐकार व्याहृतिके सहित गायत्री तीनदफे पढ़ै और 'मधुव्वाता' व 'मधुमधु' 'अन्नहीन' इत्यादि

व्वाता, इत्यादि ऋचं मधु मधु मध्वीति च जपित्वा ॥ अन्नहीनमिति पठेत्॥ श्राद्धकर्ता दर्भेष्वासीनः ॥ सप्रणवव्याहृतिकां गायत्रीं त्रिर्जपित्वा ॥ ॐ मधु व्वाता, इत्यादि ऋचं मधु मधु मध्वीति जपित्वा ॥ ॐ कृणुष्व पाजः प्प्रसितिन्न पृथिवीं याहि राजेवामवाँ२ ॥ इऽभेन ॥ तृष्वीमनु प्प्रसितिन्द्रूणानोस्तासि व्विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव ब्भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूᳬष्यग्ग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो व्विसृज व्विष्ष्वगुल्क्काः ॥ २ ॥ प्प्रति स्प्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः ॥ यो नो दूरे ऽअघ शᳬसो यो ऽअन्त्यग्ग्ने मा किष्टे ब्यथिरादधर्षीत्॥ ३॥उदग्ग्ने तिष्ठ प्प्रत्या तनुष्ष्व न्न्यमित्राँ२ ॥ ऽओषतात्तिग्महेते ॥ यो नो ऽअरातिᳬ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्प्रति विध्याध्य-

पढ़ै । श्राद्ध करनेवाला कुशापर बैठे, फिर गायत्री 'मधुव्वाता' मंत्र 'मधुमधु' पढ़ै और 'कृणुष्वपाजः' यह

रक्षोघ्नो पांच मन्त्र पढ़े। इसके बाद जमीन पर तिल छींटै। 'ॐ उदीरता' यह पितृ मन्त्र पढ़ै। और सहस्र शीर्षा १६ मन्त्र, आशुः १२ मन्त्र व 'नमस्तुभ्यं' यह सब पढ़ै।

स्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ ५ ॥ इति रक्षोघ्नमन्त्राः ॥ भूमौ तिलान्विकीर्य ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ॥ असुं य ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ (केचित्तु उदीरता इति त्रयोदशमन्त्राः पठन्ति) ॐ सहस्रशीर्षा० षोडषमन्त्रयुक्तपुरुषसूक्तम् ॥ ॐ आशुः शिशान० द्वादशमन्त्रयुक्तमप्रतिरथसूक्तम् ॥ ॐ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे! । नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः इति पठेत् ॥ ततः पितामहपात्रसन्निधावास्तृतदक्षिणाग्रकुशत्रायी भूमिं प्रोक्ष्य सर्वप्रकारमन्नमादाय सतिलं घृतं जलेना ऽऽप्लाव्य ॥ ॐ अनग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः

उसके बाद पितामह के भोजन पात्र के समीप में तीन कुशा से जल छींट कर तीनों कुशा वहाँ पर रखै। सब प्रकार का अन्न तिल घी जल से भरी भई दोनियाँ में लेके 'ॐ अनग्नि०'

इस मन्त्रको पढ़कर बिछे भये कुशापर अन्नको रखै। पवित्रा, मोटक को भी वहीं उतार देय। उसके बाद सव्यहोकर आचमन करै। विष्णुका ध्यानकरै। अपसव्य होय के प्रेत पिण्डके वास्ते एक वेदी १० अंगुलकी बनावै और पितामह आदि तीन पिण्डके वास्ते १हाथ लम्बी चौड़ी४अगुल

कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ इत्यास्तृतकुशोपरि तदन्नं विकिरेत् ॥ पवित्रमोटकादेस्तत्रैव त्यागः ॥ ततः सव्यं कृत्वाऽऽचामेत् । हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । ततः प्रेतपिण्डपातनार्थमेकां वेदिकां प्रादेशमात्रामपरां वेदिकां पितामहादित्रिक्पिण्डदानार्थं एकहस्तमितां चतुरस्रां चतुरङ्गुलोच्छ्रितां दक्षिणप्लवां वा प्रादेशमात्रां निर्माय ॥ तन्मध्ये वामेन पाणिना दर्भपिञ्जुलीं गृहीत्वा दक्षिणहस्ते कृत्वा तन्मूलेन सव्योप-
१८ गृहीतदक्षिणपाणिना 'ॐ अपहते'ति दक्षिणाग्रां रेखां कुर्यात् ॥ दर्भपिञ्जुली-

ऊँची दक्षिणको ढालू रहै ऐसी बनावै। अथवा १० अंगुलकी बनावै। उसके बाद उसके मध्य में बायें हाथसे कुशालेकर दहिने हाथ में ले दोनों हाथसे प्रेतकी वेदी पर 'ॐअपहता' इस मंत्रसे

रेखा करै। कुशाको उत्तरकी तरफ फेंकै। इसी तरहसे पितामह आदिकी वेदी पर करै। उसके बाद दोनों वेदीकी रेखा पर 'ॐ ये रूपाणि' इस मंत्रसे अंगार घुमाकर दक्षिणकी तरफ रखै। उसके बाद दोनों वेदी की रेखा पर थोड़ा मूल कटा भया कुशा तीन तीन दक्षिणके अग्र करके

मुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत् ॥ एवमपरपिण्डकायामप्येकां रेखां कुर्यात् ॥ उभयत्र रेखोपरि अङ्गारं भ्रामयित्वा ॥ ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानेति, अङ्गारं दक्षिणतस्त्यजेत् ॥ तत उभयत्र रेखोपरि उपमूलसकृल्लूनान्दक्षिग्रान्कुशानास्तृणुयात् ॥ ततः सव्यम् ॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत्। ततोऽपसव्यम्। पुटकचतुष्टये तिलजलगन्धपुष्पाणि क्षिप्त्वा ॥ प्रथमपुटकं वामहस्ते कृत्वा। दक्षिणेन मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरण-

बिछावै। उसके बाद सव्य होकर 'ॐ देवताभ्य' इस मंत्र को तीन दफे पढ़कर अपसव्य होकर ४ दोनियामें तिल जल चन्दन फूल डालै १दोनियाँ बाँयें हाथमें ले दहिने हाथमें मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करके,प्रेतवेदीके छिन्न मूलकुशापर आधा जल देय,आधा आगे रखै,अब पितामह आदिकी

वेदी पर पहिली दोनिया बाँये हाथ में लेकर दहिने हाथ में मोदक आदि लेकर सङ्कल्प करके

श्राद्धे प्रेतपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति प्रथमपिण्डकायां छिन्नमूलकुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ ततो द्वितीयवेद्यां प्रथमपुटकमादाय मोटकादीनि चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डस्थाने अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नत्राऽवने निक्ष्व ते स्वधा ॥ इति कुशमूले अवनेजनं दद्यात् ॥ द्वितीयाऽवनेजनपात्रमादाय ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डस्थाने अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्राऽवने निक्ष्व ते स्वधा, इति कुशमध्ये अवनेजनं दद्यात् ॥ तृतीयाऽवनेजनपात्रमादाय ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य

कुशा की जड़ में आधा जल दे, आधा रखै। इसी प्रकार से दूसरी दोनियाका जल सङ्कल्प कर के कुशा के मध्य में दे, आधा आगे रखै। तीसरी दोनिया का सङ्कल्प करके कुशा के अग्र

में दे, आधा आगे रखै। अब प्रेत के अन्न में तिल शहद घी चीनी मिलाकर नारियल की तरह पिण्ड १ बनावै और पितामह आदिका अन्न लेकर सब चीज पहिलेकी तरह मिलाकर

पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डस्थाने अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्राऽवने निक्ष्व ते स्वधा, इति कुशाग्रे अवनेजनं दद्यात्॥ ततः तिलमधुशर्कराघृतयुतप्रेतान्नेन नारिकेलाकृतिप्रेतपिण्डं निर्माय ॥ ततः सर्वव्यञ्जनतिलमध्वाज्ययुतहुतशेषाऽन्नेन पितामहादीन् पिण्डत्रयं च निर्माय ॥ चतुरः पिण्डान्मधुघृताभ्यामभिघार्य ॥ प्रथमं प्रेतपिण्डमादाय मोटकादीनि चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति प्रथमवेद्यां अवनेजनस्थाने प्रेतपिण्डं दद्यात् ॥ ततोऽपरवेद्यां प्रथमपिण्डमादाय मोटकादीनि चादाय ॥

तीन पिण्ड गोल बनावै। और चारो पिण्डों में शहद घी लगावै। मोटक तिल जल प्रेत पिण्ड लेकर सङ्कल्प करके पहिली वेदीपर अवनेजनके जगह रखै। अब दूसरी वेदी पर पितामहका पिण्ड

संकल्प करके कुशाकी जड़ में देय। दूसरा प्रपितामहका पिण्ड संकल्प करके कुशाके मध्यमें रखै, तीसरा वृद्धप्रपितामहका पिण्ड संकल्प करके कुशाके अग्रमें रखै। पितामहके पिण्डके नीचे

ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते पिण्डः स्वधा ॥ इति कुशमूले पितामहाय पिण्डं दद्यात् ॥ द्वितीयं पिण्डं मोटकादीनि चादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते पिण्डः स्वधा ॥ इति कुशमध्ये प्रपितामहाय पिण्डं दद्यात् ॥ तृतीयपिण्डं मोटकादीनि चादाय। ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते पिण्डः स्वधा ॥ इति कुशाग्रे वृद्धप्रपितामहाय पिण्डं दद्यात्। ततः पितामहादिपिण्डास्तरणकुशमूले ॐ लेपभागभुजस्तृप्यन्तु, इति करं प्रोक्ष्य ॥ सव्यमाचम्य हरिं

की कुशाके जड़में हाथ पोंछै और सव्य होकर आचमन करै। विष्णुका ध्यानकरै। अपसव्य

हो के दक्षिण मुख हो पितर निमित्त 'ॐ अत्र पितर' यह मंत्र पढ़ उत्तर मुँह होयके बाँयी तरफ से स्वांस खींचै। भास्वर मूर्ति पितरका ध्यान करते हुए दक्षिण दिशाको घुमाते भये

स्मृत्वा। ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः पितरमुद्दिश्य ॥ ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व, इति पठित्वोत्तराभिमुखो भूत्वा श्वासं नियम्य भास्वरमूर्त्तिं पितरं ध्यायन् मुखं दक्षिणं दिशं प्रत्यावर्त्तयन्। ॐ अमी मदन्त पितर्मादयस्व यथा भागमावृषायिषत् ॥ इति प्रथमवेद्याम् ॥ एवं द्वितीयवेद्याम्। श्वासं नियम्य ॥ ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। ॐ अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत् इति पठेत् ॥ ततः प्रथमवेद्यां प्रत्यवनेजनपात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति प्रेतपिण्डे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततो

'ॐ अमी मदन्त' इस मंत्रसे स्वांस छोड़े। पहिली वेदी के यहाँ। इसी प्रकार से दूसरी वेदी के

यहाँ । अब पहिले की दोनिया उठाकर संकल्प करके प्रेतपिण्ड पर जल देय । इस प्रकार से

द्वितीयवेद्यां पितामहावनेजनपात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डे अमुक-गोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नत्र प्रत्यवने निच्व ते स्वधा ॥ इति पितामहपिण्डे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ द्वितीयाऽवनेजनं पात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटका-दीन्यादाय ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्त-कश्राद्धे पिण्डे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्र प्रत्यवने निच्व ते स्वधा ॥ इति प्रपितामहपिण्डे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ तृतीयाऽवनेजनं पात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्र

पितामह आदि तीनों पिण्डों पर संकल्प करके देय । उसके बाद नीवी का त्याग करै ।

सव्य होकर आचमन करै। विष्णु का ध्यान करै। अपसव्य होय बाँये हाथ से सूत लेकर दाहिने हाथ से पकड़कर 'एतद्वो' कहके दोनों हाथसे पिण्डपर सूत देय। मोटक आदि लेकर

प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा ॥ इति वृद्धप्रपितामहपिण्डे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततो नीवीं विस्रंस्य ॥ सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ वामेन पाणिना धृतं सूत्रं दक्षिणेनादाय ॥ ॐ एतद्वो पितर्वासः, इत्युभाभ्यां पितृ-पिण्डोपरि सूत्रं धारयेत् ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुक-प्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे पिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ततः पूर्ववत्पुनः सूत्रमादाय ॥ ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्न्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्म। एतद्वः पितरो वासः, इति मन्त्रं पठित्वा द्वितीयवेद्यामुभाभ्यां हस्ताभ्यां

संकल्प करके त्याग करै। फिर सूत लेकर 'ॐ नमो वः' इस मंत्रसे दूसरी वेदी पर दोनों हाथसे

पितामह आदि पिण्डों पर चढ़ावै, मोटक आदि लेकर सङ्कल्प करके तीनों जगह सूतका त्याग
करै। चारो पिण्डों पर चन्दन आदि चढ़ावै और पिण्डोंकाशेष अन्नपिण्डोंके समीपमें रखै। बाद
प्रत्येकपिण्डोपरि सूत्रं धारयेत् ॥ ततो मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्याऽमुक-
गोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डे अमुकगोत्र पि-
ताऽमुकशर्मन्नेतत्ते वासः स्वधा ॥ इति पितामहाय सूत्रमुत्सृजेत् ॥ पुनर्मोट-
कादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनि-
मित्तकश्राद्ध पिण्डे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतत्ते वासः स्वधा । इति
प्रपितामहाय सूत्रमुत्सृजेत् ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुक-
गोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धपिण्डे अमुक-
गोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतत्ते वासः स्वधा ॥ इति वृद्धप्रपिता-
महाय सूत्रमुत्सृजेत् ॥ ततः प्रत्येकं पितृपिण्डादिषु गन्ध-पुष्प धूप-दीप-
ताम्बूलानि दद्यात् ॥ ततः पिण्डसमीपे तत्तत्पिण्डशेषाऽन्नं विकिरेत् ॥ ततः
पिण्डोंपर का सूत इत्यादि हटा देय और दोनों हाथसे सोनेका सूत अथवा चाँदीका सूत होय अथवा

कुशा लेकर 'ॐ ये समानाः' ये दो मंत्र पढ़कर प्रेत पिण्डको तीन हिस्सा करै। पहिला भाग लेकर 'ॐ ये समानाः' दो मंत्रसे पितामहके पिण्ड में मिलावै। दूसरा भाग लेकर दो मंत्रसे प्रपितामह के

पिण्डेषु सूत्रादिकमपनीय हस्तद्वयेन सुवर्ण-रजत-कुशानादाय ॥ ॐ ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये ॥ तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥ ॐ ये समानाः समनसो जीवाऽजीवेषु मामकाः ॥ तेषाꣳ श्रीर्मयि कल्प्यतामस्मिँल्लोके शतꣳसमाः ॥ इति मन्त्रद्वयं पठित्वा प्रेतपिण्डं त्रिधा विभजेत् ॥ ततः प्रथमपिण्डभागमादाय ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयेन पितामहपिण्डे नियोजयेत् ॥ एवं द्वितीयपिण्डभागमादाय मन्त्रद्वयेन प्रपितामहपिण्डे नियोजयेत् ॥ एवं तृतीयपिण्डभागमादाय मन्त्रद्वयेन वृद्धप्रपितामहपिण्डे नियोजयेत् । ततः प्रेतभागेन सह पिण्डत्रयं प्रत्येकं समं वर्तुलं कुर्यात् ॥ ततः

पिण्डमें मिलावे। तीसरा भाग लेकर दो मंत्र पढ़कर वृद्ध पितामहके पिण्डमें मिलावै। तीनों पिण्ड बराबर गोल करै। उसके बाद प्रेतके सहित पितामह आदि तीनों पिण्ड पर चन्दन आदि चढ़ावै।

सव्य होके विश्वे देवके भोजनपात्रपर और अपसव्य होकर पितृ आदि भोजनपात्रपर 'शिवा आपः'

प्रेतपूर्वकं पितामहादीनुद्दिश्य पिण्डत्राये गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् ॥ ततः सव्येन देवान्नपात्रे ॥ अपसव्येन पित्राद्यन्नपात्रेषु ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु, इति जलम् । ॐ सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम् । ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु, इत्यक्षतान् । एवं क्रमेण प्रत्येकभोजनपात्रेषु जलादिकं दत्वा ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रस्य पितामहस्याऽमुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु, इति पितामहायाऽक्षय्योदकं दद्यात् ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रस्य प्रपितामहस्याऽमुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु, इति प्रपितामहायाऽक्षय्योदकं दद्यात् ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥

से जल, 'सौमनस्य' से फूल, 'अक्षतं' से अक्षत, मोटक आदि लेकर पितामह आदिको संकल्प करके,

अक्षय्योदक देय। सव्य होकर दक्षिण तरफ देखै। 'अघोराः पितरः' कहकर तीनों पिंडोंपर पूर्वाग्र जल धारा देय। यह जलधारा देना चलन है। केवल पाठ कर देना, पूरब मुँह होके 'गोत्रन्नो' इससे प्रार्थना

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्याऽमुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ॥ इति वृद्धप्रपितामहायाऽक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा दक्षिणां दिशं पश्यन् ॥ ॐ अघोराः पितरः सन्तु ॥ इति पिण्डत्रयोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ अत्र वारिधारादानमाचारात् ॥ अन्यथा तु पाठमात्रम् ॥ प्राङ्मुखः प्रार्थयेत्। ॐगोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाःसन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु इति ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ पिण्डोपरि सपवित्रकुशत्रयं दक्षिणाग्रमास्तार्य ॥

करे बाद अपसव्यहोकर तीनो पिंडोंपर पवित्राके सहित तीनकुशा दक्षिणाको अग्रकरकेरखै बाँयेहाथसे

दोनिया में जल लेकर दहिने हाथ में लेय दोनों हाथों से 'ॐ ऊर्जं' इस मंत्रसे पवित्राके सहित तीन कुशा पर दक्षिणाग्र जल धारा देय । उसके बाद झुककर पिण्डोंका सूँघै, पिण्डों को उठावे । पिण्डा के नीचे की कुशा और जो अंगार घुमा कर दक्षिण में रखा है उन दोनों को

ततो वामहस्तोद्धृतं जलपात्रं दक्षिणेनादाय ॥ ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ॥ स्वधास्थ तर्प्पयत मे पितॄन् ॥ इति पित्रादीनुद्दिश्य सपवित्रकुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ ततो नम्रीभूय पिण्डानाघ्रायोत्थापयेत् ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ सव्येन देवार्घपात्रं सञ्चाल्य । अपसव्येन पित्राद्यर्घपात्राण्युत्तानीकृत्य दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः सव्येन कुशत्रय-यव-जलान्यादाय द्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह वृ-

१६

दूसरी आग में डालै । सव्य होकर देवताका अर्घपात्र हिलावै । अपसव्य होकर पितृ आदिका अर्घपात्र चारो सीधा कर दे । सव्य होकर तीन कुशा यव जल लेकर सङ्कल्प करके

दक्षिणा देय। अपसव्य होकर मोटक तिल जल लेकर पितृ पितामह आदिके श्राद्धका अङ्ग

द्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्रा द्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इति प्राङ्मुखमुत्सृजेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखो भूत्वा मोटकादीनि दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्सपिण्डी· करणनिमित्तकश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुम- महमुत्सृजे। पुनर्मोटकादीन्यादाय दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपिताम- ह-वृद्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगो- त्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। ततः सव्यम्। ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ इति

सङ्कल्प करके अलग अलग दक्षिणा देवै। उसके बाद सव्य होकर 'विवेदेवाः प्रीयताम्' इससे विश्वेदेव का विसर्जन करै। अपसव्य होकर 'ॐ आ मा वाजस्य' इस मंत्रसे पितृ लोगोंका विस-

र्जन करै। सव्य होकर 'ॐदेवताभ्य' यह मंत्र तीन दफे पढ़े। सव्य अपसव्य होकर दोनों हाथसे

देवविसर्जनम् ॥ अपसव्यम् ॥ ॐ आ मा व्वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावा-
पृथिवी व्विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥
इति पितृविसर्जनम्॥सव्यम् ॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥
सव्याऽपसव्याभ्यां हस्ताभ्यां देवपितृपितामहादीन् श्राद्धदीपान्निर्वापयेत् ॥
ततः सव्यं पाणिपादं प्रक्षाल्याऽऽचम्य ॥ ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्व-
रेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च
नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
एतत्फलकामो विष्णुं स्मरेत् ॥ इति पितृसपिण्डनश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥

देवता व पितृ का दीप बुझावै। उसके बाद सव्य होकर हाथ पैर धोकर आचमन करै। 'ॐप्रमा-
दात्' व 'यस्य स्मृत्या' दोनों श्लोकोंको पढ़कर श्राद्ध संपूर्णताके वास्ते विष्णुका स्मरण करै ॥

इति भाषाटीका सपिण्डन श्राद्ध समाप्त ॥

अब घर पर शय्यादान की विधि कहते हैं। पहिले आचमन प्राणायाम करै। 'ॐअपवित्रः' से अपने ऊपर व पूजन सामग्री पर जल छींटै। हाथ में अक्षत फूल लेकर शय्या व ब्राह्मण के

* अथ शय्यादानम् * तत्रादावाचम्य प्राणानायम्य । ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य॥ हस्ते अक्षतपुष्पाण्यादाय॥ ॐ सोपकरणशय्यायै नमः ॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः ॥ इति त्रिः सम्पूज्य ॥ ततो लक्ष्मीनारायणयोः स्वर्णमयीं प्रतिमां पूजयेत् ॥ तद्यथा॥ शय्योपरि नारिकेलं निधाय तस्योपरि स्वर्णमयीं प्रतिमां निधाय ॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाᳫंसुरे स्वाहा ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳫं समिमन्दधातु ॥

ऊपर तीन दफे छोड़ै। उसके बाद लक्ष्मीनारायण की सोने की प्रतिमा शय्या पर नारियल रख के उसके ऊपर प्रतिमा रख कर 'इदं विष्णु' इस मंत्र से पूजन करै।

बाद वरण द्रव्य लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देय, जो कि शय्या को लेंगे । ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहै । यजमान 'प्रमाण्यै देव्यै' कह कर चारो तरफ शय्या के हाथ जोड़े । बाद

विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामोँ प्रतिष्ठ। इति प्रतिष्ठाप्य। गन्ध-पुष्प-धूप दीप-ताम्बूल-दक्षिणादिभिः सम्पूज्य । वरणद्रव्यमादाय । ॐ अद्यामुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः त्रयोदशाहे शय्यादानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं शय्याप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ॐ प्रमाण्यै देव्यै नमः, इति क्रमेण चतुर्दिक्षु प्रणम्य ॥ वामहस्तेन शय्यास्पर्शनं कृत्वा दक्षिणहस्ते त्रिकुश-यव-जलान्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात् । देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं अमुक-गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः समस्तपापक्षयपूर्वकाऽप्सरोगणसेवायुत-विमा-नकरणेन्द्रपुरगमनोत्तर-षष्ठिसहस्रवर्षाधिकरणकक्रीडनस्त्रीसङ्गसमावृत-सर्वलोक–

बायाँ हाथ शय्या में लगा कर दाहिने हाथ से शय्या सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण

'ॐस्वस्ति' कहै, इसके बाद दक्षिणासंकल्प करके देय। ब्राह्मण 'ॐस्वस्ति' कहै 'यथा न कृष्ण' इस

महिमत्व-तदुत्तरषष्ठियोजनमण्डलराज्यभोगाऽनन्तरशिवसायुज्यावाप्तिकाम इमां शय्यां ईशानादिकोणचतुष्टयक्रमेण घृत-कुङ्कुम-गोधूम-जल-घृत-कुम्भसमेतां हंसतूलीप्रच्छन्नां शुभ्रगण्डोपधानिकां प्रच्छादनपटास्तृतां सप्तधान्ययुतां यथोपस्करसहितां च विष्णुदैवताममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे, इति शय्यां दद्यात्। ॐ स्वस्ति, इति ब्राह्मणो वदेत। कृतैतत्सोपकरणशय्यादानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ ॐ स्वस्ति॥ प्रार्थना॥ यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया। तथा शय्या ममाप्यस्तु अशून्या जन्म-जन्मनि। अथ [1]पददानम्।

श्लोकसे यजमान प्रार्थना करै। अब पद दानकी विधि कहते हैं। 'पदेभ्यो' कह कर अथवा 'देय-

---

१-अथ सपिण्डीकरणान्ते त्रयोदशाहे पददानम्। तथा च गारुडे कृष्णवाक्यम्। छत्रोपानहवस्त्राणि मुद्रिकां च कमण्डलुम्। आसनं भाजनं चैव पदं सप्तविधं स्मृतम्। देयानि सर्ववस्तूनि वरिष्ठानि त्रयोदशे। यो ददाति मृतस्येह जीवन्वाप्यात्महेतवे॥

द्रव्येभ्यो' कहकर चन्दन अक्षत फूलसे पूजन कर तीन कुशा इत्यादि लेकर १३ पद का सङ्कल्प एक संग में कर के १३ ब्राह्मण को देय। ब्राह्मण लोग 'ॐ स्वस्ति' कहैं। 'त्रिलोकीनाथ' इस

पदेभ्यो नमः। अथवा देयद्रव्येभ्यो नमः। इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य। अद्येत्यादि गोत्रः शर्माऽहं अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः श्रुत्यादि-यथोक्त-फलप्राप्त्यर्थं इमानि त्रयोदशपदानि तत्तत्पदेषु आस्तरणार्थं आसनं भूमि-दैवतं तप्तवालुकाऽसिकण्टकितभूदुर्गसन्तरणकामो इमे उपानहौ उत्तानाङ्गिरो दैवते आतपनिवारणार्थं छत्रं अङ्गिरो दैवतम् आभरणार्थं सुवर्ण-रजत-ताम्रनिर्मित-पवित्रमङ्गुलीयकं कुबेरदैवतं त्रिसूपशमनार्थं शीतमिष्टवारिपूर्णं पित्तलमयं ताम्रमयं वा कमण्डलुं वरुणदैवतं शीतोष्णवातलज्जासंरक्षणार्थं परिधानार्थमङ्गप्रोक्षणार्थं च वस्त्रयुगं बार्हस्पत्यदैवतं सदक्षिणाकं नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ प्रार्थना ॥ त्रिलोकीनाथ!

श्लोकसे यजमान प्रार्थना करै। गणेश पूजन और होम करनेकी विधि कहते हैं। आचमन प्राणा-

थाम करके 'अपवित्रः' इस श्लोक से ऊपर और पूजन सामग्री पर कुशा से जल छिड़कै। हाथ में अक्षत फूल लेकर हाथ जोड़े 'आनो भद्रा' इत्यादि मंत्र को पढ़ै। सङ्कल्प करके गणेश पूजन

देवेश! सर्वभूतदयानिधे!। पद्दानेन तुष्यस्व प्रयच्छ मम वाञ्छितम्। इति। अथ गणपत्यादि पूजनं हवनं च कुर्यात्। आचम्य प्राणानायम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रो वेति। आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य॥ हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मङ्गलमन्त्रान् पठेत्। सङ्कल्पः। देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः कृतैतत्सपिण्डनाऽन्ते शुभफल-प्राप्त्यर्थं हवनं करिष्ये॥ तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च करिष्ये॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये॥ तत्र गणपत्यादिदेवानामावाहनं पूजनं सूर्यादिग्रहाणां हवनं च ग्रहशान्त्य-नुसारेण कुर्यात्॥ ततो ब्राह्मणभोजनम्॥ इति त्रयोदशाहकृत्यं समाप्तम्॥

कलश स्थापन पूजन, सूर्यादि ग्रहों का स्थापन पूजन और ग्रहों का होम ग्रहशान्ति के क्रम से करै। बाद ब्राह्मण भोजन करावे। इस क्रम से करे॥ इति त्रयोदशाह कृत्य समाप्त।

॥११२॥

❀ स्व० पण्डितश्रीवायुनन्दनमिश्रकृतग्रन्थरत्नानि ❀

अर्कीविवाहः -)॥
उपनयनपद्धतिःमूलमात्रं ।=)
कुम्भविवाहः -)॥
गयाश्राद्धपद्धतिःमूलमात्रं≡)॥
ग्रहप्रयोगःअर्थात्ग्रहशांति १॥)
गोदानपद्धतिः- -)
चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्रम्- ≈)
चान्द्रायणव्रत. भा.टी. ≈)॥
दुर्गासप्तशती-गुटका ॥≈)
दुर्गासप्तशतीपत्रात्मकम् १॥)
दुर्गासप्तशती—कार्पासवस्त्रा-
च्छादनयुता २)

द्वादशहरिहरमण्डलचक्रम्≈)
नवग्रहचक्रम्— ... -)
नारायणबलिप्रयोगः ॥।)
पञ्चदानपद्धतिःमूलमात्रम् ≡)
पञ्चाङ्गपद्धतिः— ,, ।≡)
पुत्तलविधानपद्धतिभा.टी.≡)
पुराणोक्तग्रहशान्ति—वास्तु-
शान्ति-सर्वदेवप्रतिष्ठा ॥≈)
प्रतिष्ठामहोदधिः— ३)
प्रेतमञ्जरी भा.टी. सहिता १।)
प्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्— -)॥
मण्डपकुण्डसिद्धिभा.टी.।≈)

मूलशान्तिः-मूलमात्रम् ।-)
अस्याः-चक्रम् ≈)
रामविवाहपद्धतिः =)॥
रुद्रयागपद्धतिमूलमात्रम् १॥)
वरुणमण्डलचक्ररंगीन- ≈)
वास्तुशान्तिप्रयोगः ,, ॥≈)
वाशिष्ठीहवनपद्धतिः ।≡)
विपरीतप्रत्यङ्गिरास्तोत्र -)॥
विवाहपद्धतिःमूलमात्रम् ।≈)
,, —पुराणोक्ता =)॥
विष्णुयागपद्धतिः— १।)
शान्तिमयूखः २)

शिलान्यासदेहलीन्यासपद्धतिः≈)॥
शूद्रैकोद्दिष्टपार्वणपद्धतिः -)॥
शूद्रदशगात्र-एकादशाह-वृषोत्-
सर्ग-सपिण्डनश्राद्धपद्धतिः ≡)
श्राद्धसंग्रहः-नूतनश्राद्धविवेकः२॥)
श्रावणीप्रयोगः-मूलमात्रम् ॥।≈)
श्रीसत्यनारायणव्रतकथा-चमत्का-
रसंयुक्तहिन्दीटीकासहिता ।≡)
सर्वतोभद्रचक्रम्—अतीव
रमणीयम् -)॥
त्रयोदशसंस्कारपद्धतिः- यंत्रस्थ
त्रिपिण्डीश्राद्धपद्धतिः—मूल.।-)

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

* इति *

प्रेतमञ्जरी-भाषाटीका

* समाप्ता *

Printed at the Master Printing Works, Benares.